आ पुस्तक मळवानां ठेकाणां.

(१) अहमदनगर-(दक्षिण) मां हणोतमलजी भगवानदासजी कोठारी-कापडबजार

(२) 'जैनोदय' ऑफिस-वढवाण शहेर (काठियावाड).

(३) पोपटलाल मोतीलाल शाह, 'जैनहितेच्छु' ऑफिस-सारंगपुर, अमदावाद.

(४) शा. केशवजी कचराभाई, जेकब सर्कल, डीलाइल रोड, भायखला, मुंबई.

(५) दलीचंद सोगागचंद, गुलालवाडी, नं. १४८, ५०

॥ डुहा ॥

आदि देव अरिहंतजो, भयभंजन भगवंत;
केवलकमलाधार जे, पाम्या भवजलअंत. ॥१॥

तास चरणमें शिर धरी, प्रणमुं परम उल्लास;
गुरु गीरवा गुण तणा निधि, सफल करो मुज आश. ॥२॥

शांति सुधारस जळ भर्या, कांति वपु गुणवान;
आतम ज्ञानको ज्योतसें, लगी तान गुलतान. ॥३॥

ऐसा गुरुपद कमलमें, परिमल रह्यो पुराय;
ज्ञान-सुवासकी गरजथी, मन–मधुकर लपटाय. ॥४॥

श्री

॥ प्रश्नोत्तर मणिरत्नमाला ॥

अथवा

शास्त्र संबंधी शंकाओ तथा विरोधाभासनुं समाधान.

ॐ नमो अरिहंताणं ॥ ॐ नमो सिद्धाणं ॥ ॐ नमो आयरियाणं ॥
ॐ नमो उवज्झायाणं ॥ ॐ नमो लोए सव्व साहूणं ॥

प्रश्नोत्तर १.

प्रश्नः—श्री नमस्कार मंत्रना पांचमा पदमा 'लोए' शब्दनो हेतु शुं छे?

उत्तरः—(१) अरिहंत, आचार्य तथा उपाध्यायः ए त्रणनुं घणुं करीने 'साहरण' थतुं नथी

प्रश्नोत्तर २.

प्रश्नः—मुनीराजने आज्ञा लइने हाथे पाणी लेवुं कलपे के नहि ?

उत्तरः—गृहस्थ पाणी लेवानी आज्ञा आपे तो लेवुं कलपे (साखः—श्री आचारांगजी सूत्र; सु० २; अ० १; उ० ७)

प्रश्नोत्तर ३.

प्रश्नः—नाळीएरना फळ मांहेनुं पाणी मुनीराजने लेवुं कलपे के नहि ?

उत्तरः—ते पाणी 'सचेत' छे माटे न कलपे.

शंकाः—श्री 'आचारांगजी' सूत्रना सु० २, अ० १, उ० ७ मां नाळीएरनुं पाणी लेवुं कह्युं छे ते केम वारु ?

समाधानः—एम होय नहि; मजकुर सूत्रमां बेहडां, दाडम, कोठ, आंबली विगेरेनुं पाणी

प्रश्नोत्तर ५.

प्रश्नः—साधु—साध्वीए शेषकाळ (शेखा काळ) केटलो करवो अने शेषकाळ कर्या पछी बहार केटलुं रही पाछा आवी शकाय ?

उत्तरः—साधुजीयो, एक मास शेषकाळ रही बे मास बहार जइ पाछा आवी शकाय; अने साध्वीजीए बे मास शेषकाळ रही बमणो काळ बहार रह्या पछी पाछा आवी शकाय. (साखः— आ० सु० २, अ० २, उ० २ मां साधु—साध्वीए रह्या तेथी बमणो तमणो काल बहार काढवा कह्युं छे.)

प्रश्नोत्तर ६.

प्रश्नः—श्री "आचारांगजी" सूत्रना सु० २ अ० १ उ० १०मां कह्युं छे के, मुनी साकर वहोरवा गया तेमां भूलथी मीठुं [लुंण] गृहस्थे वहोराव्युं; ते स्थानके आवी तपासतां खबर पडी

समाधानः—अफासुक एटले आ ठेकाणे सचत समजवुं नहीं, केमके ते ज अध्ययनना उद्देशा ए मांना त्रीजा आलावामां कह्युं के, साधु मुनीराजे गृहस्थने आहार पाणी निपजाववानी ना कह्या छतां गृहस्थ साधुने अर्थे आधाकर्मि चारे आहार निपजावीने आणी आपे तो तेवा प्रकारनो आहार अफासुक जाणी न लेवो. अत्रे ते आहारादिक सचेत नथी पण अकल्पनीक छे, माटे न लीधो. ते न्याये लुण परीठववुं पडे माटे अफासुक कह्युं, पण सचेत समजवुं नहीं. तेमज गृहस्थने पूछवानो हेतु ए ज छे के गृहस्थ समजीने पाछुं लइ ले तो मुनीने परीठववुं पडे नहीं.

प्रश्नोत्तर ७.

प्रश्नः—श्री 'आचारांगजी' सूत्रना सु० २, अ० १, उ० १० मा कह्युं छे केः—"मंसगं मच्छगं भोच्चा अठियाइं कंटए जाव परिठवेज्जा" आ पाठमां मांस तथा माछलां भोगववानी परवानगी आपी छे तेनुं केम ?

प्रश्नोत्तर ८.

प्रश्नः—नीचेना बे परस्परविरोधी फरमाननुं रहस्य समजावो.

(अ) श्री 'भगवतीजी' सूत्र शतक ५ उ० ४ मां हरिणगमिषीना अधिकारमां गर्भसाहरण-नी चौभंगी आ प्रमाणे कही छेः— (१) गर्भाओ गर्भसाहरइ; (२) जोनीयो जोनी साहरइ; (३) गर्भाओ जोनीयो साहरइ, (४) योनीयो गर्भसा हरइ. तेमांना ३ बोलनी भगवंते ना कही अने मात्र छेल्ला चोथा बोलनी हा कही, परन्तु—

(ब) श्री 'आचारांगजी' सूत्र सु० २, अ० १५ मां भगवंत महावीर स्वामीना गर्भनुं साहरण थयुं तेमां 'गर्भाओ गर्भसा हरइ' ए पाठ छे तेनुं केम?

उत्तरः—टीकाकार खुलासो करेछे के, एक गर्भथी बीजा गर्भे मुक्या एनो भावार्थ एवो छे के एक मातानी कुखेथी बीजी मातानी कुखे मुक्या. ते आधारे आचारांगजीमां 'गर्भाओ गर्भसाहरइ' पाठ कह्यो.

प्रश्नोत्तर १२

प्रश्नः—लोकमां सर्व जीवो अरुपी छतां श्री ठाणांगजीना बीजे ठाणे जीवने रुपी तथा अरुपी कहेवानुं शुं कारण ?

उत्तरः—सिद्धने अरुपी कहेल छे अने संसारी जीव कर्माश्रीत रुप धरेछे माटे संसारी जीवने रुपी कह्या.

प्रश्नोत्तर १३.

प्रश्नः—विभंग ज्ञान उंचुं केटलुं देखे ? नीचुं केटलुं देखे ?

उत्तरः—उंचुं, पहेला देवलोक सुधी देखे, अने नीचुं एटले अधोलोके देखवुं अति दोहीलुं. श्री 'ठाणांगजी'ना त्रीजा ठाणे कह्युं छे के, अधोलोके अवधिज्ञानीने पण जाणवुं दोहीलुं तो पछी विभंगज्ञानीनुं तो केहेवुंज शुं ? माटे अधोलोके न देखे.

तारानां रुप चळे छे. (१) विक्रय करतां, (२) मैथुन सेवतां, (३) एक विमानथी बीजे विमान जतां, देवता एक विमानथी बीजे विमान जतां रातने वखते तेना शरीरना तेजे करी शीखा बंधाय छे तथा वैक्रय तथा परिचारणा करतां बादर पुद्गळ नीचे नाखतां तेनी पण शीखा बंधाय छे. तेने लोको कहे छे के तारो खर्यो.

प्रश्नोत्तर १६.

प्रश्नः—धरतीकंप थवानुं कारण लोको एम माने छे के शेषनाग डोलवाथी धरती कंपे छे ते शुं खरुं छे?

उत्तरः—ए तो मात्र पौराणिक कल्पना छे. नागनी फेण उपर पृथ्वी रही होय तो नाग शा आधारे रह्यो कहेशो? नहिं; पृथ्वी तो घनवाय (वायरा) ने आधारे रही छे. मसकनुं दृष्टांत समजवाथी आ वात बराबर समजाशे. मसकना नीचला भागमां पवन भरो उपर पाणी भरे पण एक बिंदु नीचे जाय नहि. ते न्याये पृथ्वी आकाश अने वायराना आधारे रहेली छे.

अथ प्रश्नोत्तर

॥ मणि रत्नमाला प्रारंभ. ॥

उत्तरः—'ठाणांगजी'मां जे ३ गुण कह्या ते उत्कृष्ट परिसह पडवा आश्री छे पण निश्चयवाचक नथी. थाय तो त्रणमांनो एक गुण थाय. पण सर्वने थाय एम निश्चय समजवुं नहि; उत्कृष्ट परि-सहे गुण थाय छे. पण निर्जरा तो सर्वने घणी थाय छे.

प्रश्नोत्तर १८.

प्रश्नः—श्री 'भगवतीजी'सूत्र स० ३, उ० ५ मां कह्युं के--देवता स्त्रीनुं रुप विकुर्वी परिचारणा न करे. अने श्री 'ठाणांगजी' सूत्र ठा० ३ उ० १ मां ३ प्रकारनी परिचारणा कही तेमां देवता स्त्रीनुं रुप विकुर्वी परिचारणा करे एम कह्युं. ए शुं परस्परविरोध नहि?

उत्तरः—श्री 'भगवतीजी'मां वेद अपेक्षाए ना कही अने श्री 'ठाणांगजी'मां हा कही तेनुं कारण ए के, देवता स्त्री रुप विकुर्वे अने देवी पुरुष रुप विकुर्वी परिचारणा करे पण वैक्रिय रुप करनार जे वेदे होय ते वेदविकार बलवान समजवो.

शास्त्र संबंधी शंकाओ तथा विरोधाभासनुं समाधान

अथवा

"प्रश्नोत्तर मणि रत्न माला"—भाग १ लो.

विद्वान पुरुषोनी सहायताथी रचनार

मुनीश्री मणीलालजी महाराज.

प्रसिद्ध कर्त्ता

श्रावक रायचंद–अहमदनगर (दक्षिण.)

आवृत्ति १ ली—प्रत १०००. वीर संवत २४३२–इ. स. १९०६.

किंमत रु. १–०–०

अमदावाद–'श्री 'जगदीश्वर' प्रिन्टिंग प्रेसमां पटेल डाह्याभाई दलपतरामे छाप्युं.

४ वैमान आन्नरण कांतीरहित देखे. ५ आळश आवे. ६ निद्रा आवे. ७ कामराग न्नंग हुवे. ८ दृष्टि फीरे. ए कल्पवृक्ष करमायो (कुमलाणो) देखे. १० शरीरे अरति उपजे. ए दश लक्षण च्यवन वखते थाय. (शाख:—केटलाक बोल "ठाणांगजी" सूत्रना ठाणा त्रीजा मध्ये कहेल छे अने केटलाक ग्रंथ मध्ये कहेल छे).

प्रश्नोत्तर २१.

प्रश्नः--श्री "ठाणांगजी" ठाणे त्रीजे उ० १ मां मनुष्यनें विषे त्रण प्रकारना नपुसक कह्या, ते कर्मन्नूमि अकर्मन्नूमि अंतर्द्वीपामां तथा अकर्मन्नूमिमां बे वेद छे ने आंही नपुसकनो न्नेद लीधो तेनुं शुं कारण?

उत्तरः--अकर्मन्नूमि तथा अंतर्द्वीपाना समुर्छिम मनुष्य आश्री नपुसक वेद लीधो छे.

प्रश्नोत्तर २२.

प्रश्नः--सनत्कुमार चक्रवर्ती मोक्ष गया के देवलोक गया?

॥ मंगलाचरण ॥

अर्हन्तो भगवन्तइन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिताः
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः ।
श्रीसिद्धान्त सुपाठका मुनीवरा रत्नत्रयाराधकाः
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥

प्रश्नोत्तर २५.

प्रश्नः—चमरेंद्र आदि देवताने आणीका तथा अणीकाना अधिपति सूत्र 'ठाणांगे' पांच कहेल छे अने 'जीवाभिगम'मां सात कह्या, ते केम ?

उत्तरः—पांच अणीका ने पांच अधिपति छे ते संग्रामी कह्या (साखः—श्री "ठाणांगजी" ठाणे ५ उद्देसे १ ले) अने 'जीवाभिगमे' कह्या ते गांधर्व नाटक भेगा लीधा माटे बन्ने ठेकाणे न्यारा कहेल छे.

प्रश्नोत्तर २६.

प्रश्नः—आहींथी जीव च्यवी पांच गतिमांहेनी कई गतीमांहे गयो, ए शुं चिन्हथी जणाय ?

उत्तरः—श्री "ठाणांगजी" सूत्रना पांचमे ठाणे एम कह्युं छे के पगमार्गेथी जीव नीकले एवुं समजाय तो ते जीव नर्कमां गयो एम जाणवुं, साथलथी नीकले तो तीर्यंचगतिमां गयो समजवुं, हृदयथी नीकले तो मनुष्यगति समजवी, उत्तमांगथी नीकले तो देवगति समजवी, अने सर्वांगेथी

नित्य नित्य नवला नेहथी, नमन करुं गुरुराय !
मेहेर करो मुज उपरे, कारज सब ही थाय. ॥५॥
अरिहंत ज्ञान अनंत छे, जाको न लहिये पार;
किंचित् बुद्धि साधने, करुं हुं तास विस्तार. ॥६॥
सूत्र–ग्रंथ बहु वांचतां, विध विध शंका थाय;
समाधान तेनुं करुं, ज्ञानी तणा पसाय. ॥७॥
कोइ सूत्र कोइ अर्थमें, को प्रकरणमें जोय;
को सज्जनसें धारिया, प्रश्नोत्तर अति सोय. ॥८॥
स्थिर चित्ते विवेकथी, वांचे तो फळ होय;
नथी पूर्णता अंही कहीं, दोष न देशो कोय. ॥९॥

उत्तरः—भवनपती देवनी जातिमां समजाय छे, तेमज तेने माथे पति नथी अने ते शीलवती पण नथी; विषय इच्छा प्राप्ति वखते पोताना शरीरमांथी वैक्रिय पुरुष बनावी भोग भोगवे छे, पण धणीपणुं माथे नथी.

प्रश्नोत्तर २९.

प्रश्नः—ठाणांगजी ठाणे नवमे अन्न विगेरे नव प्रकारे दान देवाथी पुन्य थाय, एम कह्युं तो शुं वस्तु आपे छे ते वस्तु पुन्य छे के केम?

उत्तरः—जे जे वस्तु आपे छे ते वस्तु कांइ पुन्य नथी तेम जे लेनार कांइ पुन्य नथी. पण प्राणीने दुःखी देखी अंतरंग अनुकंपा आवी तेटलुं पुन्य बंधाणुं; वस्तुमां पुन्य समजवुं नहीं.

प्रश्नोत्तर ३०.

प्रश्नः—दसमे ठाणे दस प्रकारनी गति कही छे तेमां सिद्धनी विग्रह गति कही छे ते शी रीते?

अने साधुजीनुं 'साहरण' करी कोइ देवता मनुष्य क्षेत्र बहार लोकमां बीजे ठेकाणे लइ गया
होय तेमने पण आपणे नमस्कार करवो छे माटे 'लोए' शब्द कह्यो. (२) अरिहंत, आचार्य अने
उपाध्यायः ए त्रण, नंदीश्वर द्विपे तथा रुचक द्विपे तथा पंडकवने जता नथी अने साधु जाय छे
माटे 'लोए' शब्द कह्यो. (३) अरिहंत, आचार्य तथा उपाध्याय ए त्रण 'पुरुष' छे अने साधुमां सा-
धुसाध्वी बन्नेनो समावेश थाय छे. (४) केटलाक भावसाधु अप्रमादी गुणस्थानवाळा गृहस्थलिंगे
तथा अन्यलिंगे छे तेमने पण नमस्कार करवानो होवाथी 'लोए' शब्द कह्यो. अरिहंत, आचार्य
अने उपाध्यायः ए त्रण तो स्वलिंगे ज छे माटे ए त्रणमां 'लोए' शब्द न कह्यो. (५) सिद्ध तो
मुक्ति शिलाए ज छे अने अरिहंत, आचार्य तथा उपाध्यायः ए त्रण अढीद्विपमां ज छे माटे ए चार
पदमां 'लोए' शब्द न कह्यो अने साधु अढीद्विप मांहे तथा अढीद्विप बहार तथा लोक मांहे
अन्य स्थाने पण होय छे, माटे ए पांचमा पदमां 'लोए' शब्द कह्यो छे. (नवकारनी साख
श्री चंदपन्नति सूत्रनी.)

खशे केम ? तो ते दाखला जोतां विमान सहित आव्या एवुं संभवतुं नथी.

अत्र शंकाः—बीजा कहे छे के मुळगेरुपे आव्या त्यारे कोइ कहे के तीर्थंकरनां ओत्सवमां मुळगेरुपे आवे छे तो शंका शेनी ?

तत्रोत्तरः—मुळगेरुपे आवे पण उतर वैक्रीय शरीर बनावीने आवे कारण के जे तीर्थंकरने वारे जेटली अवगाहना होय तेटली अवगाहना बनावीने आवे पण चंद्रने सूर्यना देवता मुळ रुप एटले भवधारणी शरीर जे छे ते रुपे न आवे कारण के ते तो नग्न भाव छे तो ते रुप आवे तो लोकमांही आश्चर्य लागे. ते माटे उतर वैक्रीय बनावीने आवे. पण चंद्र ने सूर्यना देवता मूळरुप एटले भवधारणी रुपे आव्या एटले समोशरणमां आश्चर्य लागी गयुं एम संभव थाय छे. तत्त्व तो केवलीगम्य; बहुसूत्री कहे ते सत्य.

लेवा कह्युं छे पण कांइ बेहडां—दाडम प्रमुखनो अंदर पाणी होतुं नथी; तो ए पदार्थोनुं धोवण लेवानुं कह्युं छे, एवुं स्पष्ट समजाय छे. तेवीज रीते, तेज सूत्रमां नाळीएरनुं पाणी एटले नाळी-एरना धोवणनुं पाणी लेवुं कहेलुं छे, एम समजवुं (साखः—श्री 'सूयगडांगजी' सूत्रना सु० २, अ० ३ मां कह्युं छे के, वनस्पतिमां पाणी उपजेछे; ए न्याये नाळीएर अंदरनुं पाणी सचेत समजवुं.)

प्रश्नोत्तर ४.

प्रश्नः—साधु साधवीने चातुर्मास (चोमासा) तथा शेषकाळ [शेखाकाळ] उपरांत रहेवुं कलपे के नहि ?

उत्तरः—रोगादिक कारण वगर रहे तो 'काळातिक्रान्त' दोष लागे. (साखः—श्री'आचारांगजी' सूत्र सु० २, अ० २, उ० २)

उत्तरः—श्री उगणसाठमा समवायांगमां उगणसाठसे मल्लीनाथस्वामीना अवधज्ञानी कह्या ते समचे भेदना जाणवा अने ज्ञातासूत्रमां बे हजार अवधज्ञानी कह्या ते विशेषे पर्म अवधज्ञानी जाणवा.

प्रश्नोत्तर ३४.

प्रश्नः—श्री "समवायांग" सूत्रमां श्री मल्लीनाथ भगवानना ५७०० मन: पर्यव ज्ञानी कहया अने ज्ञाताजी सूत्रना अध्ययन ८ मां ८०० कह्या ते केम?

उत्तरः—ज्ञाताजी सूत्रमां ८०० कह्या ते वीपुलमति मनःपर्यवना धणी समजवा अने समवायांग सूत्रमां ५७०० कहया ते रुजुमति तथा वीपुलमति बन्ने संयुक्त समजवा.

प्रश्नोत्तर ३५.

प्रश्नः—समवायांग सुत्रना बत्रीशमा समवायंगमां ३२ इंद्र कह्या अने जंबुद्विपपन्नंती सुत्रमां ४८ कह्या अने ठाणांगजी सुत्रना बीजे ठाणे ६४ कह्या तेनुं केम?

के आ लुण छे. तो गृहस्थनुं घर घणुं दूर नही होवाथी ते लुण लइने तरत मुनीये ते गृहस्थने बतावीने कहेवुं के हे आयुष्यमन् ! आ लुण तमोए जाणतां छतां दीधुं के अजाणतां दीधुं ? त्यारे गृहस्थ कहे के, में अजाणतां दीधुं; पण हवे आपने खुशीथी आपुं छुं, माटे आप ते भोगवो. तो ते लुण मुनी खाय तथा संभोगीने वहेंची आपे, तो ते लुण सचेत समजवुं के केम ?

उत्तरः–ते लुण अचेत छे. केमके श्री 'दशवीकालीक' सूत्रना अध्ययन ६ मां गाथा १७ मध्ये कह्युं छे के "बिरु मुब्भे इमं लोणं॥ तिलंसप्पिचफाणियं ॥ नतेसंनिही मिच्छंति ॥ नायपूत्ते वझरया" अर्थः–पाकुं बीलवण तथा काचुं खाणनुं सेकेलुं लुण, तेल, घी, गुरु, एटली चीजो साधु वासी राखवा वांछे नहीं. जो कदाचीत सचेत होय तो मुनी लावे ज नहीं. तो उपरनी गाथानो न्याय जोतां लेवानी मना नथी, पण कल्प उपरांत वासी राखवानी मना छे; तो ते न्याये उपरना सूत्रमां कहेल लुण अचेत समजवुं.

शंकाः–तमो अचेत कहो छो; तो पछी ते ज सूत्रमां ते लुणने अफासुक कहेल छे तेनुं केम ?

प्रश्नोत्तर ३७.

प्रश्नः—तिर्थंकर, चक्रवर्ती, वासुदेव, बलदेव ए चार पुरुष चोथा गुण स्थानथी चडीने पाधरा छठे गुण स्थाने जाय. पण पांचमु गुण स्थान फरसे नही तेनुं शुं कारण?

उत्तरः—पांचमु गुणस्थान कायरपणानुं छे. केमके ज्यारे आणंदादिक श्रावके व्रत आदर्या त्यारे एम कहयुं के "धन्य छे! राईसर, तलवर, शेठ, सेनापति विगेरेने के, आपनी पासे दीक्षा अंगिकार करे छे, पण हुं ते करवाने असमर्थ छुं." ए कारण माटे उत्तम पुरुष तो सुरा छे तो कायरपणुं नहि बतावतां सुरपणे छठुं गुण स्थान अंगिकार करे छे पण पांचमुं गुणस्थान फरसे नहि (साखः—श्री समवायंग सुत्रनुं चोपनमुं समवायंग).

प्रश्नोत्तर ३८.

प्रश्नः—धातकीखंड ने पुष्कर द्वीपना मेरु केटला ऊंचा छे?

ઉત્તરઃ—દયામૂલક જૈનસૂત્રમા હિંસક પરુપણા હોય જ નહિ. એ તો અર્થ સમજનારની ભૂલ થાય છે. અર્થ સમજવામાં ગુરુગમની પહેલી જરુર છે.

શ્રી 'ચંદપન્નતિ' સૂત્રના ૧૦ મા પાહુડાના ૧૪મા પાહુડા પાહુડામાં કહ્યું છે કે, રેવતી નક્ષત્રે જલચરનું માંસ ખાઇને કાર્ય સિદ્ધિ કરે. ત્યાં 'જલચર'નો અર્થ 'જલજ' એટલે જલમાં જન્મેલું એવું સીંગોડું, એવો અર્થ થાય છે. સીંગોડું તેમજ માછલું બન્ને પાણીમાં જન્મતા હોવાથી આ ભૂલ થવા જોગ છે. તેવીજ રીતે ઉપલા વાકયમાં માંસ શબ્દે સીંગોડા જેવી વસ્તુઓનો ગીર (ગર્ભ) સમજવો.

સાધુએ એવી વસ્તુ લેવી જોઇયે નહિ કે જેમાં, ખાવા લાયક પદાર્થ (ગીર) થોડો હોય અને નાખી દેવાનો પદાર્થ (કાંટા-છોડાં-ઠલીઆ) વધારે હોય. તેમ છતાં કોઇ ગૃહસ્થ ભૂલથી તેવો પદાર્થ સાધુના પાત્રમાં નાખે તો સાધુએ કેમ કરવું તેનો રસ્તો આ વાક્ય સૂચવે છે; તે એમ કે, ગીર ગીર ખાવો અને કાંટા—ઠલીઆ વિગેરે પરઠવી દેવા. વિશેષ ખુલાસો શ્રી "જ્ઞાતાજી" સૂત્રના પાંચમા અધ્યયનમા સેલગ રાજ ઋષિના અધિકારમાં જોવો, જ્યાં માંસ ખાવાની સાફ મનાઇ છે.

(साख, समवायंगजी सूत्रनी)

प्रश्नोत्तर ४१.

प्रश्नः—नारकीमां पाथडा माळ माफक छे तो देवलोकमां आंतरा शी रीते समजवा?

उत्तरः—असंख्याती योजननी कोडाकोड उंचा जाइये त्यारे पहेलो देवलोक आवे, तेनो पहेलो परतर आवे ते कहे छे. २७०० योजनना भोंय तलीया छे अने ५०० योजनना महेल छे अने अने तेना उपर धजा छे. ते धजा उपर बीजा परतरनुं भोंय तलीयुं आवे अने पछी महेल आवे. एवी रीते सर्व देवलोकना पडतर चारे तरफ खुल्ला छे अने नारकीना पाथडा चारे तरफ बंध छे; आंबानी गोटली माफक देवलोकमां माळ माफक आंतरा समजवा.

प्रश्नोत्तर ४२.

प्रश्नः—अणइछा शीयल पाले जावत क्षुधातृषा सहन करी आंहींथी काल करी क्यां उत्पन्न थाय?

हार करवा बेसे, तेमां शिष्यने आहार आकोटी भोगववाना कारणथी कर्म लाग्या, अने गुरुने न लाग्या, एम व्यवहारनयनी दृष्टिथी कही शकाय.

प्रश्नोत्तर ११.

प्रश्नः—श्री 'ठाणांगजी' सूत्रना बीजा ठाणा मध्ये श्री जीनराज देवे पूर्व तथा उत्तर दिशामां साधु—मुनीराजने दीक्षा देवी, प्रथम मांडले बेसाडवो, लोच करवो, वाचना देवी, विगेरे मांगलिक कार्य करवा कह्युं तेनुं शुं कारण?

उत्तरः—पूर्व दिशानुं नाम 'विमला' कह्युं छे केमके ते दिशा शुभ छे अने विशेषे सोमनुं राज्य सुखाकारी प्रवर्ते छे. ए हेतुथी पूर्व दिशा मांगलिक कही. तेमज उत्तर दिशामां श्रीतीर्थंकर देवोनो वास शाश्वतो छे तथा वैश्रमण भंडारीनुं राज्य होवाथी लोक सुखाकारी प्रवर्ते छे, ए हेतुथी उत्तर दिशा मांगलिक कही.

अने मनुष्यने अठम भत्क कहेवुं. (शास्त्र सुत्र भगवती शतक १ उदेशो २)

प्रश्नोत्तर ४५.

प्रश्नः—कीया कर्मनी जीव उदेरणा करे?

उत्तरः--उठाणादीक पांच बोले करी उदेरणा जोग कर्मनी उदेरणा करे. पण उदे थया पछी उदेरणा न करे; (शास्त्र भ० स० १३०३) तेमज कांक्षा मोहणीनी उदेरणा कहेली छे. तेने उपसांत करे (क्रोध उत्पन्न शांतवत) पण उदे आवेल तेने उपशांत न करी शके.

प्रश्नोत्तर ४६.

प्रश्नः--साधूजी कांक्षा मोहनी कर्म केटली प्रकारे भोगवे?

उत्तरः—तेर बोले करी भोगवेः—मांहोमांहे अंतर पडे ते ज्ञान अंतरे करी १ दर्शन अंतर २ चारित्र अंतर ३ लींगांतर ४ प्रवचन अं० ५ प्रवज्यां अं० ६ कल्प अं० ७ मग अं० ८ मतां-

प्रश्नोत्तर १४.

प्रश्नः—एक वखते एक स्त्रीने उत्कृष्टा केटला गर्भनो जन्म थाय?

उत्तरः—जघन्य १-२ अने उत्कृष्ठ जन्मे तो ३ जन्मे. १ पुरुष, १ स्त्री, १ बंब (अनेक तरेहना आकार मात्र जेमके सर्पाकार, नोळ के पक्षी विगेरेना आकार) पुनः बे पुरुष अने एक बंब, अगर बे स्त्री अने एक बंब पण जणे. तेमज नपुंसकनुं समजवुं. पण एक वखते ३ उपरांत गर्भ प्रसवे नहि. (साखः—श्री 'ठाणांगजी'सूत्रनुं ठा. ३; तथा 'रत्नचिंतामणी' ग्रंथ).

प्रश्नोत्तर १५.

प्रश्नः—लोको कहेछे के तारो खर्यो (टुट्यो) ते शुं खरेखर तारो ज टुटी पडेछे के केम?

उत्तरः—खरेखर तारो तो टुटी पडतो ज नथी; एम थाय तो पछो संख्याते काळे आकाश खाली थइ जाय. पण तेम थतुं नथी. श्री 'ठाणांगजी' सूत्रना त्रीजे ठाणे कह्युं छे के--त्रण प्रकारे

प्रश्नः--मोहनीय कर्मना उदे करी उत्तम गुण स्थानथी नीचे गुण स्थाने आवे के नहीं?

उत्तरः--भला गुणस्थानथी उतरते बाल वीर्यपणे ने बाल पंडीत वीर्यपणे आवे एटले श्रावकपणुं पामे अथवा अज्ञानपणुं पामे अने मोहनीनो उपशम होय तो भले गुणस्थाने चडेते श्रावकपणु तथा साधुपणुं पामे. [साख भ० स० १ उ. ४.]

प्रश्नोत्तर ४९.

प्रश्नः--मोहनीय कर्मने उदेशुं रुचे?

उत्तरः--पूर्वे अहिंसा धर्म रुचतो हतो पण उदे भावथी पछे हिंसा धर्म रुचे (शा० भ० स० १ उ. छे.)

प्रश्नोत्तर ५०.

प्रश्नः--दान देवुं ते तो क्षयोपसमभावथी देइ शके छे तो दान देवावाला जीवो तो मिथ्या-

भूमिकंप थवानां कारण ६, श्री 'ठाणांगजी' सूत्र ठा. ३, उ. ४ मां आ प्रमाणे कह्यां छेः--
त्रण कारणे 'देशथी' पृथ्वी कंपेः--(१) पहेली नर्क तले बीजेथी आवीने मोटा पुद्गलो प्रणमे तेथी; (२) व्यंतर देव पोताना वासमां रहीने ऊंचो नीचो थइ कंपावे; (३) नाग कुमार--सोवन कुमार मांहोमांहे युद्ध करे तेथी पृथ्वी ध्रूजे. ए त्रण कारणथी पृथ्वी 'देशथी' कंपे. अने बीजां ३ कारणथी 'सर्वथा' कंपेः--(१) पृथ्वी तळेनो आधारभूत वायरो गुंजवाथी; (२) देवता महर्धिक साधुने पोतानी रिद्धि बलादिक बतावतां; (३) वैमानीक अने भुवनपति देव मांहोमांहे संग्राम करे तेथी. ए त्रण कारणे 'सर्वथा' भूमि कंपे.

प्रश्नोत्तर १७.

प्रश्नः--श्री 'ठाणांगजी' सूत्रना त्रीजे ठाणे कह्युं के बारमी भीख्खुनी पडिमा आदरनारने ३ गुण थाय अगर ३ अवगुण थाय, छतां 'भगवतीजी'मां स० २, उ० १, मां एवो अधिकार छे के खंधकजीए बारमी पडिमा आदरी छतां कांइ गुण न नीपज्यो. तेनुं शुं कारण?

प्रश्नः—नारकीनी मध्यम स्थितिमां क्रोध--मान--माया--लोभना ८० भांगा करवानुं शुं प्र-
योजन ?

उत्तरः—नारकीनी मध्यम स्थितिनां स्थानक अशास्वतां छे माटे. क्रोधीने रीवा एक वचन प-
ण लाभे छे. ते कारणथी कषायनी ८० भांगा लाभे छे. ने जघ० उ० स्थितिमां एक वचनी नथी माटे
२७ भांगा कहेल छे. (साखः—भ० स० १ उ० ५)

प्रश्नोत्तर ५३.

प्रश्नः—जघन्य अवघेणामां ८० भांगा क्रोध--मान--माया--लोभना कह्या तेनुं शुं प्रयोजन ?

उत्तरः—जघन्य अवघेणा उपजती वखते ज होय. अने कोइ वखत क्रोधी एकज आवी उपजे.
ते आश्री ८० भांगा कह्या छे; ने मध्य उ० अवघेणामां २७ लाभे तेज प्रमाणे सर्व बोलमां ज्यां
८० भांगा कहेल छे ते स्थान असास्वता आश्री एक वचन समजवुं (शाख भ० स० १ उदे० ५)

प्रश्नोत्तर १९.

प्रश्नः—श्री 'भगवतीजी'सूत्रमां कह्युं छे के बहारना पुद्गल लीधा विना विक्रोवणा करी शकाय नहि. अने श्री 'ठाणांगजी' ठा० ३ उ० १ मां विक्रोवणाना अधिकारे कह्युं के, बाह्य अभ्यंतर ए बन्ने पुद्गल लीधा विना विक्रोवणा करे; ए बनेना फरकनुं समाधान शुं?

उत्तरः--मीश्र पुद्गल लीधा विना एक पक्षना पुद्गल लइने करे एटला माटे 'ठाणांगजी'मां ना कही समजाय छे. भवधारणी रुपने गठारे-मठारे-समारे-शोभनीक करे, तेने बहारना पुद्गल लेवानो जरुर नथी. जेम माणस पोताना हाथथी केशमुखादिक समारे, ते न्याये समजवुं.

प्रश्नोत्तर २०.

प्रश्नः--देवताने च्यवन वखते केटलां चिन्ह थाय?

उत्तरः--१० चिन्ह थाय. १ फुलनी माळा करमाय. २ लज्जा नाशे. ३ शरीरनी शोभा जाय.

लोढानी कोठीमां रह्यो थको बहार अनेक वैक्रीय रुप करे तेम जाणवुं. वैक्रीय रुप जेम बाहेरथी बने तेमज अभ्यंतरथी बनी शके केमके वैक्रीय रुप करवामां आत्म प्रदेशनी जरुर छे. पण मुल शरीरनी जरुर नथी.जो मुल शरीर बदली तेवुंज रुप बीजुं करवुं होय तो मुल शरीरनी जरुर पडे. पण अनेरा बीजा रुप करवामां मुल शरीरनी जरुर बीलकुल नथी, आत्म प्रदेशथी रुप करे छे. जेम देवता वैक्रीय समुद्घात करी शरीरथी आत्म प्रदेश बहार काढी आत्म प्रदेशे बहारना पुद्गल ग्रहण करी रुप बनावे छे तेमज आ गर्भमां रह्यो थको जीव रुप बनावी शके छे.

प्रश्नोत्तर ५६.

प्रश्नः—भ. स. २ उ. १ मां कह्युं छे के, वायरो फरस्यो ज मरे पण अण फरस्यो मरेज नहीं; तो घनं वायादिक तो स्थीर छे, तो तेनुं मृत्यु शी रीते थाय ?

उत्तरः—वायरो फरस्या विना मरतो नथी तो घन वायरो पण अथीर होय छे (शास्त्र त्रीजे ठा-

उत्तरः—श्री "ठाणांगजी" ठाणे ४ उ० १ अंतक्रियाना अधिकारे कह्युं छे के सनत्कुमार मोक्ष गया.

प्रश्नोत्तर २३.

प्रश्नः—लोकमां पीस्तालीशलाख जोजनना केटला पदार्थ छे?

उत्तरः—चार पदार्थ. (१) रत्नप्रभाने पहेले पाटडे 'शीमंत'नामा नर्कावास, (२) मनुष्य क्षेत्र अढीद्विप, (३) 'उडु'नामा विमान, (४) सिद्धशिला (साखः—'ठाणांगजी'सूत्रना ठाणे चोथे).

प्रश्नोत्तर २४.

प्रश्नः—एक लाख जोजनना केटला पदार्थ छे?

उत्तरः—चार पदार्थ. (१) सातमी नर्कनो 'अपैठाण'नामा नर्कावास, (२) सर्वार्थसिद्ध विमान, (३) पालकजाण विमान, (४) जंबुद्वीप. (साखः—सुत्र 'ठाणांगजी' ठाणे चोथे कह्युं छे).

माणे अर्थ समजवो ने ते भोजन करवाथी केवुं शरीर देदीप्यमान लागे छे वीगेरे ते ठेकाणे अलं-कारो छे. तो ते न्याय जातां भगवंत नीत्य भोई छे एवुं कहेवामां बाधक नथी.

प्रश्नोत्तर ५८.

प्रश्नः-भगवतीजी सुत्रना स.२ उ.१ मां कह्युं छे के बार प्रकारना बाल मरण करतो जीव अनंत संसार वधारे एम कह्युं छे अने ठाणांग सुत्रना ठाणे बीजे कोइ कारणने माटे बे मरणनी आज्ञा करी छे तो केम ?

उत्तरः—ठाणांगजी सुत्रमां जे आज्ञा कहेल छे ते शीयल राखवा माटे बाल मरण करता जीव संसार वधारतो नथी अने आराधीक थाय छे तेथी आज्ञा करी छे.

प्रश्नोत्तर ५९.

प्रश्नः—सकाम निर्जरा कहेने कहेवी ?

नीकले तो मोक्षगति समजवी, ए प्रमाणे एकबीजा अंगोनी जोडे उपांग अनुसंधाने विशेषाविशेष गति जाणवी.

प्रश्नोत्तर २७.

प्रश्नः—श्री "ठाणांगजी" सूत्रना सातमा ठाणामां सात कुलगर कह्या तथा 'भगवतीजी' सूत्रना शतक ५ माना उद्देशा ५ मा मध्ये अने दशमे ठाणे दश कुलगर कह्या ते केम?

उत्तरः—दश कह्या ते गई उत्सर्पिणीकालना समजवा अने सात कहया ते चालती अवत्सर्पिणीकालना समजवा, कारण के बन्ने ठेकाणे नाम जूदा जूदा छे तेमज काल पण जूदो जूदो कहयो छे.

प्रश्नोत्तर २८.

प्रश्नः—छप्पन कुमारीका कइ जातिमां गणवी? अने तेने माथे पति होय के नहि?

तो तेमने संज्ञा केहवी के केम?

उत्तरः—केवली महाराज आहार करे छे पण संज्ञानथी जेम मुनीराजने गुमडादीक व्याधी थ-य थके मोह रहित साता सुख संयमने अर्थे जेम उपचार करे छे ते न्याय केवली महाराज क्षुधा वेदनी बुझववाने अर्थे आहार करे छे ते पण संज्ञा रुप नथी.

प्रश्नोत्तर ६१.

प्रश्नः—केवली माहाराज आहार करे छे एवुं कीये ठेकांणे छे?

उत्तरः—भगवती शतक बीजो उदेशा पहेलामां खंधकजीने अधिकारे श्री महावीर परमात्माए आहार कर्यो तथा ज्ञाताजीमां मल्लीनाथ भगवंते प्रथम छठने पारणे वोहरवा गया वीगेरे प्रथम दातार तथा दानने अधीकार छे ते न्याय जोतां केवली महाराजे क्षुधा वेदनीने कारण आहार करे छे तेमां संदेह नथी.

उत्तरः—ए बोल पद पुरण समजयि छे तथा टीकावालाए एवो अर्थ कर्यो छे वी एटले आकाश ग्रह एटले ग्रहवुं एटले आकाशने फरशीने शमश्रेणीये जाय छे पण सिद्ध वीग्रह गति करता नथी. पछी तत्व केवली गम्य.

प्रश्नोत्तर ३१.

प्रश्नः—ठाणांगजी सूत्रना ठाणं १० मे दश अछेरा छे तेमां एम कह्युं के "अवरीए चंद सूराणं" एटले उतर्या चंद्रमा ने सूरज. त्यारे कोइ कहे छे के चंद्रने सूर्य लोकमांहि विमान सहित उतर्या. वळी कोइ कहे छे के मूळरुपे आव्या ने विमान त्यां रह्या; एम कहे छे तेनुं केम?

उत्तरः—चंद्र सूर्य विमान सहित उतर्या एवुंकहे छे त्यारे तेनो उत्तर के ज्यारे विमान उतर्या त्यारे तो लोकनी स्थिति पण फरवी जोइये ने वळी विमान नीचे आव्या तो क्यां समाणा? कारण के ते विमान शास्वता छे; शंकोचाय तेम नथी. तो केम समाय? वळी शास्वती वस्तु मुळ ठेकाणेथी

त्यारे नवुं शरीर बांध्यु तेमां बीजा १२ वर्ष पुरा करी २४ वर्षनी स्थिती मनुष्यना गर्भावाशानो जीव करे. अथवा बीजी मातानी कुखे बार वरस रहे पण वचे अंतर न पडे; ए प्रमाणें समजवुं.

प्रश्नोत्तर ६३.

प्रश्नः—तिर्यंच गर्भजने विषे एक भवमां रहे तो केटलो काळ रहे?

उत्तरः—जघन्य अंत्त मुहुर्त उत्कृष्टो आठ वर्ष सुधी रहे. शास्त्र भगवतीजी सुत्रना शतक. उद्देशो ५

प्रश्नोत्तर ६४.

प्रश्नः—बाह्य तप कोने केहवो अने अभ्यंतर तप कोने केहवो?

उत्तरः—बाह्य तप तो शरीरनी सोसन रुप छे तेथी ते तपश्चर्यादीकथी तो आमो स्यादी लब्धीयोनुं पामवापणुं छे अने अभ्यंतर तपथी तो शुद्ध अंत रंग भाव तपथी अनंता कर्मनी निर्जरा

प्रश्नोत्तर ३२

प्रश्नः—समवायांगजी सूत्रना त्रेवीशमा समवायांगमां त्रेवीश तीर्थंकरने सूर्योदये केवळ ज्ञान उत्पन्न थयुं कह्युं; अने ज्ञाताजी सूत्रमां श्री मल्लीनाथजी भगवंतने "पच्चानंकाल समयंसी" एम कह्युं तो शी रीते समजवुं ?

उत्तरः—'पच्चानंकाल' एटले पाछले पोहोरे एम समजवुं नहीं. पण बार वाग्या पहेलुं समजवुं; कारण के बार वाग्या सूधीनो सूर्योदय काळ समजवो, ने पछीनो काळ पाछलो समजवो; तो श्री मल्लीनाथ भगवंतने सूर्योदये केवळ उत्पन्न कह्युं ते उपरना न्यायथी समजाय छे.

प्रश्नोत्तर ३३.

प्रश्नः—समवायांग सूत्रमां मल्लीनाथ भगवंतना ५९ से अवध ज्ञानी कह्या अने ज्ञाताजीमां बे हजार कह्या ते केम ?

विशेस शंकाः-पहेलामांडलानी आद तो नीलवंत पर्वत उपरपण छे तो त्यां पुर्व दीसा केमनकही?

तेनो उत्तरः—उपरना सतक उद्देसामां जीनराज देवे कहयुं छे के, पहेलो समय आवलिका एम जावत् युगनी आद प्रथम भरत इरवत क्षेत्रे स्थापी छे अने त्यारपछी बीजाक्षेत्रोमां समयबेसे छे ते अपेक्षाये पुर्व तेज कही छे.

शंकाः—भरत क्षेत्रमां समय लागे छे तेहीज वखते इरवृतक्षेत्रमां साथेज समो प्रवृते छे तो त्यां पुर्व नही तेनुं शु कारण ?

उत्तरः—जंबुद्वीप पन्नतीमां महावीदेह क्षेत्रना बे भाग कहेल छे. त्यां पूर्व विदेह अने अवर विदेह एटले पुर्व तथा पश्चीम महावीदेह कहयुं छे ते परुपणा आखा जंबुद्वीप आश्री छे तथा भ० स० १६ उ० १३ मां दश दीशाओ कही छे त्यां पण मेरुथी पुर्व दीशाने पुर्व कहेल छे ते कारणथी आखा लोकमां तेहीज पुर्व दीशा संभवेछे अने सर्व क्षेत्रो वाला पण तेनेज पुर्व

उत्तरः—समवायंग सुत्रमां कह्या ते वाणव्यंतर अल्प रिद्धिया छे माटे तेने वरजीने ३२ इंद्र कह्या अने जंबुद्विप पन्नती सुत्रमां कह्या तेमां वाणव्यंतरना १६ वधार्या अने ठाणांगजी सुत्रमां सर्व मळी चोसठ इंद्र कहया छे, ते समजुती माटे अपेक्षे गण्या छे.

प्रश्नोत्तर ३६.

प्रश्नः—समवायांग सूत्रना चोत्रीशमा समवायंगमां तथा टीकामां ज्यां ज्यां भगवंत वीचरे त्यां त्यां सो सो गाउ सुधी 'इति' एटले व्याधि अने 'मारी' एटले मरकी न होय ते केम?

उत्तरः—देवकृत अथवा गाम नगर देश संबंधी अतिशय भयंकर उपद्रव न होय अने विपाक सूत्रमां अभंगशेन चोरने कुटुंब सहित मार्यो ते राज विरुद्ध गुन्हो होवाथी पण अतिशय-ने लागु नथी. गौशाले भगवंतना बे साधुने शमोशरणमां बाली भस्म कर्‍या तथा भगवंतने छ म-हिना लोही खंडवाडो रह्यो ते पण अतिशय लागु नथी अने 'अछेरा' (आश्चर्य) भूत छे.

प्रश्नः—कोइ मनुष्य कोइ जीवने खोटुं आल चडावे (दीये) तो पाछु चडावनार प्राणी तेवुंज आल यथातथ्य भोगवे के केम?

उत्तरः-जेवुं आल जे भवमां चडाव्युं होय तेवुंज आल जथातथ्य भोगवे छे. मनुष्य भवमां चडाव्युं तो पाछो मनुष्य थाय त्यारे तेवुंज आल भोगववुं पडे, एहवुं श्री वीतराग देवे भ०स० ५ उ० ६ मां वर्णवी बतावेल छे.

प्रश्नोत्तर ६८.

प्रश्नः—पांच थावरमां विरहो पडतो नथी छतां भगवतीजी सुत्रनां शतक ५ उंदशा ८ मध्ये कह्युं छे के थावर काय वृद्धि पामे, हानी पामे तथा अवस्थित रहे तो जघन्य एक समो ने उत्कृष्टी आवलीका पांचनो असंख्यातमो भाग अवस्थित रहे एम कह्युं तेनुं केम?

उत्तरः—पांच थावरमां विरहानो अभाव छे पण कोइ वखत सरखा उपजे ने सरखा चवे ते आ-

उत्तरः—८५००० योजनना उंचा छे ने मूले प्रत्येक प्रत्येक एक हजार योजनना ऊंडा छे अने ८४००० योजन बहार छे. (शास्त्र, क्षेत्र शमाशनी तथा समवायंगजी सूत्रनी)

प्रश्नोत्तर ३९.

प्रश्नः—सुधर्मावतंशक विमान तथा इशानवतंशक विमान लांबुं पहोळुं केटलुं ?

उत्तरः—साडा बार लाख योजन लांबुं पहोळुं छे. (शास्त्र 'समवायंग सूत्र' नी)

प्रश्नोत्तर ४०.

प्रश्नः—नर्कमां पाथडा कह्या अने देवलोकमां परतर कह्या तो ते बेमां भिन्नता शुं समजवी?

उत्तरः—नर्कमां पाथडा कह्या ते चारे दिशाए भींतोए करी जडेला छे पण खुल्ला नथी कारण के पहेली नर्के त्रण कांड छे ते चारे तर्फनी भींतोमां विभागरुपे छे तेने कांड कहेल छे अने देवलोकमां परतर छे ते चारे दिशाए भींतो रहीत अने खुल्ला उपरा उपरी रहेल छे तेने परतर कह्या.

थाय छे तो वृत भांगे के नाहि?

उत्तरः—पोतानी स्त्री शेवतां त्रश जीवनीघात थाय ने तेनुं पाप पण लागे पण वृत भांगे नाहि केमके भगवतीजी सुत्रना शतक ७ मा ने उदेश १ ला मध्ये कह्युं छे के श्रावके त्रशजीव हणवानां पचखाण कर्या छे पण प्रथ्वी खोदतां त्रशजीव हणाय तेनुं पाप लागे पण व्रत भांगे नहि कारणके मनने संकल्प पृथ्वी खोदवानो छे पण त्रशजीव हणवानो नथी.

अत्र शंकाः—पृथ्वी खोदतां अजाणेत्रशजीव हणाय ता वृत भांगेनही पण मैथुन तो जाणीने शेवे छेतो वृत भांगवुं जोइए.

तत्रोत्तरः—तेहीज वृतमां आगार छे के [जाणी प्रीछी] ने हणवानां पचखांण तेनो अर्थ जाणीएटले ज्ञान दृष्टीथी अने (प्रीछी) चक्षु देखी ने हणवानां पचखांण छे तो ते जीव दृष्टीए आवतां नथी माटे व्रत भांगे नहि.

उत्तरः—वाणव्यंतर देवने विषे ज० दस हजार वरसनी स्थितीये उपजे ने उ० पल्योपमनी स्थीतीये उपजे अकाम निर्जरावाला असंजती (शाख भ० स १ उ० १)

प्रश्नोत्तर ४३.

प्रश्नः—अहींथी जीव परभव जातां ज्ञान दर्शन चारित्र साथे लेई जाय के नहीं?

उत्तरः—ज्ञान दर्शन साथे लेई जाय पण चारीत्र तो आ ज भवे लाधे पण पर भव चारीत्र साथ न जाय. [शाख भ० स० १ ने उ० १ लो.]

प्रश्नोत्तर ४४.

प्रश्नः—देवकुरु उतर कुरुना जुगलीयाने क्यारे आहारनी इच्छा उपजे ?

उत्तरः—देवकुरु उत्तरकुरुना मनुष्य जुगलीयाने अठम भत्के आहारनी इच्छा उपजे छे पण ते ज क्षेत्रना तीर्यंच जुगलीयाने छठ भत्के आहारनी इच्छा उपजे छे. माटे तीर्यंचने छठ भत्क कहेवुं

करे तेने कर्म आसीवीख समजवा पुलाग. लब्धीवत् समजवुं.

प्रश्नोत्तर ७३.

प्रश्नः—केटलाएक एम कहे छे के भगवतीजी शतक ८ उ० ५ मां श्रावकने पंदर कर्मादान-ना पचखाण करवा कह्या छे तेम छतां श्री उपासक दशांगमां श्री आणंद श्रावके पांचशे हल मोकला राख्या तथा सगडाल पुत्रे पांचशे नीभाडा मोकला राख्या ते केम?

उत्तरः—जे श्रावकने घेर पनर कर्मादान मांहेला वेपार होय तो ते पनर कर्मादान माहेलो वेपार न करे अने उपर लखेल श्रावकने घेरे हळने नीभाडानो धंधो हतो तेथी तेनी मर-जादा बांधीने उपरांतना सर्वथा कर्मादानना पचखाण करया छे पण उपाशकमां ५०० हल नाहि प-ण ५०० हलवा जमीन छे तेमज नीभाडा नही पण ५०० दुकानो छे तो पन्नवणाजीमां तथा अनु-योगद्धारमां तेने आर्य धंधो कहेल छे तो ते करतां बाधक नथी.

तरे ९ भागांतरे १० नय अं० ११ नीयमांतरे १२ प्रमाण अं० १३ ए तेर बोले करी शंका मोहनीय कर्म वेदे [शास्त्र भ० स० १ उ० ३].

प्रश्नोत्तर ४७.

प्रश्नः—भ० श० १ उ० ३ मां कहेल छे के एकेंद्रीथी जावत चौरंद्री जीव ज्ञान मनादिक वीना कांक्षा मोहनीय कर्म शी रीते वेदे ?

उत्तरः—जेम क्रोध मान माया लोभ सुख दुःख वीगेरे अजाणपणे ते जीव वेदे छे. तेमज कांक्षा मोहनीय वेदे छे. पण संज्ञातर्क विगेरेथी वेदता नथी. अने (जंजीणेहि पवईयं) इत्यादिक पाठ छे. ते समुच्चय छे. ते संज्ञीने माटे जाणवो. पण एकेंद्रियादिक असंज्ञीने माटे ते पाठ जाणवो नहीं. केमके तेमने मनादीक नथी.

प्रश्नोत्तर ४८.

तत्रोत्तरः—ज्ञानावर्णीने उदे बे परीसा छे; प्रज्ञाननो तथा अज्ञाननो ए बे. वेदनी कर्मना उदे अगीयार परीसहा छे ते क्षुधा तृषा, शीत, उष्न, दंशमंश, चालवानो, सेज्यानो, वधनो, तृणफासनो, मेलनो. ए अगीयार परिसहा वेदनीने उदे समजवा. मोहनी कर्मने उदे आठ परीसहा तेमां दरसन मोहनीने उदे एक दरसननो परिसो, चारित्रमोहनीने उदे सात परिसा ते अरती, अचेल, स्त्री, बेसवानो, जाचानो, आक्रोस वचननो, सतकारसनमानननो ए आठ परिसहा मोहनीने उदे. अंतरायने उदे एक अलाभनो परिसो लाभे. एम सर्व मली बावीस परिसहा चार कर्मने उदे छे. शास्त्र सुत्रभगवती शतक उदेशो ८ मां छे.

प्रश्नोत्तर ७६.

प्रश्नः—भगवतीजी स० ८ उ० १० मां जघन्य मझम उत्कृष्टी ज्ञानदर्शन अने चारीत्रनी आराधना कही ते केवी रीते समजवी?

त्वी पण छे अने समकीती जीवो पण दान दे छे तो बेयमां शुं फेर समजवो?

उत्तरः—दानान्त रायनो तो बन्नेने क्षयोपसम थयो छे, तेथी दान देवानी रुची प्रगट थइ; पण मिथ्यात्वी असंजतीने दान आपी भलो माने छे अने समद्रष्टी जीव संजतीने दान आपी भलो जाणे छे तो बन्नेमां तफावत एटलोज समजवो के मिथ्यात्वी जीवने दानान्त रायनो क्षयोपसम थयो पण मिथ्यात्व मोहनीनों उदे समजवो अने समद्रष्टी जीवने मिथ्यात्व मोहनी अने दानांतराय ए बनेनो क्षयोपसम थयो (साखः—भ० श० १ उ० ४ थो).

प्रश्नोत्तर ५१.

प्रश्नः—मोहनीय कर्मना उदेवालो जीव परलोकनी क्रिया करे?

उत्तरः—करे खरो, पण बालवीर्यपणे करे (साखः—भ० स० १ उ० ४).

प्रश्नोत्तर ५२.

ज्ञान कहेवुं.

तेनो उत्तरः—आंहीया उत्कृष्टु चारीत्र--ज्ञान--दर्शन केवली आश्री लहीए तो ते सतकना ते ज उदेसामां उत्कृष्टी आराधनावालो जघन्य तेज भवे मोक्ष जाय अने उत्कृष्टो त्रीजे भवे मोक्ष जाय एम कहेल छे तो जो आंहीयां केवली अपेक्षाए लहीए तो त्रीजो भवे केम थाय? माटे आंहीया उत्कृष्टी आराधना नीचे प्रमाणे समजवी. ज्ञाननी उत्कृष्टी आराधना ते मती श्रुतमां उत्कृष्टो प्रयत्न करवो ते. अने उत्कृष्टी दर्शन आराधना ते नीसंकीय पणे दर्शण आराधवुं ते अने उत्कृष्टु चारीत्र ते निरतीचारपणे शुद्ध प्रवर्तवुं ते. ए प्रमाणे त्रणेनी उत्कृष्टी आराधना समजाय छे तेमज जघन्य अने मझमनी आराधना लेवी. तत्वार्थ केवलीगम्य.

प्रश्नोत्तर ७७.

प्रश्नः—ज्ञानावरणी करमनी पांच प्रकृत्ति छे ते केडामोर बंधाय छे के एक वखते बंधाय छे? जो

प्रश्नोत्तर ५४.

प्रश्नः—सुक्ष्मशनी काय हमेशां वरसे छे के केम?

उत्तरः—हमेशां अहो रात्री सास्याभावे त्रण लोकमां वरस्यां करे छे. (शाख भ० श०१ उ०६).

प्रश्नोत्तर ५५.

प्रश्नः—भ. स. १ उ.७मां कह्युं छे के जीव गर्भमां रह्यो थको चतुरंगणी सेन्या बनावे छे.ते पोते बाहेर नीकलीने बनावे छे के अंदर रही बनावे छे?

उत्तरः—गर्भनो जीव वैक्रीय समुद घात अंदर रहीने ज करे. पण मुलरुप बाहेर नीकलेज नही. केमके मुलरुपनी बाहेर नीकलवानी तथा बेसवानी शक्ति नथी अने प्रदेश बाहेर काढवानी शक्ति छे. आत्म प्रदेश अरुपी छे अने तेने कोइ जीवनी आघात नथी. माटे मांहि रह्यो थको समुदघात करी प्रदेश बाहेर काढे. अने प्रदेसथी बाहेरना पुदगल लेई बहार रुप बनावे. जेम कोई

प्रश्नोत्तर ७८.

प्रश्नः—केटलाक एम कहे छेके जमाली छदमस्थ गया. ते केवळी थइ ने आव्या एम कहे छे तेनुं केम ?

उत्तरः—जमाली श्रीभगवंतनी पासे आव्या त्यारे एम कहेल छे के हुं बीजा शीष्यनी पेठे नहि पण हुंतो केवळी थइने गयो अने केवळी थइने आव्यो एम पाठ कहेल छे. शास्र भगवतीजी सुत्र शतक ९ माने उदेशा ३३ मा मध्ये कहेल छे.

प्रश्नोत्तर ७९.

प्रश्नः—केटलएक एम कहे छे के छदमस्थ एटले छथानां छे ते क्रोधादीक चार तथा राग द्वेष. माटे छद्मस्थ.

अत्रशंकाः—जो छ थाना छे माटे छद्मस्थ,तो अगीयार तथा बारमा गुणठाणावाळाने शुं कहेशो?

णे सर्वथी पृथ्वी चले त्यां कीधु छे के) घन वायु गुंजे छे तेथी घनोदधी कंपे छे. तेथी पृथ्वी सर्वथा चले छे. तो ते न्याये घनवाय गुंजे छे. त्यारे अथीर थाय छे अने ते न्याये फरस्या मरे वायुनुं उत्कृष्ट आयुष्य त्रण हजार वर्षनुं छे. ते घन वायादिकनुं जाणवुं केमके त्यां घणो काल स्थीर रही शके माटे फरस्या मरे. अण फरस्या न मरे.

प्रश्नोत्तर ५७.

प्रश्नः—भ. स. २ उ. १ मध्ये खंधकजीने अधिकारे एम कह्युं छे के भगवंत (वीयट भोइ) तेनो अर्थ नीत्य भोजी एम करेल छे. ने नमोथुणंमां वीयट्ट छउमाणं त्यां नीवर्त्या छे, छद्मस्थपणाथी, एवो अर्थ छे; तो खंधकजीने अधिकारे शुं समजवुं?

उत्तरः—खंधकजीने अधिकार जे कह्युं छे तेनो अर्थ एम छे के ते काल तेज समयने विषे एटले खंधकजी आव्या तेज समे भगवंत (वीयट्ट) नाम निवर्त्या (भोइ) नाम भोजन थकी ते प्र-

प्रश्नः—जे कर्म आत्म प्रदेश संघाते उपरा उपरी थर लाग्या छे तो मांहीला कर्म प्रथम शी रीते नीकली शके कारण के पहेला कर्म उपरना थरना नीकळवा जोइए तो प्रथम कर्म शुं न्याये नीकले ?

उत्तरः—जेम उदक मीश्रीत दुधवत् अगनी लागे पाणी हेठे जेम बले छे ते न्यायें प्रथम लागेला कर्म चलमानें चलीएने न्यायें प्रथम मना कर्म बल छे पण उपरा उपरीना, थररुप समजवा नहि केमके कर्म चोफरशी शाख. भ० स० १२ उ० ५ मा मध्ये कहयुं माटे स्थीती पाके नीकलता बाधक नथी.

प्रश्नोत्तर ८२.

प्रश्नः—मीथ्यात्व अने मीथ्यात द्रष्टी ए बेमां शुं फेर समजवो?

उत्तरः—मीथ्यात्वमां अने मीथ्यात द्रष्टी ए बंनेमां फेर छे. मीथ्यात्व छे ते चौफरशी. शाख भ०

उत्तरः—सकाम निर्जराना बे भेद छे; ते एक तो समद्रष्टीनी सकाम निर्जरा अने बीजी मीथ्यातीनी सकाम निर्जरा. तेमां समद्दष्टी जीव भव घटवानी इच्छा सहीत अणसणादीक १२ प्रकार मांहेला तप अंगीकार करे तेने सकाम निर्जरा कहीए अने ते संसार घटाडे छे अने मीथ्यात्वी जीव बे प्रकारना छे एक तो उर्धमुखी बीजो अधोमुखी तेमां जे उर्ध मुखी जीव छे ते परभवनी सुखनी इच्छा सहीत तपस्या करे तेने सकाम निर्जरा कहीए ते पण संसार घटाडवाना कारण रुप थाय छे. साख सुत्र वीपाक अध्ययन ११ मानी सुमुख गाथापतियादिकना पेरे अने जे अधोमुखी जीव ते लोभ सहीत इच्छाये तपस्या करे तेने पण सकाम निर्जरा कहीए पण ते निर्जराथी संसार वधारे साख भ. स. २ उ. १

प्रश्नोत्तर ६०.

प्रश्नः—केवली महाराजने आहार संज्ञा नथी छतां तेरमे गुण स्थाने रहया थका आहार करे छे

प्रश्नः—एक आकाश प्रदेश उपर अजीवना केटला भेद लाभे ?

उत्तरः—जघन्य पदे चार लाभे ते धर्मास्तिकायनो प्रदेश, अधर्मास्ति कायनो प्रदेश, अद्धा समयकाल प्रमाणुं एवं च्यार अने उत्कृष्टा पदे सात लाभे ते चार तेहीज अने पुद्गलनो खंध, देश, अने प्रदेश ए त्रण वध्यां. ए सर्व मली सात लाभे शाख भ० स० १२ उ० ६ नी.

प्रश्नोत्तर ८५.

प्रश्नः—राहु तथा चंद्रनी रीधी (संपदा) सरखी के केम अने राहुना विमान केवा रंगना छे अने केटलुं छेटुं छे?

उत्तरः—चंद्र करतां राहुनी संपदा ओछी छे कारण के चंद्रना विमानने १६ हजार देवता उपाडे छे अने राहुना विमानने ८ हजार देवता उपाडे छे तेथी राहुनुं विमान नानुं छे ने चंद्रमानुं विमान मोटुं छे शाख० जीवाभीगमनी तथा भ० स० १२ उ० ६ मां राहुनुं विमान चंद्रथी च्यार अं-

प्रश्नोत्तर ६२.

प्रश्नः—मनुष्यना गर्भावाशना जीवनी जघन्य स्थिति अंतर मुहुर्तनी अने उत्कृष्टी १२ वर्षनी अने कायस्थिती करे तो उत्कृष्टो २४ वर्ष रहे एवी रीते भ. स. उ. ५ मां मध्ये कह्युं ते शी रीते?

उत्तरः—एक जीव मातानी कुखने विषे आव्यो त्यां १२ वर्ष रहे ने पछी त्यांथी चवी बीजी मातानी कुखे १२ वर्ष रहे एम २४ वर्षनी काय स्थिति करे अगर तेज मातानी कुखे फरीथी चवीने उपजे.

अत्र शंकाः—त्यारे कोइ कहे जे ते छोडमां ने छोडमां उपजे के केम ?

तत्रोत्तरः—तेज छोडमां न उपजे. साख भ. स. १५ मां मध्ये भगवंते गोसालाने कह्युं के वनस्पतीमां तो पोट्ट परीहार छे पण मनुष्यमां नथी अर्थात मनुष्यना कलेवरमां पाछो मनुष्य ना उपजे कारण के माता पीतानो संबंध होवो जोइये ते विना उपजे नहीं; ने माता पीतानो संबंध थाय

नीकळया न थवा जोइये ए हेतुथी वज्या अंभवे छे. तत्वार्थ केवळी गम्य.

प्रश्नोत्तर ८८.

प्रश्नः—वासुदेवनी आगत ३२ बोलनी कही छे तो वासुदेव अनुत्तर वैमान वरजी सर्व वैमानीकनां नीकळया थाय ने बीजा देवना नीकळ्या न थाय तेनुं कारण शुं?

उत्तरः—सर्व वासुदेव पुर्वे चारीत्र पाळी नीयाणुं करी देवलोकमां जाय छे ते आश्री देवलोकनां नीकळया वासूदेव थाय छे कारण के साधुनी गति जधन्य पहेला देवलोकनी ने उत्कृष्टी सर्वार्थ सीधनी कहेल छे. तो ते न्यायथी वासूदेव वैमानीकनां नीकळयाज थाय अथवा कोइ कारणथी नर्कनुं आयु बांधेलुं छे. नर्कमां जइ पाछा वासुदेव थाय नीयाणुं बांध्या पछी नर्कनो बंध समजवो

प्रश्नोत्तर ८९.

प्रश्नः—भ० श० १२ उ० ९ मध्ये कहयुं के नर देवनुं जघन्य अंतरुं एक सागर झाझेरुं तो पेली

थाय छे.

प्रश्नोत्तर ६५.

प्रश्न—भगवतीजीसुत्रना स० ५ उ० १ ला मध्ये कहयुं छे के सुर्य आठे दीशाओमां उदय पामे अने आठे दीशामां अस्त पामे एम कहयुं तो पछी पूर्वदीशा केहने केहवी?

उत्तरः—भरतक्षेत्रनी अपेक्षाये जे पुर्व दीशा कहेल छे तेनेज पुर्व दीशा केहवी.

अत्रशंकाः—भरत क्षेत्रमां तो सूर्य पूर्वदीशाये उदय पामे छे माटे तेहने पुर्वदीशा कहेतां बाधक नथी. पण बाकीना त्रण क्षेत्रोमां तो पुर्व दीशामां सूर्य उदय पामतो नथी तो पछी ते क्षेत्रवालाओने पुर्व दीशा केइ समजवी ?

तत्रोत्तरः—नीखद पर्वत माथे पहेला मांडलानी आद छे ते माटे पुर्व दीशा तेनेज कहेवी.

उत्तरः—आंहि प्रत्येक एटले बेथी नव सुधी समजवुं नहि कारण के भगवतीजी सुत्रनां शतक १२ मा ना उदेशा १ मांनी वरतीमां बेथी मांडी नवाणुं सुधी प्रत्येक कहेल छे तो आंही आसेळीयो वार जे।जननी काया करे छे तो ते विरुध नथी.

प्रश्नोत्तर ११.

प्रश्नः—भगवतीजी सुत्रनां शतक १२ मा ने उदेशा १० मा मध्ये कह्युं छे के ज्ञान आत्मामां दर्शननी नीमा होय तो अभवी नव पूर्व भणे छे तो तेने ज्ञान थयुं तो दर्शन लाभवुं जोइये.

उत्तरः—अभवीने वह्नेवार ज्ञान छे पण नीश्चे ज्ञान नथी तो आ बोल भवी आश्री छे पण अभवीने लागु नथी.

प्रश्नोत्तर १२.

प्रश्नः—समकित जीवने मनुष्य विना बीजी गतिमां उपजे के नहीं ?

दीशा मानता होवाजोइए. पछी तत्वार्थ केवलीगम्य.

प्रश्नोत्तर ६६.

प्रश्नः—अनुतरवासी देवताने प्रश्नादिक शंका थाय त्यारे केम करे?

उत्तरः—ते देवता त्यां रह्या थका मने करी केवली भगवानने प्रश्न पुछे त्यारे केवली भगवान मने करी उत्तर आपे त्यारे अनुतरवासी देव त्यां बेठा समजी जाय.

अत्रशंकाः—त्यारे कोइ संका करे के केवली भगवान तो केवल ज्ञानथी जाणे पण अणुतरवासी देव शी रीते जाणे?

तत्रोत्तरः—अनुतरवासी देवने मनोद्रव वर्गणा लब्धी छे तेथी केवली भगवानना मननी वात जाणे छे, शास्त्र भगवती श० ५ उ० ४ नी

प्रश्नोत्तर ६७.

व समकीत पामे के नहि ?

उत्तरः—देव नारकीमां समकीती जीव मीथ्यात पामे अने मीथ्याती जीव समकीत पामे.

अत्र शंकाः—त्यारे कोइ एम कहे के पनवणा पद ३३ मामां एम कह्युं के नारकी देवतामां अवधी ज्ञानना अनुगामी आदी ८ बोल छे तेमां अनुगामी अपडवाइ अवस्थीत ए त्रण बोलनी हा पा डी छे तो नारकी देवतानुं अवधी अवठीए कह्युं तेम हाय मान नथी तेम वरधमान पण नथी तथा प डवाइ पण नथी तो नरकादीकमां समकीत तथा मीथ्यात पामे तो अवधीनुं वीभंग थयो तो ते प्रणाम नी हानी थइ के नही? तेमज मीथ्यातवालो समकीत पामे तो वीभंगनुं अवधी थयो के नहि? ते जोता समकीति जीव तो समकीतीपणेज रहेवो जोइये अने मीथ्याती मीथ्यातपणे रहेवो जोइये, एम संभवे छे.

तत्रोतरः—ए वात खरी छे पण ३३ मा पदमां कह्युं ते तो खेत्र आश्री एने हानी वृधी थ-

श्री अवस्थित कहेल छे जेम के दश नीकळे तो दश आवे पण वधु ओछा आवे जाय नहि माटे.

प्रश्नोत्तर ६९.

प्रश्नः—भगवतीजी सुत्रना शतक ६ उदेशा ८ मा मध्ये कह्युं छे के सुधर्मा तथा इशान देवलोकमां बादर पृथ्वी बादर अग्नी न लाभे एम कह्युं तो वैमान पृथ्वी दल छे छतां ना पाडी तेनुं केम ?

उत्तरः—देवलोकमां न समजवुं पण अहें नाम देवलोक हेठे समजवुं एटले आकाशमां न होय पण तमसकायनी अपेक्षाये बादर पाणी वनस्पतिने वायरो छे एम समजवुं पण पृथ्वीने अग्नी ए बे बोल न गणवा.

प्रश्नोत्तर ७०.

प्रश्नः—श्रावके त्रशजीव हणवानां पचखाण कर्या छे तो अब्रह्म सेवतां त्रसजीवनी वीराधना

शुं कारण?

उत्तरः—आवखुं बांध्या आश्री, कारण के नर्कनुं आउखुं बांध्युं त्यांथी नर्कनो जीव गणाय छे ते आश्री जाणवुं तेमज वली नोइंद्रीवाला जाय ते पण वाटेवेता आश्री समजवुं कारण के वाटे वेता एकेंद्री नथी.

प्रश्नोत्तर ९५.

प्रश्नः—देवलोकमां देवताने उत्पन्न थवानी सेज्या छे ते सर्व देवतानी सेज्या एकज छे के प्रत्येक २ देवता दीठ प्रत्येक १ सेज्या न्यारी २ छे?

उत्तरः—देवलोकमां देवताओने उत्पन्न थवानी सेज्या जुदी २ छे. पण एक नथी, जेम सूर्यना वीमानमां देवता संख्याता छे. तो सेज्या संख्याती जाणवी. अने असंख्याता जोजनना विस्तारवाळा वीमानमां असंख्याती सेज्याओ छे. ग्रीवेग अने अनुतरवासी देवता असंख्याता छे तो पोत-

प्रश्नोत्तर ७१.

प्रश्न—पहेली पोरशीने विषे साध साध्वीये आहारपाणी वीगेरे ग्रहण कर्यो छे ते आहारपाणी छेली पोरशीये (चोथेपोर) वापरे तो दोष लागे के नाहि ?

उत्तरः—कालातक्रांत दोष लागे शास्त्र. भ० श० ७ उ० १ ने वीषे कह्युं छे.

प्रश्नोत्तर ७२.

प्रश्नः—जाइ आसीवीख कोने कह्वेवो तथा कर्म आसीवीख कोहने कह्वेवो ?

उत्तरः—भ० स० ८ उ० २ मध्ये कह्यूं छे के वींछी प्रमुखने जाइ आसीवीख समजवा अने कर्म आसीवीख ते तपश्चर्याना प्रयोग वीगेरेथी लब्धी उत्पन्न थयेली होय तेने कर्म आसीवीख कहीए.

अत्रशंकाः—त्यारे कोइ कहे के मन पर्यवादि पण लब्धी छे तो तेने आसीवीख केम कहेवाय?

तत्रोतरः—आंहींयां मन पर्यवादीक लब्धी समजवी नहि पण जे लब्धीथी मनुष्य प्रमुखनी घात

टे एक आकाश प्रदेश उपर धर्मास्ती कायनो एक प्रदेस अधर्मास्ति कायनो एक प्रदेश रह्या छे. एम अन्यो अन्य तणे द्रव्य रह्या छे. शास्त्र भ० स० २५ उ० २ मां दीवानुं द्रष्टांत दीधुं छे. जेम एक दीवो एक मकानमां समाय तेम बे त्रण चार दीवा समाय ए बधा दीवानो प्रकाश खीर नीरनी पेरे भेगो करे छे पण पोत पोताना स्वभावे प्रकाश जुदो छे. बीजुं द्रष्टांत दुधमां साकर रंग वीकास जेर सर्व समाया छे. पण सर्वनो गुण न्यारो छे, ते न्याये त्रण द्रव्य सत्ताये न्यारा समजवा. तेमज एक प्रदेशमां पुद्गल सुखे समाय केमके एक प्रमाणु जावत् सुक्ष्म अनंत प्रदेशी खंध एक आकाश प्रदेशे सुखेथी समाय छे. कारण के आकाशनो वीकास गुण छे. शास्त्र नंदी सुत्रमां कहयुं छे के सर्वथी मोटो काल तेथी नानो खेत्र तेथी नानो द्रव्य अने तेथी नानो भाव ते अपेक्षाये समजवुं.

प्रश्नोत्तर १७.

प्रश्नः—भगवतीजी सुत्रना शतक १४ मा ने उदेशा ९ मा मध्ये कहयुं छे के माशपर्याय वाळो

प्रश्नोत्तर ७४.

प्रश्नः—पनवणा सुत्रमां तथा भगवतीजी सुत्रना स० ८ उ० ६ मा कह्युं छे के उदारीक शरीर आश्री पांच क्रीयालागे अने वैक्रीयशरीर आश्री चार क्रीया लागे तो सुक्ष्म जीवने उदारीक शरीर छे तो ते मार्या मरता नथी. तो ते जविोनी पांच क्रीया शी रीते लागे?

उत्तरः—सुक्ष्मजीवनी पांच क्रीया अवृत आश्री लागे ते राग द्वेषना प्रणाम रुप धाराथी. पांचे क्रीया लागे छे. तत्वार्थ केवलीगम्य.

प्रश्नोत्तर ७५.

प्रश्नः—बावीस परीसा क्याक्या कर्मने उदे छे ?

उत्तरः—बावीसपरीसा चार कर्मने उदे छे ते कर्म नीचेप्रमाणे; ज्ञाना वर्णीने उदे, वेदनीने उदे, मोहनीने उदे, अंतराय ने उदे, ए चार कर्मने उदे छे. तेमां एकेका कर्मने उदे क्याक्या परीसा छे?

प्रश्नोत्तर ९८.

प्रश्नः—अवधी ज्ञानवालो आगला तथा पाछला केटला कालनी वात करे ?

उत्तरः—असंख्यात कालनी वात करे. शास्त्र नंदी सुत्रनी तथा भगवती शतक १५ पंदरमानी सुमंगल मुनीवत्.

प्रश्नोत्तर ९९.

प्रश्नः—भगवतीजी सुत्रना स० १६ उ० ६ ठा मध्ये जीनराज देवे पांच प्रकारना स्वप्न दरशन परुप्या छे. तो ते स्वप्नामां ज जे पुद्गलो देखवामां आवे छे ते त्रण प्रकारना पुद्गलो मांहेला कइ जातनां पुद्गलो समजवा ?

उत्तरः—मन प्रयाये करी उदारीक पुद्गलनां प्रेरकपणाथी स्वप्नामां (विस्सा) पुद्गलनो भास थाय छे केमके ते पुद्गलनो भास तुरत पाछो वीखराइ जाय छे माटे (विस्सा) पुद्गलनो एहवो स्व-

उत्तरः—ज्ञाननी उत्कृष्टी आराधनावालाने दर्शन अने चारित्रनी मझम अने उत्कृष्टी आराधना होय अने उत्कृष्टी दर्शन आराधनावालाने ज्ञान अने चारित्रनी उत्कृष्टी तथा मझम आराधना होय अ-ने चरित्रनी उत्कृष्टी आराधनावालाने दरशननी आराधना उत्कृष्टी नीयमाये होय अने ज्ञाननी आरा धना त्रणे लाभे छे.

अत्रशंकाः—चारीत्र तो उत्कृष्टु अभवी पाले छे तो तेने दर्शन केम न लाभे केमके केवल चरी-या एम केहेल छे तो दर्शन उपरना न्याये लाभवुं जोइये.

तत्रोत्तरः—आ बोल भवीआश्रीने छे कारण के समवायंग सूत्रना २६ मा समवायंगे अभवीने मोहनी कर्मनी २६ प्रक्रति लाभे छे अने मुळथीज बे प्रक्रतिनी नास्तीज छे ते समकीत मोहनी तथा मीश्र मोहनी ए बे प्रक्रती न ज होय माटे ते न्याये अभवीने दर्शण नज लाभे.

शंकाः—उत्कृष्टु चारीत्र तो केवली महाराजने ज होय तो तेने उत्कृष्टु चारीत्र तथा

छे) ते न्याये सर्व प्रदेसे आहार करी पछे उपजे छे इत्यर्थ.

प्रश्नोत्तर १०१.

प्रश्नः—वीभंग ज्ञान अने अवधी ज्ञानमां सुं फेर समजवो? कारण के विभंग ज्ञान वाला मनुष्य अवलुं देखे छे, भगवतीजीनी शाखे, तो देवादीकमां अवलुं शुं न्याये देखे ?

उत्तरः—जेम मनुष्य अवलुं सरदहे छे तेम ज भगवती शतक अढार उदेशा पांचमा मध्ये कह्युं छे के माइ मीथ्या द्रष्टी देवता वीभंग वाला देव देविओनां रुप बनावे खरो पण सरदहवामां फेर समजे जेमके आ रुप बधा पुरुषनां थयां पण स्त्री सहीत छे एवुं यथातथ्य न सरदहे कारणके पर्यायमां हानी छे तेथी कर्ता पोते छे अने ज्ञेयमां पर्यायनी हानीने लीधे वीभ्रम माने छे.

प्रश्नोत्तर १०२.

प्रश्नः—बारे देवलोकादीकना देवता मनमान्यु वैक्रीय रुप मन इछीत करी शके के न करी शके?

एक वखते बंधाती होय तो एक वखते पांचे ज्ञाननां आवरण खुलां थवां जोइए तेमज जुदा बांधवानुं कारण चाल्युं समजातुं नथी तो एक बीजा ज्ञान शुं कर्मखसवाथी उघाडा थाय?

उत्तरः—ज्ञानावरणी करम बांधवानां कारण छ कहेलछे तेथी ज्ञाना वरणी कर्म बंधाय छे पण तेमां भिन्नता एम संभवे छे के भगवतीजी सुत्रना शतक ९ माने उदेशा ३१ मा मध्ये कह्युं छे के मती ज्ञान नां क्षयोपशम थये थके मति ज्ञान प्रगट थाय छे तेमज जावत् केवळ ज्ञानावरणी क्षय थये छते केवळ ज्ञान प्रगट थाय छे एवी रीते जे जे ज्ञाननुं आवरण बांधेलुं खशे एटले ते ज्ञान प्रगट थाय छे. पण एक वखते बंधाता नथी. दृष्टांत के अवधीज्ञानीनां अवर्णावाद बोले तो अवधीनुं आवरण थाय तेम जावत् केवळनुं समजवुं. पण बांधवानां कारण तो जे छ कहेल छे तेज समजवां. पण भीन भांगा समजवा. एक एक बोल संघाते छछ भागोथी सर्व ज्ञाननुं आवरण थाय. अने ते आवरण टलवाथी केहा मोर ज्ञान प्रगट थाय.

होय तो पण ते कुंभीमां बीजो नारकी उपजी शके छे.

प्रश्नोत्तर १०४.

प्रश्नः—अढार पापनुं वेरमण तथा पाच सुमती तीन गुप्ती वीगेरे धर्म कर्त्तव्य भगवते भ० श० २० उ० २ मां धर्मास्ति काय कहीने बोलाव्या ते केम?

उत्तरः—ए बोल धर्मने सहचारी सब्द रुपे छे माटे धर्मास्तिकाय कहेल छे तेमज तेनो प्रातिपक्षी अ-धर्मास्तीकाय समजवा. अधर्मास्तिकाय अधर्मसहचारी शब्द रुपे समजवो.

प्रश्नोत्तर १०५.

प्रश्नः—प्रत्येक माश एटले एक वर्षने अगीयार महिना सुधीनो मनुष्यगर्भज मरीने क्या देव लोकमां जाय?

उत्तरः—पेहेला देवलोक सुधी जाय साख गमामां छे.

कारण के त्यां छमांहेल्ल एके कारण नथी कारण के त्यां मोहनीनो च्छे नथी तो तेनो शुं अर्थ समजवो?

उत्तरः—छद नाम छे; अस्थ नाम आछादान छे, जेम वादळानां जोरथी सूर्य आछादानमां छे तेम छद्मस्थने केवळज्ञानावराणित केवळदर्शणावर्णीनो आछादान छे माटे छद्मस्थ कहिये इत्यर्थ.

प्रश्नोत्तर ८०.

प्रश्नः—इशान इंद्रना वरुण नामे माहाराजानी अग्र महिषी केटली ?

उत्तरः—नव अग्र महिषी शाखठाणं ९ मे अने भ० श० १० उ० ५ मां चार अग्र महिषी कही ते केम ?

उत्तरः—ते पाठ आचार्यना मतांतरफेर समजाय छे तो तत्वार्थ केवली गम्य.

प्रश्नोत्तर ८१.

प्रश्नोत्तर १०९.

प्रश्नः—प्रत्येक वरशनो मनुष्य गर्भज मरी कइ नर्कमां जाय?

उत्तरः—सातमी नर्क सुधी जाय. शाख गमानी छे.

प्रश्नोत्तर ११०.

प्रश्नः—आंगुलना असंख्यातमा भागनी अवघेणा वाळो तिर्यंच मरीने केटली नर्क सुधी जाय?

उत्तरः—सातमी नर्क सुधी जाय; शाख भगवतीजी सुत्रना शतक २४ ना गमानी छे.

प्रश्नोत्तर १११.

प्रश्नः—पृथ्वी कायमां भगवंते समे समे असंख्याता जीव उत्पन्न थवानुं कहेल छे छतां संख्याता जीव पण समे समे उपजे कह्यु ते शुं अपेक्षाये समजवुं?

उत्तरः—थोडी स्थितिवाला असंख्याता पृथ्वी काइया उपजे अने २२००० वर्षनी स्थिती-

श० १२. उ० पमांनी अढारमुं पाप छे मीथ्यात्व मोहनी कर्म उदे भोगवे छे अने द्रष्टी ते जीव छे ते मीथ्यात्व मोहनीने उदे खोटी सदहणा राखे ते क्षयोपशम भावे. शाख अनुयोगद्वारनी. द्रष्टांत. कुदेवने शेवे पुजे ते मीथ्यात्वनो उदे छे. अने कुदेवने शेवता रुची उपजे अने तेहने साचा सरदहे ते मीथ्यातद्रष्टी क्षयोपसम भावमां छे. तेमज मोहनी समजवी.

प्रश्नोत्तर ८३.

प्रश्नः—भगवती सूत्रना शतक १२ उ० ५ मा मध्ये पुद्गलने रुपी तथा अरुपी पण कह्या तो पुद्गल रुपीज छे पण अरुपी नथी तो अरुपी कहेवानुं कारण शुं?

उत्तरः—ए बोल ओधीक पद पुरणीनो संभवे छे बीजा मते एम कहेल छे के सुक्ष्म पुद्गल नजरे नथी आवता माटे अरुपी केहेवा अने नजर आवे छे ते पुद्गल रुपी समजवा.

प्रश्नोत्तर ८४.

उत्तरः—तीर्थंचने छ संघेण छे तो तंडुल मछने वज्रऋषभ नाराच संघेण लाभे. शास्त्र भ० श० २४ गमात्ती.

प्रश्नोत्तर ११४.

प्रश्नः—निर्ग्रंथ नियंठा पणाना सर्व संसार मध्ये एक जीव केटला भव करे?

उत्तरः—उत्कृष्टा त्रण भव करे पछे त्रीजे भवे अवश्य मोक्ष जाय, शास्त्र भगवती शतक. २५. उदेशा ६ तेमज सर्व संसारमां आकरवा उत्कृष्टी पांचवार करी मोक्ष जाय कह्युं छे.

प्रश्नोत्तर ११५.

प्रश्नः—एकभवमां अगीयारमे गुणठाणेथी एक जीव पडीने फरी पाछो अगीयारमे गुणठाणे जइने पाछो पडे के नाहि?

उत्तरः—पडे खरो पण घणा भव करवा वालो पडे पण तेज भवे मोक्ष जवावालो एक वखत पडी

गुल नीचु छे अने राहुना विमान पांच वर्णी छे.

प्रश्नोत्तर ८६.

प्रश्नः—सूर्यना विमानने कियो ग्रह आडो आववाथी सुर्य ग्रहण थाय ?

उत्तरः—केतु नामनो ग्रह आडो आवे छे ते कारणथी सूर्य ग्रहण थाय छे.

प्रश्नोत्तर ८७.

प्रश्नः—चक्रवर्तिनी आगत ८१ बोलनी कही तेमां पन्नर परमाधामी नें त्रण किलमखी वरज्या तेनुं शुं कारण?

उत्तरः—भगवतीजी सुत्रनाशतक १२ मा ने उदेशा ९ मा मध्ये कहयुं के चक्रवार्ति सर्व देवनां नीकळ्या केटलाक चक्रवर्ति थाय ने केटलाक न थाय एम कहेल छे तो ते अपेक्षाये. पन्दर परमाधामी तथा किलखमी महा मीथ्याती जाणी वर्ज्या संभवे छे कारण के एवा उत्तम पुरुष तेमां

प्रश्नः—भगवतीजी सुत्रना स० २५ उ० ६–७ मा मध्ये संज्या अने नीयंठा कहेल छे अने ते शब्दनो अर्थ संज्या नाम साधू अने नीयंठा नाम साधू तेमज बेयनो भावार्थ पण एकज छे तो बंने जुदा परुपवानुं कारण शुं समजवुं ?

उत्तरः—दोयनो गुण न्यारो न्यारो छे ते संज्यानो गुण चारीत्रनी क्रिया करवा रुप छे अने नीयंठानो गुण जेम जेम क्षयोपसम थतो जाय तेम तेम नीयंठाना गुणे चडतो जाय. तो नीयंठानो गुण क्षयोपसमनां घरनो छे जेमके समायक चारीत्र तो एकज छे पण ते चारीत्रवाला जीवने नीयंठा च्यार लाभे छे तो एक चारीत्रमां चार नीयंठानो क्षयोपसम थयो ए अपेक्षाये बनेना गुण जूदा समजवा.

प्रश्नोत्तर ११८.

प्रश्नः—हाल वर्तमान काले मुनीराजने केटला नियंठा लाभे?

उत्तरः—त्रण नियंठा लाभे. ते बकुश, पडी सेवणा, कषाय कुशील. ए त्रण नियंठा लाभे.

नरक जघन्य हजार वर्षनी स्थीतीये नर देव उपजे ने त्यांथी नीकली पाछा चक्रवृती थाय तो जघन्य आंतरु शी रीते मिले?

उत्तरः—नरदेव आदी ६३ सलाखा पूरुष छे ते आगली गतीना स्थाननुं संपुर्ण आवखुं भोगवीनेज थाय कारण के जघन्य के मझम आवखुं उतम पुरुष भोगवेज नहीं अने पेली नरके स्थीती एक सागरनी छे ते एक सागर स्थीती पेली नारके भोगवी चक्रवृती थाय पण चक्र रत्न उत्पन न थाय त्यां सुधी मंडलीक राजा कहेवाय पछे चक्र रत्न उत्पन थाय एटले चक्रवृती कहेवाय ते आश्री एक सागर झाझेरुं जघन्य अंतरु जाणवुं.

प्रश्नोत्तर ९०.

प्रश्नः—उरपर समुर्छिमनी उत्कृष्टी अवघेणां प्रत्येक जोजननी कही छे तो आशेळीयो उरपर समुर्छिमछे ने बार जोजननी काया करे छे एम पन्नवणा पदपेहेलामां कहेल छे तो तेनुं केम?

घन्य एक भव करे अने उत्कृष्टा त्रण भव करे कह्युं तो तेनुं आंतरुं अर्द्ध पुदगलनुं कीधुं ते शी रीते समजवुं?

उत्तरः—आंतरु पडवाइ आश्री छे,

अत्र शंकाः—त्यारे पडवाइ जीव पडीने पाछो अवस्य त्रीजे भवे मोक्ष जवो जोइए तो आंतरुं शी रीते मीले?

तत्रोत्तरः—त्रण भव कीधा ते सर्व संसार आश्री समजवा. सर्व संसारमां एक जीव सुक्ष्म संपराय चारित्रपणे भव करे तो उत्कृष्टा त्रण भव करे अने त्रीजे भवे अवस्य मोक्ष जाय,पछी पडे नही. तेमज आकर्षा पण सर्व संसारमां जघन्य २ अने उत्कृष्टी ९ कहेल छे एकजीव आश्री. तो ते सर्व संसारमां एकजीव सुक्ष्म संप्राय चारित्र पणाना त्रण भव करे पण पडवाइ आश्री आंतरू जाणवु पण अपड-वाइ आश्री आंतरू समजवुं नही.

उत्तरः—समकित बीजी गतीमां उपजे शास्त्र भ० श० १३ उ० १ मां गौतम स्वामीये पुछ्युं के अहो महाराज! रत्न प्रभाने विषे समकीती उपजे मिथ्याती उपजे शमा मीथ्याती उपजे एवी रीते पुछ्युं त्यारे भगवते शम किती तथा मिथ्यातीनी हा पाडी ने शमा मिथ्यातीनी ना पाडी अने नीकलवा आश्री तेज प्रमाणे कह्युं अने आविराहिया आश्री शमा मिथ्यात द्रष्टी कही तो ते आश्री त्यां सम-कित उत्पन्न थाय छे तेवीज रीते छठी नर्क सुधी पूछा करी तेमां रत्नप्रभा पृथ्वीनी परे हा पाडी अने सातमी नर्के एक मीथ्याती उपजे ने मिथ्याती एक नीकले पण आविरहिया एटले तर थाला आश्री शमाकिती मि-थ्याती शमा मिथ्याती ए त्रणे बोलनी हा पाडी अने त्रणे बोलवाला जीवो त्यां छे तो ते आश्री नार-की देवतामां समकित उत्पन्न थाय छे.

प्रश्नोत्तर १३.

प्रश्नः—देवता नारकीमां समकीती जीव होय ते मीथ्यातपणुं पामे के नहि तेमज मिथ्याती जी

प्रश्नोत्तर १२२.

प्रश्नः—चौद पुर्व संपुर्ण भणवावालो मरीने क्यां जाय ?

उत्तरः—जघन्य लंतक देवलोके जाय अने उतकृष्टो सर्वार्थ सिध वैमानमां जाय अथवा मोक्षमां पण जाय.

अत्र शंकाः—त्यारे कोइ कहे के भगवतीजी सुत्र मध्ये शतक १८ मा उदेशा बीजामां कह्युं के कार्तीक सेठनो जीव चौद पुर्व भणी पहेले देवलोक गयो ते केम ?

तत्रोत्तरः—भ० श० २५ उ० ७ मां कह्युं छे के समायक चारित्र तथा छेदोपस्थापनीक चारीत्रवालो भणे तो जघन्य आठ प्रवचन माता अने उतकृष्टों चउद पुरव पूरा भणें अने ते मरीने जघन्य पहेले देवलोके अने उतकृष्टा अनुतर वीमाने जाय; तो कारतक सेठनो जीव पहेले देवलोक गयो ते कांइ सास्त्र विरुध नथी. वृध परंपराए कहे छे के विस्मति पुर्वनी होवाथी पेले देवलोके

वानी नथी तेमज वीभंगनुं अवधी अनें अवधीनो वीभंग थाय ते बन्ने द्रव्यार्थे एकज छे एटले अवठीए ने अपडवाइ ते आश्री कह्युं छे पण समकीत मीथ्यात न पामवारूप देवनारकीमां नथी ते तो बोल खेत्र आश्री छे अने पनवणा पद ३४ मांनो न्याय जोतां नीचे प्रमाणे संभेव छे. नारकी वेमानीकना प्रणाम नरक देवमां रह्या थका प्रसस्थ तथा अप्रसस्थ कह्या छे वली गौतम स्वामीये पुछ्युंके नरक देवमां रह्यो थको जीव समकीत सनमुख थाय तथा मीथ्यातसन्मुख मीश्र द्दष्टी सनमुख थाय? त्यारे भगवंते त्रणे द्रष्टीनी हा पाडी छे एटले समकीतमांथी मीथ्याती थाय अने मीथ्या तमांथी समकीत थाय छे ते आश्री नारकी देवतामां समजवुं.

प्रश्नोत्तर ९९.

प्रश्नः—भगवती शतक १३ उ० १ मां एम कह्युं छे के पुरुष मरी नर्कमां नउपजे तथा आ स्त्री मरी पण न उपजे ने एक नपुंसक मरी नर्कमां उपजे तो स्त्री पुरुषनी गती नर्कनी छे तो ना पाडवानुं

रे तो नीनव कहेवाय तेनुं केम ?

तत्रोत्तरः—भगवतीजीमां कह्युं तेनुं कारण के एक समे बे क्रतुती आश्री जीव एक समे जाणे नाहि माटे बेनी ना पाडी छें पण कर्मना बंध आश्री ना नथी. साख सूत्र भगवती सतक छवीस उदेसा १ मां कह्युं छे के केवल ज्ञानमां वेदनी कर्मना बंध आश्री तीजा भांगानी ना कही ते कारणथी विषेश पुर्वनुं बांधेलुं आयुष भोगवता नवा सात आठ कर्म बांधे छे ते न्याये जोतां एक समे बे कर्म क्रीया क्रतव संभवे छे.

प्रश्नोत्तर १२४.

प्रश्नः—मातपीतानी आज्ञामां व्रतें तथा बीजा वीनयादीकनां काम करे तो मरी क्यां उत्पन थाय ?

उत्तरः—देवतामां जाय पण वाणव्यंतर देवमां १२००० हजार वर्षनी स्थीतीए उपजे. साख उवाइ तथा भ० स० ४१ उ. १ लामां कहेल छे.

पोतानी सेज्यामांथी उठताज नथी. अने पोत पोतानी सेज्यामांज रहे छे तो एक सेज्यामां असंख्याता देवता केम रही शके? ते हीशावे सर्व देवनी सेज्या जुदी जाणवी तथा भ० स० १३ उ० २ मां कह्युं छे के एक विमानमां एक समे ज० १-२-३ उ० असंख्याता देवता उपजे छे तो असंख्याता देवता एक समे एक सेज्यामां केम समाय ने केम उपजी सके? ए न्याये तो प्रत्येक २ देवता दिठ सेज्या न्यारी समजवी. संख्याता जोजनना विमानमां संख्याती सेज्या, असंख्याता जोजनना विमानमां असंख्याती सेज्या समजवी.

प्रश्नोत्तर ९६.

प्रश्नः—धर्मास्ती अधर्मास्ती आकास्ति ए द्रव्य मांहोमांहे भेदाय के नही ?

उत्तरः—भ० स० १३ माने उदेसा ९ मामां कह्युं छे के धर्मास्ती अधर्मास्ती आकास्ति ए त्रण द्रव्य लोक खीर नीरनी पेठे भेगा रहे छे. पण पोत पोताना स्वभावे जूदा छे. पण भेदाता नथी. मा

अने सात गुणा करे तेने (जाया) गती कहीए अने नवगुणा करे तेने (वेगा) गती कहीए. ए प्रमाणे ओपमा प्रमाणे गती कहेल छे.

अत्रशंकाः—तिर्थंकरना जन्मादी वखते बारमा देवलोकना देवता थोडा कालमां असंख्याती योजन छेटु छतां आव्या तेनुं केम ?

तत्रोत्तरः—आंहिया सक्रेंद्र चमरेंद्र वज्रवत् समजवुं पण आहीयां चारगती कही तेतो एक देवलोकना वैमान केवडा मोटा छे तथा त्रण लोकमापवा वास्ते तेनो न्याय आपवामाटे उपरनी चार गती ओपमा प्रमाणे जीनराज देवे बतावी छे पण शीघ्रहगतीनी चाल तो मन इच्छीत प्रमाणे छे, माटे बारमा देवलोकना देवांने त्रीछा लोके आवतां बादक नथी. शाख, सुत्र भगवतजि सुत्रनी.

प्रश्नोत्तर १२७.

प्रश्नः—नो श्वाशोश्वास सिद्ध विना कोने होय ?

वाणव्यंतर स्थाननी तेयं लेश्याने अतीक्रमे एम यावत् बारमास वाळो सर्वार्थ सीधना देवतानी तेयं लेश्याने अतीक्रमे तो त्रीजा देवलोकथी तेजु लेश्या नथी तो शी रीते अतीक्रमे?

उत्तरः—तेयंलेश्या एटले तेजु लेश्या समजवानी नथी पण तेनुं सुख वैभव समजवुं एटले एक मासनी पर्यायवाळो मुनी वाणव्यंतरना देव जे सुख अनुभवे तेथी विशेष सुख अनुभवे एम यावत् अनुतर विमान सुधी समजवुं.

अत्र शंकाः—मास पर्यायवाळो वाणव्यंतरना स्थानने व्यतीक्रमे तो पुंडरीक अणगार तथा गज-सूकूमाळ तथा धन्नो अणगार विगेरे मोक्ष तथा अनुतर वैमानमां अल्प चारीत्र छे तो केम गया?

तत्रोत्तरः—पूर्वोक्त बोल फक्त चारीत्र आश्री छे तप आश्री नथी अने पुंडरीक विगेरे उत्कृष्टो तपकर्यो तेथी अनुत्तर वैमानमां तथा मोक्ष गया. अने एकलुं चारीत्र पाळे ने तपस्या न करे तो पुर्वोक्त प्रमाणे सुखने अनुभवे.

उत्तरः—१३ डंडक देवताना तथा मनुष्य तीर्यंच एवं १५ डंडकना जीवो बांधे छे.

अत्र शंकाः—नारकी तथा पांच स्थावर वीगलेंद्री न बांधे तेनुं शुं कारण?

तत्रोत्तरः—तेने छ कारणनो अभाव छे माटे न बांधे.

शंकाः—त्यारे कोइ कहे के ते जीवो छ कर्मज बांधे.

तेनो उत्तरः—ते जीवो समे समे सात आठ कर्म बांधे छे पण ठाणांगजी सुत्रमां कर्म बांधवाना चार कारण कहेला छे तो ते मांहेला चार कारण मांहेला (एक कर्म कारण) ते जीवोने मुख्यतापणे छे तेथी सात आठ कर्म बांधे छे. पण (नाण पडणी यादीक) छ कारणनो ते जीवोने अभाव छे. साख भगवतीजी सुत्रनी.

प्रश्नोत्तर १३०.

प्रश्नः—ज्ञातांजी सुत्रनां अध्ययन पेहलामां मेघकुमारनो जीव हाथीना भवमां ससलो बचावी

भावे छे ते कारणे स्वप्नामां (विस्सा) पुद्गल ज जोवामां आवे छे; इत्यर्थ.

प्रश्नोत्तर १००.

प्रश्नः—भगवतीजी सुत्रना स० १७ उ० ६ ठा मध्ये कहेल छे के आंहीथी एकंद्री जीव नीकली देवलोकमां पहेलो उत्पन्न थाय अने पछे आहार करे अने पहेलो आहार करे अने पछे उपजे एम कहयुं तेनुं केम?

उत्तरः—एकंद्री जीव मरणांतिक समुद्घात देश थकी करतो ते जीव पेहेला पुद्गल ग्रहण करीने पछे उपजे अने सर्वथा समुद्घात करे तो पेहेलो उपजे अने पछे पुद्गल ग्रहण करे.

अत्र शंकाः—भगवतीजी स० १ उ० ७ मा मध्ये कहयुं छे के (सव्वणं सव्वं अहारेइ) इती वचनात्, तो शी रीते थोडा प्रदेश आहार करे.?

तत्रोत्तरः—ते प्रदेश सर्व आहार करे छे (घ्यास वीजलीनी बत्ती घणे दुरथी बाफ खेंची ले-

या एम कहेल छे; इत्यर्थ.

प्रश्नोत्तर १३१.

प्रश्नः—ज्ञाताजी सुत्रना अध्ययन पहेलामां मेघकुमारना जीवे हाथीना भवमां ससलानी दयाथी समतरूपणनी प्राप्ती करी कहे छे ते केम ?

उत्तरः—समकीती मनुष्य अने तीर्यंच देवगतीमांज जवा जोइए एम भगवतीजी स० ३० उ० १ मध्ये कहेल छे छतां आंही मनुष्यमां मेघकुमार पणे उपना तेनुं कारण के हाथीना भवमां ससलो बचाव्यो तेथी समकित आववाना तमाम कारणो प्रगट थइ गया छे पण समकीत प्राप्त थयुं नथी तेनो पाठ (अपडिलद्ध सम्म चरयण लभेणं) तेनो अर्थः—नथी लाध्यो समकित रत्ननो लाभ तो पण तुमे तीर्यंच भवे समभावे परीसह सहन कर्या छे तो सुं कहेवो आ मनुष्य भवादीक सर्व जोग पामी कीं कायर भवाति अरथात् संयमने विषे कायरपणुं न करवुं. इत्यर्थ.

उत्तरः—समकीती जीव मन इछित रुप बनावी सके पण मीथ्था द्रष्टी मनमान्यु रुप करवा समर्थ नही. शास्त्र. भगवतीजी सुत्र. स० १८. उ० ५ मा मध्ये कहेल छे.

प्रश्नोत्तर १०३.

प्रश्नः—नारकीनी कुंभीमां एक जीव आवी उत्पन्न थयो छे अने ते नारकी कुंभी मांहेथी नीकली गयो त्यार पछे पोतानी हयातीमां तेज कुंभीमां बीजो जीव आवी उपजे के नही ?

उत्तरः—नारकी कुंभीमां उपजी बाहेर नीकल्यो अने हजी जीवे छे. पण ते कुंभीमां बीजो नारकी उपजे केमके नारकीने कुंभीनुं धणीपणुं नथी. सास्त्र भ० स० १८ उ० ६ मां नारकीने बे उपधी कही तथा बे परिग्रह कीधा छे ते १ शरीर ने २ कर्म ए बे कीधा छे पण बाह्य उपगरण तेने नथी अने देवतादिकने त्रण उपधी तथा त्रण परीग्रह कीधा छे ते शरीर कर्म बाह्य उपगरण त्रण कीधा छे. माटे देवताने सेज्यानुं धणीपणुं छे. पण नारकीने कुंभीनुं धणीपणुं नथी. माटे नारकी जीवतो

उत्तरः—अनुतरवाशी देवता सर्व समदृष्टी छे अने वीपाक उदयमां पुरुष वेद वेदे छे पण पु-
रवे कोइये मनुष्य भवमां माया कपट करी स्त्री वेद उपराज्युं छे ते प्रदेश उदयमां भोगवे छे माटे दे-
वतानुं आउखुं पुरुं थये थके स्त्री वेद जे प्रदेश उदयमां हतो ते विपाक उदयमां आव्यो माटे त्यांथी
चवी अहीं मनुष्य भवमांज स्त्रीपणे उपजे छे पण अनुतरवाशी देवमां स्त्री वेद बांधवानुं कारण जे
माया कपट छे ते त्यां नथी अने स्त्री वेद मीथ्यात्व भावमां बांधे छे ते भाव पण त्यां नथी, माटे अहीं म
नुष्य भवमां जे स्त्री वेद बांधेलुं छे तेज जाणवुं. शास्त्र ज्ञाता अध्ययन आठमे मलीनाथ भगवानने
अधिकारे महाबल मुनिए मायानुं स्थानक सेवी स्त्री वेद बांध्यो अने त्यांथी काल करी अनुतर-
वाशी देव थया तो त्यां पुरुष वेदनो विपाक उदय हतो पण स्त्री वेदनो प्रदेश उदय हतो कारण
जे स्त्री वेदनो आबाधो काल दोढ हजार वर्षनो छे पछी अवश्य उदय आवे
माटे दोढ हजार वर्ष पछी स्त्री वेदनो उदय थयो पण पुरुष वेदनो वीपाक

प्रश्नोत्तर १०६.

प्रश्नः—प्रत्येक वरश एटले बे वरशथी मांडी ने साढा आठ वर्ष सुधीनो मनुष्य गर्भज मरी कया देवलोक सुधी जाय ?

उत्तरः—१२ मा देवलोक सुधी जाय छे. शास्त्र गमानी छे.

प्रश्नोत्तर १०७.

प्रश्नः—नव वरश उपरांतनो मनूष्य मरी कया देवलोक सुधी जाय?

उत्तरः—अनुत्तर विमान सुधी अथवा मोक्ष जाय. शास्त्र गमानी छे.

प्रश्नोत्तर १०८.

प्रश्नः—प्रत्येक माशनो मनुष्यगर्भज मरी कइ नर्कमां जाय ?

उत्तरः—पहेली नर्कें जाय. शास्त्र गमानी छे.

प्रश्नोत्तर १३५.

प्रश्नः—समकीतनो नाश देव गुरु धर्मनी श्रद्धा जवाथी थाय के बीजा कारणथी ?

उत्तरः—देवगुरुधर्मनी श्रद्धा जवाथी पण नाश थाय तथा उत्कृष्टी मोहनीने उदये पण समकीत नाश थाय तथा तीव्रकषायना उदयेथी नाश थाय.

अत्र शंकाः—ज्ञाता अध्ययन आठमामां महाबल मुनीने कया देवगुरुनी श्रद्धा गइ?

तत्रोतरः—माया सेववाथी मीथ्यात्व मोहनीनो उदे थयो तथा भावे मीथ्यात्वे आव्यो ते कारणथी स्त्री वेदनो बंध पडयो. इत्यर्थं.

प्रश्नोत्तर १३६.

प्रश्नः—श्री कृश्न महाराज घातकीखंडे जतां गंगा नदी आडी आवी नही. अने पाछा आवतां गंगा नदी आडी आवी तेनुं शुं कारण?

वाला संख्याता उपजे छे. ते अपेक्षाये कहेल छे साख पन्नवणाजी सुत्रनी तथा भगवती स० २४ उ० १२ मानी.

प्रश्नोत्तर ११२.

प्रश्नः—पांच लेश्या एकली कोनामां लाभे?

उत्तरः—संज्ञी तीर्यचनो प्रजासो जघन्य अंतर मुहुर्तनी स्थीतिवाळो मरीने त्रीजे चोथे पांचमे देवलोके उपजे ते जीवने पांच लेश्या लाभे. शास्त्र भगवतीजी सुत्रना शतक २४ मामां गमाना अधीकारे जाणवी.

प्रश्नोत्तर ११३.

प्रश्नः—वज्रऋषभनाराच संघेणनो धणी मरी सातमी नरके जाय तो तंदुल मंछ मरी सातमी नरके जाय छे तो तेने कयुं संघेण कहेवुं?

चीत्र आ पछीना पानामां जुओ).

प्रश्नोत्तर १३७.

प्रश्नः—पारसनाथजीनी आठ साध्वी वीराधीक छतां बीजे देवलोके केम गइ?

उत्तरः—पारसनाथजीनी साध्वी देश थकी वीराधीक छे पण तेने बकुश नीयंठो संभवे, तेनो लक्षण शुशरखा करवानो छे ते कारणे सरव थकी विराधीक नथी कारण के एका अवतारी छे माटे देश थकी विराधीक बीजे देवलोके उपजे छे तेमां कांइ हरकत नथी. शास्त्र ज्ञाता अध्ययन १६ मे सुकमालीका बीजे देवलोके गइ ते न्याये.

प्रश्नोत्तर १३८.

प्रश्नः—भगवती पहेले शतक उ० २ मध्ये कह्यो के वीराधिक संजमी उतकृष्टो पेला देवलोके जाय ने ज्ञाता सुत्रना १६ अध्ययनमां सुकमालीका साधवी वीराधिक छतां इशान देवलोके गइ ते केम ?

बीजी वखत दशमे गुणठाणेथी पाधरों बारमें गुणठाणे जइ तेरमें केवल पामे पण पांच आकरखा-वालो प्राणी एक भवमां बेवार उपसम श्रेणी करे साख सुत्र भगवती शतक. २५. उदेशा ६ ठानी.

प्रश्नोत्तर ११६.

प्रश्नः—केटलाक कहे छे के केवलीनुं साहारण थाय तेनुं केम ?

उत्तरः—केवळीनुं साहारण न थाय. केमके सात बोलनुं साहारण थतुं नथी तेमां कहेल छे के अवेदीनुं तथा अप्रमादीनुं साहारण न थाय तो केवळी अवेदी छे माटे केवळीनुं साहारण न थाय ने भगवतीजीसुत्रना शतक २५ मा ने उदेशा ६ मध्ये कहयुं छे के साहारण पडुचनियंठा केटला लाभे टले साहारण आश्रीने सनातक कहेल छे अशोचावत् समजवुं. छद्मस्थनुं साहारण थाय ने पछी त्यां केवली थाय ते अपक्षाये कहयुं छे पण केवळी महाराजनुं साहारण न समजवुं.

प्रश्नोत्तर ११७.

णीतः—१० हाथे एक वशो, वीशवसे एक नीयत;१००नीयते एक हळवा एवा ५०० हळवा जमीन खुल्ली राखी छे तेमज छठु वृत पांचमा वृत भेगुं समाववा संभवे छे.

अत्र शंकाः—कदाच कोइ एम कहे के उंची नीची त्रीछी दीशानुं मान कहेल नथी माटे छठुं वृत न गणवुं.

तत्रोतरः—छठुं वृत तमो पांचमा वृत भेगु न गणो तो पछी छठावृतना अतिचारनी जरुर नथी तेमज उपला वृतनो उचार करेल नथी एक बीजा वृतोमां भले छे माटे ते न्याये आंहीं छठु वृत पांचमावृत भेगुं समाववा संभव छे अने उपर कहया प्रमाणे खेत्र फरवानी मोकल संभवे छे पछी बहु सुत्री कहे ते सत्य.

प्रश्नोत्तर १४१.

प्रश्नः—उपाशक दशांग सुत्रमां आणंद श्रावके सरद ऋतुना धीनी मोकल राखी तो सरद

अत्रशंकाः—कषाय कुशील नियंठा वालो जीव मुल उत्तर गुण अपडीसेवी कह्यो छे. अने बकुस पडीसेवणामां त्रण लेश्या विशुद्ध कहेली छे तो शी रीते मीले ?

तत्रोत्तरः-कषाय कुशीलनीयंठे वर्ततो जीव साधुना सर्वगुणे प्रवर्तता थका पुर्व मोहनी कर्मना उदये कषाय प्रगटी तेथी ते वखते अशुद्ध प्रथमनी त्रण लेश्यामां प्रवर्ते. पण ते नीयंठा वालो उतरगुण-मां दोष लगावे नहीं अने बकुश पडीसेवणा नियंठा वालो जीव मुल उतर गुण दोषने सेवे ते चारित्रमोहनी कर्मने उदये असमर्थपणे उदासी भावे पश्चाताप करतो ते कारणे ते नियंठामां उ-परनी त्रण सुभ लेश्या होय छे, माटे ते न्याये उपर कह्या प्रमाणे नीयंठा त्रण वर्तमान काले लाभे शास्त्र. भ० स० २५. उ० ६

प्रश्नोत्तर ११९.

प्रश्नः—भगवतीजी सुत्रना स० २५ उ० ७ मामां सुक्ष्म संपाय चारीत्रनी प्राप्ती करे ते जीव ज-

तत्रोत्तरः—तो शुं पाप जाणी आप्या? जो पाप जाणी मिथ्यात सेवे तो समकित न जाय अर्थात जाय तो पाप जाणी मिथ्यात सेवतां समकीत न जाय. तो छ आगार राखवानुं कारणज नहीं. ओहो मारा प्रिय बंधु उंडो वीचार करी जोजो.

प्रश्नोत्तर १४३.

प्रश्नः—श्रावकजी संथारो करतां अढार पापस्थान अने चार आहारनां पच्चखांण करे छे तो तेमां ही सर्वथा अढारे पापनां पच्चखांण करेल छे तो तेने साधु कहेवा के नहीं.

उत्तरः—साधु कहेवाय नही; कारण के साधुपणुं पामवुं ते तो छेदोपस्थापनीक चारित्रमां तथा मोहनी कर्मनी प्रकृती उपर छे. जेम जेम प्रकृतीने क्षयोपसमावे तेम तेम गुण श्रेणीए चडे तो संथारो करनार श्रावकने छेदोपस्थापनीक चारीत्र उचरेल नथी तेमज पांचमे गुणस्थाने रहेयां थकां ११ प्रकृतीनो क्षयोपसम छे पण प्रत्याख्याननी चार प्रकृती क्षयोपसमावी नथी माटे छठुं गुणठाणुं

प्रश्नोत्तर १२०.

प्रश्नः—पुलाग नीयंठानी घणा जीव आश्री जघन्य एक समानी स्थिति कीधी ते श्या आश्री?

उत्तरः—एक जीव पुलागपणुं पाम्यो छे ते अंतर मूहुर्तनी स्थिती भोगवता छेवटे एक समो बाकी रह्यो त्यारे बीजो जीव पुलाकपणुं पाम्यो त्यारे पेलानो जीव एक समो भेगो रही बीजे नी-यंठे जातो रहे ते आश्री जघन्य एक समानी स्थीती घणा जीव आश्री कही छे भ० स०२५ उ०७

प्रश्नोत्तर १२१.

प्रश्नः—सामायक चारित्रनी स्थीती तथा गती केटली?

उत्तरः—भगवतीजी शतक २५ उ० ७ मे जघन्य स्थीती एक समो अने उतकृष्ठी क्रोड पुर्व देसे उणी कही छे अने गती जघन्य पेले देवलोक ने उतकृष्टी १२ मा देवलोक सुधी जाय एम कह्युं छे.

१२४ दोष वरजीने श्रावके प्रतिक्रमण करवुं जोइयें.

प्रश्नोत्तर १४५.

प्रश्नः—साधर्यंवृणामां अंधक विश्नुने गौतमादिक १८ पुत्र कहेल छे ते केम ?

उत्तरः—अंत गढमां कहेल छे के अंधकाविश्नुना १०कुमार ते गौतम विष्नुकुमार आदि १० कहेल छे अने विष्नुकुमारना अक्षोभादिक ८ पुत्र कहया ते अंधकाविष्नुना पौत्रा समजवा माटे बंने न्यारा समजवा. पण अंधकाविष्नुना १८ कुमार समजवा नही.

प्रश्नोत्तर १४६.

प्रश्नः—श्रीकृश्न महाराजने ज्ञाताजीमां ३२ हजार स्त्री कही अने अंतगढजीमां १६ हजार कही ते केम ?

उत्तरः—श्रीज्ञातासुत्रमां श्रीकृश्नजीने ३२ हजार स्त्री कही तीहां माहिला एवो पाठ छे तेथी राज्ञ

गया छे. तत्वार्थ केवलीगम्य.

प्रश्नोत्तर १२३.

प्रश्नः—भगवती शतक २६ उदेशा० १ मां कह्युं छे के केवली भगवंत पहेले समे सातावेदनी बांधे ने बीजे समे वेदे ने त्रीजे समें नीर्जरे तो जे समे वेदे ते समे बांधे अथवा निर्जरे अथवा बांधे ते समे वेदे अथवा नीर्जरे अने जे समे नीर्जरे ते समे बांधे अथवा वेदे तेनुं केम ?

उत्तरः—साता वेदनीना बंधना पेला समामां बांधे ते समे वेदे नहि ने निर्जरे पण नहि पण बीजे समे बांधे तेनी संयुक्त पेला समानी साता वेदनी बांधेली वेंदे तेम ज त्रीजे समे नीर्जरे ने बीजानी वेदे एमज अनुक्रमे जतां त्रण बोल संयुक्त बांधे वेदे नीर्जरे एक समामां समजवुं पण प्रथम समय बांधवानो समजवो ने चर्म समय नीर्जरवानो समजवो.

अत्र शंकाः—कोइ कहे के भगवतीजीमां कह्युं छे के एक समयमां बे क्रीया न थाय ने क-

उत्तरः—१ चैत शब्दे तीर्थंकर, २ चैत शब्दे वृक्ष रायपश्रेणी मध्ये, ३ चैत शब्दे माणवकस्थुभ रायपश्रेणीमां, ४ चैत शब्दे वंतराय तंन उवाइजीमां, ५ चैत शब्दे ज्ञान उवाइजीमां ६ चैत शब्दे भगन यतीक उपासमां,७ चैत शब्दे बाग उतराध्ययनमां,८ चैत शब्दे वन उतराध्ययनमां,९ चैत श-ब्दे प्रतिमा प्रश्न व्याकरणमां, १० चैतशब्दे स्थुभ जंबुद्वीप पनंतीमां. वीशेस हेमीनाम मालामां जोवुं.

प्रश्नोत्तर १४९.

प्रश्नः—नाभी राजानी ५२५ धनुष्यनी काया छे तो मरु देवीनी पण तेटलीज होवी जोइये तो मरु देवी माता शी रीते सीझेया ?

उत्तरः—मरु देवी मातानी अवघेणा नाभी राजाथी नानी छे कारण के उत्तम स्त्रीनी अवघेणा पुरुष करतां चार आंगल आत्म आंगुलथी ओछी होय छे शास्त्र प्रश्न व्याकरण अध्यनन ४ मध्ये कहेल छे माटे मरु देवी माता मोक्ष गया ते वीरुध नथी. तथा बीजा मतवाळा एम कहे छे के हाथीनां

प्रश्नोत्तर १२५.

प्रश्नः—देवतानी चालवानी गती केटला प्रकारनी ?

उत्तरः—पांच प्रकारनी; ते १ समीया. २ चंडा. ३ जाया. ४ वेगा. ५ सीघ्र, ए पांच प्रकारनी चालवानी गती समजवी.

प्रश्नोत्तर १२६.

प्रश्नः—असंख्याता योजनना विमानमां देवता छ महीना सुधी चाले पण पार पामे नहि ते गती केवा प्रकारनी समजवी ?

उत्तरः—ओपमा प्रमाणे करी चार प्रकारनी गतीथी मान आप्युं छे ते कहे छे (समीया) नी गती हमेशा एटले (एकदीवसमां) सूर्य जेटला योजन चाले तेने त्रण गणा करतां जेटला योजन थाय तेटला योजननुं एक पगलुं करी चाले तेने समीया गती कहीए. अने पांच गुणा करे तेने चंडोगती कहीए

उत्तरः—आठ रुचक प्रदेस बाहेर नीकलता ज नथी अने ए आठ प्रदेश रुचकना नीकले तो पछे पाछा आवताज नथी अने त्यांज मर्णज थाय. माटे रुचक प्रदेस मर्ण सीवाय बाहेर नीकलता ज नथी. शाख उववाइजीनी.

प्रश्नोत्तर १५२.

प्रश्नः—उववाइ सुत्रमां कहयुं छे के जघन्य सात हाथवाळो सीझे कहयुं छे अने नवतत्वमां कहयुं छे के बे हाथवाळो सीझे एम उपरनां सुत्रमां कहयुं अने अवघेणा सीधनी जघन्य एकहाथ ने आठ आंगुलनी कही तो बे हाथवाळो बेठो सीझे तो जघन्य कहे लघन केम पडे तथा नव वरसवाळानी सातहाथनी अवघेणा शी रीते होय !

उत्तरः—सातहाथवाळो बेठो सीझे तथा वामनरूपवाळो तथा सुता ए त्रणेनो जाडपणे सीझे जघन्य घन पडे पण नव वरशवाळो सीझे तो उभोज सीझे पण बेठो न सीझे पण बे

उत्तरः—एकेंद्रीना अभजाशाने होय; शास्त्र भगवतीजीनी.

प्रश्नोत्तर १२८.

प्रश्नः—भगवतीजीमां एम कह्युं के रत्नप्रभा पृथ्वी विषेथी पृथ्वीनो जीव चवीने पेला देवलोके पृथ्वीपणे उपजे एवी रीते गौतम स्वामीये पुछ्युं त्यारे भगवंते हा पाडी के उपजे, जावत इशीय भारा पृथ्वी सुधी पृथ्वीपणे उपजे तेमज अपनो जीव उपजे त्यारे नवग्रीवेगने अनुत्तर विमानमां पाणी नथी तो आंही अपना जीवने त्यां उपजवानी हा केम पाडी ?

उत्तरः—सुक्ष्म जीव उपजवा आश्री हा पाडी छे.

प्रश्नोत्तर १२९.

प्रश्नः—ज्ञानावर्णि तथा दरशणावर्णि कर्म बांधवाना छ कारण कह्या छे ते केटला डंडकना जीवो बांधता हशे ?

प्रश्नोत्तर १५५.

प्रश्नः—उववाइ सूत्रमां कह्युं छे के नीनवमती ९ ग्रीवेग सुधी जाय अने तेज सुत्रमां तथा भगवतीजी सुत्रमां कह्युं छे के आचार्य उवझायनो पतिनिक लंतक सुधी जाय तेनुं केम ?

उत्तरः—मत चलावनार लंतक सुधी जाय कारण के तेने गाढुं मीथ्यात्व छे माटे; तेना साधुओ परंपराये अल्पमीथ्यात्व तथा अल्प द्वेष होवाथी ग्रीवेक सुधी जाय छे.

प्रश्नोत्तर १५६.

प्रश्नः—केटलाक एम कहे छे के श्रावक १४ प्रकारना दानमां छ वस्तु पाढीहारी लेवी कल्पे कहे छे ते कया सुत्रमां छे ?

उत्तरः—उववाइजी सुत्रमां श्रावकना प्रश्नोने अधीकारे कह्युं छे के (पाढहारीयं पीढ फलग सेज्या संथारयणं उसह भेसजेणं) छ वस्तु पाढीहारी लेवी कल्पे पण आहार पाणी मुखवास मेवादीक

काल करी धारिणी राणीनी कुखे जेठा मुले आवी उत्पन्न थया अने त्यार पछी त्रीजे मासे अकाल मेघनो डोहलो उत्पन्न थयेलो छे पण जेष्ट मासथी गणतां त्रीजो मास भादरवो आवे तो ते वखत वर्षाऋतु होवी जोइए छतां अकाल केम कह्यो ?

उत्तरः—मेघकुमारनो जीव धारिणी राणीनी कुखे जेष्ट वदमां आवी उत्पन्न थयो छे अने त्यांथी त्रण महीना गणतां भादरवा वदमां (आसो वदमां पुनमीया महीना लेखे) डोहलो उत्पन्न थयेलो छे ते वखते सुर्यनी चाल गणतां श्रावण शुद १५ अने भादरवा सुदी १५ ए बे मास वर्षा ऋतुना आवे छे अने आसो १५ अने कार्तिक १५ ए बे मास सरद ऋतुना छे तेमज संक्राती प्रमाणे जो-तां उपर कहेल मासमां ऋतु बेसे छे अने ते डोहलो पण सरद ऋतुमां प्रगट थयेलो छे तेथी ते वखते वर्षाद कभी होय छे अने ममोला तथा हंशना जोडा तथा झीणा अंकुर वीगेरे होय नही तेथी अभय कुमारे देव आराधी अकाल डोहलो पुरो करेल छे एवा हेतुथी अकाले डोहलो पाउ भु-

आगल परुप्यो छे अने त्रण ज्ञानवाला केशी कुमार ते श्री गौतम स्वामी भेगा मल्या.

अत्र शंकाः—इहां कोइ एम कहे के गौतम स्वामी भेगा मल्या पछी चोथुं ज्ञान उपन्युं अने पछी परदेशी राजाने बुझव्या.

तत्रोत्तरः—जो गौतम स्वामी भेगा मल्या पछी परदेशी राजाने उपदेश दिधो होय तो पांच महा व्रत रुप धर्म परुपत पण ते तो नथी; तीहां तो चार महा व्रतरुप धर्म परुप्यो छे माटे बेय केशी कुमार जुदा जुदा जाणवा.

प्रश्नोत्तर १५१.

प्रश्नः—राजप्रश्रेणी सुत्रमां कह्युं छे के मृत्युलोकनी गंध ४००–५०० योजन ऊछले छे तो बंने बोल न्यारा कहेवानुं शुं कारण?

उत्तरः—४०० योजननी गंध कहेल छे ते तो सदीव आश्री समजवुं अने ५०० योजननी

प्रश्नोत्तर १३२.

प्रश्नः—ज्ञाताजी सुत्रना अध्ययन ६ मध्ये कह्युं छे के सेलगराजरुषीए मज पाणी वापर्युं तेमां केटलाक दारू कहे छे तेनुं केम ?

उत्तरः—आंही दारु समजवो नही; कारण के नीसीथ वीगेरे सुत्रोमां दारु वापरवानी मना छे तो ते वस्तु वापरी एम समजवुं नही. पण एम कहेल छे के मज्ज नाम मर्दन करेल छे शालग,दीक बलीष्ट वस्तुनुं अने पाणी पण तेवुंज बलीष्ठ सरवतादीक वापरेलुं छे. पण दारु समजवो नही; कारण के ज्वरादिक पीडामां जो दारु पीवे तो विशेष ज्वर आववानो संभव छे; ते माटे दारु पीधेल नथी. माटे मज्ज नाम मर्दन समजवुं.

प्रश्नोत्तर १३३.

प्रश्नः—अनुतरवासी देवता अहीं स्त्रीपणे केम उपजे छे ?

(वीसगा) तो आ कल्पवृक्ष (पउगसा) पुदगलना छे केमके जीवे ग्रह्या ते पउगसा माटे पउगसा प्रणीत छे.

अत्र शंकाः—केटलाक अेम कहे छे के ते वृक्षो देवकृत छे केमके देव प्रेरक वीना युगलीयाने इच्छीत वस्तु शी रीते मले ?

तत्रोत्तरः—तेहीज सुत्रमां कहेल छे के १० जातना कल्पवृक्ष वीससा प्रणीत कहेल छे एटले स्वभावीकज छे पण कोइना कृत नथी ते माटे देवकृत न संभवे.

वीशेष शंकाः—त्यारे शुं दशे जातनी वस्तु झाडे लटकती हशे के केम ?

तेनुं समाधानः—तेहीज सुत्रमां जीनराजदेवे पुढवी पुप्फफलाहारा कहेल छे एटले पृथ्वी पुष्प फल ए त्रण वस्तुरुप सर्व वस्तुओ हमेशा रहेती संभवे छे तथा ते वृक्षो तेवा गुण रुपज प्रगमे, जेम महुडो रशवत्, केलनी छालमां रेशमी वस्त्र वत, वंसमां वाजीत्रवत, ए न्याये संभवे छे तत्वार्थ केवली गम्य.

उदय छे माटे स्त्री वेद प्रदेश उदये वेदवा मांडयुं पछी त्याथी चवी मली कुंवरीपणे उपन्या त्यां स्त्री वेदनो जे प्रदेश उदय हतो ते विपाक उदय थयो पण मलीनाथे त्यां अनुतरवाशी देवमां स्त्री वेद बांध्यो नथी. महाबलना भवमां बांधेलो छे तेज मली कुंवरीना भवमां उदे आव्यो एवा कारणथी अनुतरवाशी देव अहीं स्त्रीपणे उपजे छे.

प्रश्नोत्तर १३४.

प्रश्नः—ज्ञाताजी सुत्रमां मलीनाथ भगवंतनी साथे ३०० पुरुष ने ३०० स्त्री ने आठ ज्ञात कुमरे दीक्षा लीधी कहेल छे ने ठाणांगजी सूत्रनां छठेठाणे छ मीत्र साथे दीक्षा लीधी तेनुं केम?

उत्तरः—ज्ञाताजीमां ६०८ कहया तेजुदा अने छ मित्र तो केवळि थया पछी लीधी छे तो आठ ने छ बंने जुदा जाणवा पण केवळ उत्पन्न थयुं ने छ जण आवेल छे तो ते पण साथेज कहेवाय कारण के अपेक्षावाची बोल छे.

इंद्रीद्वारे लेता तो तेने घणोज नशो (केफ) आवी जाय कह्युं छे तो तेहीज द्वीप समुद्रनां वसनारा तीर्यंचो तेहीज पाणी सदाकाल पीवे छे पण ते तीर्यंचोने केफ चडतो नथी तो तेहीज न्याये जे जे खेत्रोनो आहार सरस छे तो तेही तेही खेत्रोना मनुष्य पण तेहवा सरस रसवाला आहारने पचाववाने तिव्र शक्तीवंत छे माटे युगलीआने बोर जेटलो आहार घटे नही पण पोत पोताना शरीर प्रमाणे आहार समजवो.

प्रश्नोत्तर १६२.

प्रश्नः—मृगापुत्रना अधीकारे नर्कमां मांस लोही खवराव्यो कह्युं अने सुत्र पनवणाजीमां नारकि देवताने संघेण कह्यो ते केम ?

उत्तरः—जीवाभीगम सुत्रमां नारकी देवताने असंघेणी कह्या छे ते वैक्रय शरीर आश्री कारण के संघेण तो उदारिक शरीरवालाने छे अने उदारिक शरीरवालाने हाड मांस अने लोही छे अने

उत्तरः—श्री कृष्ण महाराज घातकीखंडे जतां गंगा नदीने दक्षीणने कांठे थइने पुर्व समुद्रमां थइने गया अने पाछा आवतां गंगा नदीना उतरने कांठे लवण समुद्रमांथी पुर्वना त्रीजा खंडमां आव्या अने त्यांथी मध्य खंडमां आवतां नदी उतरवी पडी माटे वचे आवी.

अत्र शंकाः-जंबुद्वीपना नकशामां गंगा सिंधु नदीनो आकार दक्षीण समुद्रमां मीलाव्यो छे अने ज्ञाताजी सुत्रमां कह्यो के पुर्वनी वेले गया तो पछे जाती वखते अने आवतां बेय वखते नदी उतरवी जोइए.

तत्रोत्तरः—सुत्र जंबुद्वीपपन्नतीमां कह्यो छे के गंगा प्रपातकुंडना दक्षणना तोरणमांथी नीकलीने वैताढ भेदी दक्षणार्ध भरतमां वनीता नगरी सुधी (सीधी) एक लाइनमां दक्षीण दीशामां चाली अने पछी वनीतानी हदथी सीधी पुर्व दीसामां गइ ते कारणथी जाती वखते नदी न आवी, कांठे थइने गया माटे. साख ज्ञाताजी सुत्रना अध्ययन १५ मानी (घातकी खंडे श्री कृष्ण महाराज गया तेनुं

भीगममां चार बोलने अधीकार छे.

प्रश्नोत्तर १६४.

प्रश्नः—नारकी तीर्यंच मनुष्य देवतानुं बनावेलुं वैक्रयरुप केटलो काल रहे?

उत्तरः—नारकीनुं एक अंतर मुहरत रहे मनुष्य तीर्यंचनुं एक पहोर चार रहे, देवतानुं पंदर दिवस रहे; शास्त्र जीवाभीगम सुत्रमां चोथी पडीवतीने अधीकारे नारकी संबंधी उदेशो ३

प्रश्नोत्तर १६५.

प्रश्नः—जुगलीयाने नीहारनो लेव लागे के नही?

उत्तरः—न लागे, शास्त्र जीवाभीगम सुत्रनी जुगलीयाना अधीकारे छे.

प्रश्नोत्तर १६६.

प्रश्नः—आहारिक शरीरनुं सर्व जीव आश्री आंतरुं केटलुं पडे?

उत्तरः—ते देशथी वीराधिक छे अने भद्रीक परिणामी माटे गइ तेमज पेलो अने बीजो देवलोक सहचारी माटे गइ छे.

प्रश्नोत्तर १३९.

प्रश्नः—नागेश्री ब्राह्मणी के वारे थइ?

उत्तरः—गये अनंत काले थइ; साख गौसालानी, पांच थावरमां परिभ्रमण कर्युं माटे अनंते काले थइ संभवे छे. शास्त्र ज्ञाता सुत्रमां नागेश्रीनो अधीकार अध्ययन १६ में छे.

प्रश्नोत्तर १४०.

प्रश्नः—उपाशकदशांग सुत्रना प्रथम अध्ययने आणंद श्रावकना अधीकारमां ५०० हळवा जामिन मोकली राखी तो ५०० हळवाना कोष केटला अने छठा वृतनी मरजादा केटली करी?

उत्तरः—५०० हळवा जमिनना ओरश चोरश १२५० कोष जमीन मोकली राखी छे तेनुं ग-

चार भेद लाभे. साख जीवाभीगमनी

प्रश्नोत्तर १६८.

प्रश्नः—जीवाभीगम सुत्रमां त्रीयंचनी भव धारणी अवघेणा करतां उतर वैक्रयनी अवघेणा ओछी कही तेनुं केम?

उत्तरः—तीर्यंच आश्री एवो नीत्या भाव समजाय छे के हजार जोजनवालो उत्तर वैक्रय करेज नही पण हजार योजनथी ओछी अवघेणा वालो उत्तर वैक्रय करे तो नवसें योजन सुधी शक्ति प्रमाणे करे एम समजाय छे; तत्व केवली गम्य.

प्रश्नोत्तर १६९.

प्रश्नः—केवली महाराज आहार क्यां सुधी करे ?

उत्तरः—उतक्रष्टो केवली भगवान पुर्वकोडी देसेउणो आहार करे कह्यु छे.

ऋतु कोने कहेवी?

उत्तरः—कोइ एम कहे छे के सथारमां तावेलुं हमेशानुं घी वापरे छे. वळी कोइ एम कहे छे के सरद ऋतुमां वीआयली गायनुं घी वापरवानी मोकळ राखी छे. कोइ एम कहे के सरद रुतुमां पाकुं घास थयेलुं ते खाधेली गायनुं घी, तत्वार्थ केवलीगम्य.

प्रश्नोत्तर १४२.

प्रश्नः—उपाशक दशांग सुत्रमां सकडाळ पुत्रे गोशाळाने पाट पाटला आप्या ते छ आगार मांहे-थी किया आगारथी आप्या?

उत्तरः—(गुरुनिग्गहेणं केतां गुरुना गुणग्राम कर्या तेथी आप्या छे तो छ आगर मांहेला उ-पला बोलमां ते गुण स्तुती समजाय छे तेथी ते बोलनां आगारथी आप्या छे.

अत्रशंकाः—धर्मजाणी आप्या नथी.

प्रश्नोत्तर १७१.

प्रश्नः—जीवाभीगम सुत्रनी चोथी पडीवृतीमां सर्व जीव चार छ प्रकारना कह्या तेमा अवधी दर्शन उतकृष्टो रहे तो १३३ सागर रहे कह्युं अने तेज सुत्रमां आठमी पडिवृत्तिमां अवधी ज्ञाननी स्थीती ६६ सागरनी कीधी अने वीभंग ज्ञाननी स्थीती उतकृष्टी ३३ सागर पुर्व कोडी अधीक कही तो अवधीनी तथा वीभंगनी मली स्थीती ९९ सागरनी थइ तो अवध दरसणनी स्थीती १३२ सागरनी शी रीते मेळववी? कारण के विभंग ज्ञान तथा अवधी ज्ञान मळी १३२ सागर उतकृष्टो अवध दरसन पणे रहेवो जोइए तो अत्रे मथी मलतुं तेनुं केम?

उत्तरः—एक जीव मनुष्यमांथी वीभंग ज्ञानथी मरी नवग्रीवेगमां उतकृष्टी स्थीतीए एटले ३१ सागरे उपनो अने अंत समे अवध लहीने चवी मनुष्यमां आव्यो अने मनुष्यमां पाछुं अवध ज्ञान वमी विभंग पामी पेला देवलोके बे सागरनी स्थीतीये गयो अने त्यांथी अंत समे अवध ज्ञा-

लाभे नही. अर्थात साधु नही केहेवा.

प्रश्नोत्तर १४४.

प्रश्नः—श्रांवकना पाडिमणाना दोष केटला ने कया कया?

उत्तरः—१२४ दोष ते कहे छे-ज्ञानना वरजीने ८५ अतिचार, १२ तपना, ३ विर्यनां एवं १०० आठ ज्ञानना ते कहेछे १ काले करी भणे, २ विनयथी भणे ३ बहुमाने करी भणे ४ शुत्र भणतां तप करे ५ उपगारीना उपगार ओलवे नाहि ६ व्यंजन सहित भणे ७ अर्थ सहित भणे ८ सुत्रार्थ संयुक्त भणे. एवं ज्ञाननां आठ. हवे दर्शननां ८ कहे छे १ तत्वनी शंका न आणे २ अनेरो धर्म न वांछे ३ फळ प्रते संदेह न आणे ४ मिथ्यातीना धर्मनो महिमा देखी वांछा न करे ५ धर्मवंतानां गुण कहे. ६ धर्म थकी डगताने निश्चल करे ७ स्वामीनो हेतकारी होय ८ आठ प्रवचन मातानी प्रभावना करे एवं ८, हवे चारित्रनां आठ कहे छे. पांच सुमति, त्रण गुप्ति, एवं ८ चारित्रनां; एवं सर्व थइ

प्रश्नः—देवता करतां देवी बत्रीश गुणी शुं न्याये लाभे ?

उत्तरः--अप्रीग्रहीत देवी तथा छपन कुमारीका तथा श्री ह्री धृति लक्ष्मी वीगेरे देवी तेनो परीवार तथा समीया चंडा जाया तथा आत्मरक्षक देवी वीगेरे घणीज वधारे देवी छे माटे ते न्याये बत्रीश गुणी देवी समजवी. शास्त्र जीवाभीगमनी

प्रश्नोत्तर १७४.

प्रश्नः—छपेला बावीश थोकडामाहे नवतत्व मध्ये कह्युं छे के छपन अंतरद्वीपाना मनुष्य ते कहेने कहीए ? हेठे समुद्र छे अने उपर अधर डाढामां द्वीपाना रहेनार छे एम कह्युं तेनुं केम ?

उत्तरः—छपन अंतरद्वीपा डाढा उपर नथी, सात सात द्वीपनी पंकती छे अने वांका वांका होवाथी डाढाने आकारे रहेल छे अने जो तमो डाढा कहो तो कया पर्वत मांहेथी नीकली? केमके चुल हीमवंत तथा शीखरी ए बे पर्वत मांहेथी नीकली होय तो ते पर्वत लांबा २२ हजार त्रणसो बत्रीश योजन लां

पुत्री अथवा शेठ सावकार सामानीक राजानी पुत्री सर्व जाणवी अने अंतगड सुत्रमां १६ हजार कही तिहां देवी एवो पाठ छे माटे मोटा राजानी पुत्री जाणवी.

प्रश्नोत्तर १४७.

प्रश्नः—प्रणातिपातादिक पांच प्रकारना पाप; अने, पांच प्रकारना आश्रव, ए बेयमां शुं तफावत समजवो?

उत्तरः—प्रथम हिंसा करवाना जे भाव प्रवृत्या ते भाव आश्रव अने हिंसा करी तेथी पाप थयुं अने ते पापथी आवेला कर्म ते द्रव्य आश्रव समजवो ए प्रमाणे बंनेना गुण न्यारा न्यारा समजवा साख. प्रश्न व्याकरण सुत्रनी अ० १ नी.

प्रश्नोत्तर १४८.

प्रश्नः—चैत शब्दना अर्थ केटला थाय छे ते कहो?

त्रीजो द्वीपो छे अने ६०० योजन चोथो द्वीपो छे. ७०० योजन पांचमो द्वीपो छे अने ८०० योजन छठो द्वीपो छे अने जंबुद्वीपनी जगतीथी ९०० योजन लवण समुद्रमां सातमो द्वीपो छे ते अपेक्षाये जगतीथी १८०० योजन सुधीमां मनुष्यनो वास कहेल छे पण ८४०० योजन कह्या ते द्वीपाद्वीपनी परसपर अपेक्षाये समजवुं पण लवण समुद्रमां मनुष्यनो वास१८००योजन सुधी छे केमके ९०० योजनना ७ द्वीपा अने ९०० योजन जगतीथी लांबा छे. सर्व मीली १८०० योजन थाय छे.

प्रश्नोत्तर १७६.

प्रश्नः—लवण समुद्रमां पाताल कलसा छे ते लाख योजनना कहेल छे ते कइ जग्याए रहेल छे?

उत्तरः—जीवाभीगममां कहेल छे समपृथ्वी भागमां पाणीनी नीचे तेनुं मुख छे अने लाख योजननो पाताल कलसो पहेली नर्कमां पाटडा तथा आंतरा भेदीने रहेल छे पण सम भुतलथी उपर समजवो नहीं. नर्कमां मारीया भावे रहेल छे, साख जीवाभीगम सूत्रनी.

होदा उपर बेठा सीध थयेल छे माटे मझम घन पडे माटे वीरुध नथी.

प्रश्नोत्तर १५०.

प्रश्नः—केवली महाराज जे जग्याए बेठा छे तेज ठीकाणे बेठा कपाटादिक करे के मेरु पासे जइने पछे कपाटादिक करे ?

उत्तरः—जे ठेकाणे केवली महाराज बेठा छे तेज ठेकाणे दंड कपाट मंथाणादीक करे छे. पण मेरु पासे जइ करवानी कांइ जरुर नथी. कपाट मंथणादिकमां मेरु आवी जाय छे, फरसवा आश्री. शास्त्र उववाइजीनी.

प्रश्नोत्तर १५१.

प्रश्नः—केवली महाराज दंडादिक करी सर्व प्रदेश बाहेर काढे छे तो रुचक प्रदेस बाहेर नीकले के नहीं ?

हजार योजननी जळ वृधी थाय छे अने जो बार हजार योजननां प्रमाणमां वे हजार योजनने अनुमाने जळवृधि थाय तो लवण समुद्रमां ४२ हजार योजन जतां गौस्थूभ द्वीप आदि वेलंधर अणु वेलंधर नाग राजानां पर्वत १७२१ योजननां उंचा कह्या छे तो ते ठेकाणे जळ वृधी पण ७ हजार योजनने अनुमाने थाय तो पछे ते द्वीप डुबी जवा जोइये अने देवतानां क्रीडा करवानां ठेकाणां वीगेरे अही ठाण पण डुबी जवा जोइये अने ते द्वीपानां अधिकारमां तो जळना अंदर होय तेम समजातुं नथी तेमज चंद्र सुर्यनां विमान पण लवण समुद्रमां तप्या, तपे छे ने तपशे एहवो पाठ जीवाभीगममां छे तो तेनी उंचाइथी जळनी वधारे वृधी होय तो तपवा संबंधीना पाठने पण बाधक लागे छे.

उत्तरः—ते [illegible] समाधान माटे उपरनां कहेला बार हजार योजननां लांबा पोहोळा गौतम द्वीपानी गणत्री [illegible] पंचाणुं हजार योजन जगती थकी लवण समुद्रमां जतां ७०० योजननी

हाथवाळो सीझे नाहि.

प्रश्नोत्तर १५३.

प्रश्नः—अकाम निर्जरा कोहने कहेवी ?

उत्तरः—अकाम निर्जराना बे भेद ते समद्रष्टी जीव इच्छा वीना परवस्य पणे कष्ट सहन करे तेने अकाम निर्जरा थाय अने मीथ्याती जीव इच्छा वीना परवस्य पणे कष्ट सहन करे तेने अकाम निर्जरा कही साख सुत्र उववाइ सुत्रनी. तेने फल पुदगलीक सुख मीले.

प्रश्नोत्तर १५४.

प्रश्नः—सीध केजे उपयोगे थाय ?

उत्तरः—सागार उपयोगे एटले ज्ञान उपयोगे सिध थाय; शाख उववाइ सुत्र तथा उतराध्ययन ३६ मानी गाथा (सागारोवउते सझिइ) इती वचनात्.

उत्तरः—अर्ध कौठनुं संठाण छे. शाख जीवाभीगम सुत्रनी तथा जंबुद्वीप पन्नती सुत्रनी.

प्रश्नोत्तर १८०.

प्रश्नः—अढी द्वीप बाहारना चंद्र सुर्यनुं संठाण केवुं जाणवुं ?

उत्तरः—पाकी इंटनुं छे, शाख जीवाभेगम सुत्रनी तथा जंबुद्वीप पन्नंती सुत्रनी.

प्रश्नोत्तर १८१.

प्रश्नः—सुर्य सुर्यने लाख योजननुं आंतरुं कह्युं छे तो जंबुद्वीपना मांडलानुं आंतरुं शी रीते मळे ?

उत्तरः—जंबुद्वीपना सूर्यनुं आंतरुं ज० ९९६४० योजननुं अने उ० १००६६० योजननुं आंतरुं समजवुं पण लाख योजननुं आंतरुं कह्युं ते अढी द्वीप बाहेर आश्री समजवुं पण अढी द्वीपमां न समजवुं. शाख जीवाभीगम सुत्रनी.

लेवा कल्पे नही. साख उववाइ सुत्रनी.

प्रश्नोत्तर १५७.

प्रश्नः—आहारप्रजा जीव पासे छतां अणाआहारकि कहया ते कोने समजवा?

उत्तर—केवली महाराज समुदघातमा. ३ ४ ५ ए त्रण समाआश्री अणा अहारीक केहल छे, साख उववाइ सुत्रनी.

प्रश्नोत्तर १५८.

प्रश्नः—श्री राय प्रसेणी सुत्रमां केशी कुमारने चार ज्ञान कह्या ते केशी कुमार तथा श्री उतराध्ययनना तेवीशमा अध्ययनमां केशी कुमारने त्रण ज्ञान कहयां ते बंने केशी कुमार जुदा जाणवा के केम ?

उत्तरः—चार ज्ञानवाला केशी कुमार हता तेणे चार महा वृत रुपी धरम परदेशी राजा

उत्तरः—अर्ध कौठनुं संठाण छे. शाख जीवाभीगम सुत्रनी तथा जंबुद्वीप पन्नती सुत्रनी.

प्रश्नोत्तर १८०.

प्रश्नः—अढी द्वीप बाहारना चंद्र सुर्यनुं संठाण केवुं जाणवुं ?

उत्तरः—पाकी इंटनुं छे, शाख जीवाभेगम सुत्रनी तथा जंबुद्वीप पन्नंती सुत्रनी.

प्रश्नोत्तर १८१.

प्रश्नः—सुर्य सुर्यने लाख योजननुं आंतरुं कह्युं छे तो जंबुद्वीपना मांडलानुं आंतरुं शी रीते मळे ?

उत्तरः—जंबुद्वीपना सूर्यनुं आंतरुं ज० ९९६४० योजननुं अने उ० १००६६० योजननुं आंतरुं समजवुं पण लाख योजननुं आंतरुं कह्युं ते अढी द्वीप बाहेर आश्री समजवुं पण अढी द्वीपमां न समजवुं. शाख जीवाभीगम सुत्रनी.

कही ते काल दुकालमां अशुभ पुदगलनो वधारो थवाथी ५०० योजन गंध उछले छे तथा चोथा पांचमा आरा आश्री समजवुं तथा काल दुकाल आश्रीने दोय बोल न्यारा समजाय छे. तत्वार्थ केवली गम्य.

प्रश्नोत्तर १६०.

प्रश्नः—दश जातना कल्पवृक्ष पांच स्थावर काय मांहेली कइ कायना छे तथा त्रण प्रकारना पुदगल मांहे कइ जातना पुदगल कहेल छे?

उतरः—ते कल्पवृक्ष अेक वनस्पती कायनां संभवे छे कारण के श्री जीवाभेगमसुत्रमां प्रतेक प्रतेक कल्पवृक्षना (बहवेरूखा) कह्या छे तेमज (कुसविकुस रहीया चिठंती) ते कर्म पण अकर्म भोमीमां द्रव्यार्थे सासवता अने प्रयार्थे असास्वता संभवे छे (देवलोकना बागवत्) अने पुदगलने माटे श्री भगवतीजी सुत्रना. स० ८ उ० १ मां त्रण प्रकारना पुदगल कह्या छे. (पउगसा) (मीसा)

प्रश्नोत्तर १८४.

प्रश्नः—सोले वाण व्यंतर देवता कये ठेकाणे रहे छे ?

उत्तरः—रत्नप्रभा पृथ्वीनो पिंड १८०००० योजननो उंचो छे तेमां हजार योजन नीचे मुकीये ने हजार योजन उपर मुकीये तो वचे नर्कावाशा छे अने उपर एक हजार योजनना पींडमां १०० योजन निचे मुकीये १०० योजन उपर मुकीये वचे ८०० योजननी पोलारमां वसे छे. शास्त्र पनवणाजी सुत्रना पद बीजानी.

प्रश्नोत्तर १८५.

प्रश्नः—जंभका जातिना देवता क्यां वसे छे ?

उत्तरः—रत्नप्रभा पृथ्वीनुं १००० योजननुं उपर पींड छे तेमां ९०० योजन निचे मुकीये ने उपर सो योजन छे. तेमां दश योजन उपर मुकीये ने दश योजन निचे मुकीये वचे ८० योजननी

शास्त्र जीवाभेगमनी चोथी पडी वृतीनी

प्रश्नोत्तर १६१.

प्रश्नः—छ आरानां थोकडामां युगलीयाने बोर तथा चणानी दाल जेटलो आहार कह्यो तो त्रण गाउनी काया वालाने एटले अहार संतोष केम थाय ?

उत्तर—जीवाभगिम सुत्रमां युगलीयाने शरीर प्रमाणे आहार जीनराज देवे कहेल छे तो बोर तथा चणानीदाल जेटलां आहारथी क्षुधा उपसमे नही माटे युगलीयाने पोत पोताना शरीर प्रमाणे आहार होवो जोइए.

अत्रशंकाः—युगलीयाना आहारनी सरसाइ तेज सुत्रमां घणीज वर्णवेली छे माटे अल्प आहार करतां बहुज संतोष पामे छे माटे बोर प्रमाणे आहार कहेतां बाधक नथी.

तत्रोत्तरः—मजकुर सुत्रमां वारुणी समुद्रनुं पाणी वरणव्युं छे के तेनी हवा मात्र मनुष्य

१७८००० योजनमां पाठडा तथा आंतरामां भवनपति वसे छे एवुं कहेल छे पण सर्व पोलार छे एम कहेल नथी पण थोकडावालाए कहेल छे तेमां एम संभवे छे के वचे वचे भागमां थोडा थोडी पोलार छे ते अपेक्षाये कहेल समजाय छे पण पाठमां तो उपर कह्या प्रमाणे छे. साख पनवणाजी सुत्र पद वीजानी.

प्रश्नोत्तर १८८.

प्रश्नः—कोइ वखते अढी द्वीपमां चोवीस मुहुर्तनो विरहो पडे के नही ?

उतरः—छमुछिम मनुष्यनो चोवीस मुहुर्तनो वीरहो छे तो समकाले वायरो वाय छे एटले विरहो पडे छे बीजो मत एम कहे छे के बीजी गती मांहेथी कोइ जीव आवी उपजे नही ते आश्री वीरहो पडे छे सर्वथा जो चोवीस मुहुर्त सुधी नीरलेप थाय तो पनवणा पद ३४ मां अठाणुं बोलनो अल्पा बहुतमां २४ मा बोलने बाधक लागे माटे बीजो मत खरो संभवे छे; पछी त-

वैक्रय शरीरवालाने हाड मांस लोही नथी माटे, असंघेणी छे. पनवणामां कह्यो ते पुदगल संघेणपणे प्रणमे छे अने उतराध्ययन सुत्रना उगणीसमा अध्ययनमां नारकीने मांस कह्यो ते नारकीना शरीर अशुध पुदगलना बनेला छे तेज शरीरने छेदीने तेने खवरावे माटे मांस रुधीर समान कहेवाय जेमके बादर अग्नी तो फक्त अढी द्वीपमां ज छे अने मजकुर अध्ययनमां एटले उगणीसमा अध्ययनमां नारकीने विषे हुतासन एटले अग्नी कही छे ते जेम वैक्रय अग्नी जाणवी तेमज नारकीना शरीरना अशुभ पुदगलने मांस कह्यो छे.

प्रश्नोत्तर १६२.

प्रश्नः—नारकीना जीव वैक्रयरुप झाझा करी शके के नहि?

उतरः—पांचमा नर्क सुधी एक रुप वीक्रोवे तथा घणा रुप शस्त्रना बनावे छे अने छठी सातमा नर्कवाला कुंथवादिकना रुप बनावे छे पण संख्याता करे पण असंख्याता न करे, साख जीवा-

छे पण समायक पोसामां पोताना शरीरने कारण विना हलावे नहि ने शरीरनु चपलपणुं बंध करे; द्रष्टांत—कोइ पुरुष गाडामां बेठा एकासणुं कर्युं पण गाडानो स्वभाव फरवानो छे तो गाडु फरता पोते फर्यो पण पोते एक आसन रुपे रह्यो. तेने द्रष्टांत जलमां मच्छादीकने वसवुं ते योनी रुप छे पण समायक पोसा अवसरे चपलपणुं रोकी प्रवर्ते. इत्यर्थ.

प्रश्नोत्तर १९१.

प्रश्नः—ज्ञान दर्शन ने चारीत्र ए त्रणनी पर्याय शी रीते समजवी?

उत्तरः—परीयायनो फरवानो स्वभाव छे ने ते वस्तु अरुपी छे अने पर्याय एटले रीधी अथवा शक्ति ज्ञाने करी एक वस्तु जाणी अने तेहनी तेज वस्तुने फरीथी बीजे रुपे जाणी ते अपेक्षाये ज्ञाननी पर्याय पालटी समजवी. एक वस्तुने दर्शने करी देखीने तेहनी तेज वस्तुने फरीथी बीजे रुपे देखी ते अपेक्षाए दर्शनी पर्याय पालटी समजवी. सामायक चारित्रवाळो सुक्ष्मसंपराय चारीत्रे चडे त्यारे

उनरः—आहारिक शरीरनुं सर्व जीव आश्री आंतरुं पडे तो जघन्य एक समो उत्कृष्टुं छ मासनुं पडे छे; शास्त्र छापेली जीवा भीगमनी टीकाना पाना १७ मांनी छे.

प्रश्नोत्तर १६७.

प्रश्नः—वीस भेद त्रियंच पचेंद्रीना छे ते मांही जुगलियाना क्षेत्र मांहे केटला भेद लाभे ?

उतरः—थलचर गर्भजना बे भेद तथा खेचर गर्भजना बे भेद एवं चार भेद त्रियंचना जुगलीयामां लाभे.

शंकाः—त्यारे कोइ कहे के बीजा केम न लाभे ?

उत्तरः—बाकीना त्रियंचनी स्थीती थोडी छे एटले उतकृष्टी पुर्व कोडीनी छे तो ते स्थीती वाला तो कर्म भुमीमांज होय अने खेचर थलचरनी स्थीती तो पुर्व उपरांतनी छे तो ते आश्री जुगलपणु लाभे छे माटे च्यार भेद लीधा छे पण बीजा भेद त्रीयंचना लाभे पण युगलमां तो उपरना बतावेल

प्रश्नः—नारकीमां तथा देवतामां संज्ञीनो अप्रजाप्तो ने प्रजाप्तो छे ने पेली नरकमां तथा भवनपती वाण व्यंतरमां जीवना ३ भेद कह्या छे तेनुं शुं कारण ?

उत्तरः—असंज्ञी जीव मरी नारकीमां तथा भवनपती व्यंतरपणे उपजे छे ते आश्री असंज्ञी कहिये तथा ज्यां सुधी अवधी न उपजे तथा अप्रजाप्तापणुं होय त्यां सुधी असंज्ञीपणुं गवेख्युं छे पण जीवनो भेद तेरमोज छे पण अगीयारमो नथी शाख पन्नवणा पद ६ नी अने संज्ञी मांहेथी मरीने उपनो ते संज्ञी कहीए.

प्रश्नोत्तर १९५.

प्रश्नः—सचेत अचेत ने मीश्र योनी कोने कहीये ?

उत्तरः—जे जीवने उत्पन थवा स्थान छे ते सचेत होय तथा ते जीव सचेतनो आहार लेवे तेने सचेत योनी कहीये; तेमज अचेत ने मीश्र समजवी.

अत्रशंकाः--केवली तथा तीर्थंकर देव संथारो करे छे तो अणहारीक थया तो शी रीते शमजवुं ?

तत्रोतरः—केवलीने कवल आहारना पुदगल लेवाइ रह्या एटले संथारो करे पण रोम आहार ले छे ते आश्री देसे ऊणा पुर्व कोडी केवली महाराज अहारीक रहेछे; शास्त्र जीवाभगिममां कह्युं छे.

प्रश्नोत्तर १७०.

प्रश्नः—जीवाभीगम सुत्रमां कह्युं छे के साधुजीनुं साहारण करी अकर्मभुमीमां मुके तो त्यां साधुजी झाझोकाळ विचरे के तुरत काळ करे, जो झाझो काळ विचरे तो सुझतो आहार शी रीते करे?

उत्तरः—साधुजीनुं साहारण थया पछे घणुं करीं तुरत काळ करे अने कदाच जो झाझा काळनी स्थिती होय तो समकीती देव पाछो उपाडी कर्म भुमीमां मुके पण वीशेष तो थोडी मुदतमां काळ करवो जोइए; तत्वार्थ केवळी गम्य;

माणस न सांभले ते केम ?

उत्तरः—सुक्ष्म पुदगल लोकांत सुधी पहोंचे छे ते सुक्ष्म श्रोतेंद्रीने अग्रहाय माटे सांभळवामां न आवे शास्त्र. पनवणा पद ११ मा मध्ये कह्युं छे.

प्रश्नोत्तर १९८.

प्रश्नः—एक जीव सर्व संसार मध्ये वीजीयादी चार वैमानमां केटली वार जाय ?

उत्तरः—बे वार जाय पछी अवश्य मोक्ष जाय अने सर्वार्थ सिध वैमानने विषे एक वार जाय पछी अवश्य मोक्ष जाय शास्त्र पनवणा पद १५ मे कह्युं छे.

प्रश्नोत्तर १९९.

प्रश्नः—वीजीयादी चार वैमानना देवता केटला भव करे ?

उत्तरः—भगवती श० ८ उ० ९ मां कह्युं के सर्व बंधनो उतकृष्टो आंतरो संख्याता सागरनो ते

न लइ मनुष्यमां आव्यो अने त्यांथी पाछो अवध लइ बारमा देवलोकना ३ भव उपरा उपर अवधी ज्ञानीना कर्या एटले ६६ सागर अवधीना भोगवी मनुष्यमां आवी वीभंग ज्ञाननी प्राप्ती करी महा आरंभ तथा महा परीग्रह मेलवी वीभंग अज्ञाने मरी सातमी नर्के ३३ सागर उतक्रष्टी स्थीती वीभंग ज्ञाने भोगवी. एम सर्व मली १३२ सागरनी स्थीती अवध दरसननी समजवी.

प्रश्नोत्तर १७२.

प्रश्नः—मनुष्य करतां मनुष्यणी सत्यावीश गुणी शुं न्याये लाभे ?

उत्तरः—स्त्री पुरुषना संबंध वखते स्त्री वेदनी उत्पती घणी छे माटे सत्यावीश गुणी कही तेमज तीर्यंचमां तीर्यंचणी त्रण गुणी कही पण उत्पति आश्रीज जाणवी, पुरुष वेद करतां स्त्री वेदनां बंधक घणां छे माटे, शास्त्र जीवाभीगमनी.

प्रश्नोत्तर १७३.

पथ नव योजननो छे छतां राय प्रश्रेणीजी सुत्रमां देवने पांचशे योजन गंध आवे छे एम कह्युं तेनुं केम ?

उत्तरः—पांच इंद्रीनां विषयनी वात मनुष्य तीर्यंचनां उदारीक शरीर आश्री बतावेल छे पण देवनां वैक्रीय शरीर आश्री न समजवुं.

प्रश्नोत्तर २०२.

प्रश्नः—पनवणा पद १७ मे उ० ४ मां कह्युं छे के कृष्ण लेशामां बे त्रण ने च्यार ज्ञान लाभे तो कृष्ण लेशामां मन प्रजव ज्ञान शी रीते लाभे ?

उत्तरः—कोइ जीव अप्रमत्तपणे सातमे गुणठाणे जइ मन पर्जव ज्ञाननी प्राप्ती करी छठे आवी स्थीत रह्यो अने त्यां आगल छठे गुण स्थाने रह्या थका कृष्ण लेशाना प्रणाम प्रणम्या तो पण मन पर्यव ज्ञान स्थीत रहेलुं छे तेथी कृष्ण लेशामां चार ज्ञान लाभवा संभवे छे.

वा जोइए ते तो नथी कह्यो पण लांबा तो जीनराज देवे २४९३२ योजन कहेल छे. माटे डाढा समजवी नहीं अने द्वीपा तेनो अर्थ आंही एम समजवो के चारे तर्फ पाणी होय अने वचमां जे पर्वत उपर गामहोय तेने द्वीपा कहेल छे तेमज लौकीकमांपण तेनेज द्वीप कहे छे, साख जीवाभीगम सुत्रनी.

प्रश्नोत्तर १७५.

प्रश्नः—लवण समुद्रमां मनुष्यनो वास केटला योजनमां छे?

उत्तरः—१८०० योजनमां छे.

अत्र शंकाः—छपन अंतर द्वीपा ८४०० योजन लवण समुद्र मांहे छे एम कह्युं तेनुं केम?

तत्रोत्तरः—जीवाभीगम सूत्रमां अंतरद्वीपाने अधीकारे कह्युं छे के जंबुद्वीपनी जगतीथी ३०० योजन लवण समुद्रमां जइए त्यां पहेलो द्वीपो आवे ते द्वीपो ३०० योजननो लांबो अने पहोलो छे. अने जगतीथी ४०० योजन छेटे बीजो द्वीपो छे तेमज जगतीथी ५०० योजन लांबो

प्रश्नोत्तर २०५.

प्रश्नः—अवधी ज्ञाननी स्थिती केटली ?

उत्तरः—जघन्य एक समानी उत्कृष्टी ६६ सागर झाझेरानी कही, शास्त्र पन्नवणाजी पद १८

प्रश्नोत्तर २०६.

प्रश्नः—ज्ञानीनो ज्ञानी तथा समकीतीनी समकीती केटलो काल रहे ?

उत्तरः—जघन्य अंतर मुहुर्त ने उ० ६६ सागर रहे छे अवस्य समकीतने तथा ज्ञानने वमे क्ष-योपसम समकीतना पडवाइ आश्री जाणवुं शास्त्र जीवाभीगम सुत्र तथा पनवणा पद १८

प्रश्नोत्तर २०७.

प्रश्नः—द्रव्य प्राण कोने कहेवा तथा भाव प्राण कोने कहेवा ?

उत्तरः—पांच इंद्री त्रण बल श्वासोश्वास ने आयुष्य ए दशने द्रव्य प्राण कह्या ने ज्ञान अने

प्रश्नोत्तर १७७.

प्रश्नः—जीवाभीगम सुत्रमां लवण समुद्रनो डगमाळो सोळ हजार योजन उंचो कह्यो छे तेमां एम बताव्युं छे जे प्रदेश, लिख, जव, अंगुल, वेंत, कुक्षी, धनुष्य, गाउ, योजन, ते पंचाणु पंचाणु जाइये जगती थकी त्यारे उपरनो एक विभाग पाणी वंडुं अने सोळ विभाग पाणी उंची एटले छे-व्टे जगतीथी ९५ हजार योजन लवण समुद्रमां जइये त्यारे सोळ हजार योजन पाणी उंचु अने ११ हजार योजन पाणी नीचुं एवुं गणीत बताव्युं छे तो प्रश्न के जगतिथी लवण समुद्रमां १२ हजार योजन जइये त्यारे १२ हजार योजननो लांबो पोहोलो एहवो गौतम द्वीपो आवे छे ते जंबुद्वीप तरफ साडी अठासी योजन अने एक योजननां ९५ भाग मांहिला ४० भाग जळथी उंचो जंबु-द्वीप तरफ देखाय छे अने लवण समुद्रनी दिसे बे कोष अडधा योजन जळथी उंचा देखाय छे तो १२ हजार योजननी जळ वृधिमां ८८ योजननुं जळ वृधिमान थयुं अने प्रथमनी गणत्री करतां बे

उत्तरः—समकीती जीव समजवो शाख. पन्नवणा पद १८ मानी.

प्रश्नोत्तर २११.

प्रश्नः—मन पर्यव ज्ञानवाळो पडीने पाछो मन पर्यव केटले काले पामे?

उत्तरः—जघन अंतर मुहुर्त अने उतकृष्टो अनंत काले पामे (अर्ध पुदगले) पाछुं फरी पामे एमज अवधी ज्ञाननुं समजवुं. शाख जीवाभीगम सुत्रनी तथा पनवणा पद १८ मानी.

प्रश्नोत्तर २१२.

प्रश्नः—पन्नवणा पद २० मां एम कह्युं छे के किल्मीषी जघन पहेले देवलोके जाय अने उतकृष्टो लंतक देवलोके जाय छे. अने भगवती शतक १ उदेशो २ मां एम कह्युं छे के जघन भवनपतीमां अने उतकृष्टो लंतक देवलोके जाय छे तो अहीयां आगळ आ बे बोलनो तफावत छे ते शी रीते समजवुं?

जळ वृधी समजाय छे अने ते गणत्रीये गोस्थूभ द्वीप तथा चंद्र सुर्यनां मंडल बाहिर रहे छे. तत्वार्थ केवली गम्य.

प्रश्नोत्तर १७८.

प्रश्नः—असंख्याता द्वीप समुद्रमां चंद्र सुर्यनी गणतरी शी रीते समजवी ?

उत्तरः—धातकी खंडथी गणतरी करवी. ते धातकी खंडना बार चंद्र सुर्य तेने त्रण गुणा करवा एटले ३६ थया तेमां पाछळनी (बारना) ६ जंबुद्वीपना अने लवण समुद्रना भेलववा एटले सर्व मली ४२ चंद्रमा अने ४२ सुर्य कालोदधी समुद्रना थया तेमज सर्व द्वीप समुद्रना चंद्र सुर्यने त्रणगुणा करीने पाछला भेलववा एटले सर्वनी संख्या आवशे. शास्त्र जीवाभीगमनी छे.

प्रश्नोत्तर १७९.

प्रश्नः—अढी द्वीपना चंद्र सुर्यनुं केवुं संठाण ?

प्रश्नः—चोवीस दंडकमां मारणांतीक तेजस समुदघात गती आश्री कहे छे अने तीजा देव-लोकना पुछा करी त्यां तेजस समुदघात जाडपणे ने पोलपणे पोताना शरीर प्रमाणे कह्युं अने लांबपणे नीचुं अधोगामनी वीजे सुधी अने त्रीछु स्यंभु रमणसमुद्र सुधी अने उर्धलोके बारमा देवलोक सुधी समुदघात करवी कही तो बारमा देवलोके मरीने त्रीजा देवलोक वाला जता नथी तो उर्ध लोके शुं कारणथी तेजस समुदघात करवी कही ?

उत्तरः—त्रीजा देवलोकना देवता अंत समे तेजस समुदघातनो कपाट बारमा देवलोक सुधी करे छे अने त्यांथी पछे जे गतिमां जवु होय त्यां जइने उत्पन थाय छे पण सर्व करे एम नही कोइ जीव करवा आश्री समजवुं.बीजो मत एम कहे छे के कोइ मीत्र देवनी साथे त्यां गया थका त्यांथी काल करे ते आश्री समजवुं.बीजा मतवालानो अर्थ ठीक समजाय छे. तत्वार्थ केवलीगम्य. शास्त्र पनवणा पद २१ मांनी.

प्रश्नोत्तर १८२.

प्रश्नः—केटलाक आशालीयाने बे इंद्री कहे छे ने केटलाक पंचेंद्री कहे छे ते केम ?

उत्तरः—आशालीयो जीव असंज्ञी पचेंद्री मीथ्याती कह्यो छे ते चक्रवृत्यादीकना कटकनो त-
ो मोटा नगरनो नाश थवानो होय त्यारे हेठे उपजे पण अंतर मुहुर्त मांही उपजी वीनाश पामे
म कहयुं छे शास्त्र पनवणा पद १ लामां कहयुं छे.

प्रश्नोत्तर १८३.

प्रश्नः—तांदुल मच्छनी स्थिती केटली ने मरीने क्यां जाय ?

उत्तरः—तांदुल मच्छनी स्थीती ७७ लवनी छे तेमां ११ लव गर्भमां रहे छे पछी जन्म थया प
... लवनुं आयुष्य पाले तेमां महा माठा अध्यवसाये करी अंत मुहुर्तमां काल करी वजू
... तंदुल मच्छ मरी सातमी नर्के जाय. शास्त्र पनवणा पद पहेलुं तेमां कहेल छे.

प्रश्नः—छठे गुणस्थाने २५ क्रीया माहेली केटली क्रीया लाभे ?

उत्तरः—एकवीश क्रीया लागे ते मीथ्यात्व अपचखाण परीग्रहीक इर्यावही ए चार क्रीया व-रजीने २१ लाभे अने थोकडामां बे क्रीया कही तेनी समजण एम छे के आरंभीया क्रीयामां सर्व क्रीया समावेल छे माटे बेज क्रीया कहेल छे. सांख. भगवतीजी तथापन्नवणा पद २३ मां क्रीयापदनी.

प्रश्नोत्तर २१७.

प्रश्नः—सागारो वउतानुं आंतरुं जघन्य उत्कृष्टुं अंतर मुहुर्तनुं शी अपेक्षाये समजवुं ?

उत्तरः—चोथा गुणठाणे आवता दर्शन मोहनीनी प्रकृती खपाववामां तीव्र उपयोग दर्शननो छे ते वखते ज्ञाननो उपयोग नथी ते आश्री अंतर समजाय छे. शाख पनवणाजी सुत्रना पद २३ मांनी दर्शन मोहनी कर्मने उदे दर्शना वरणी कर्म खपावे ते न्याये.

प्रश्नोत्तर २१८.

पोलारमां वशे छे.

प्रश्नोत्तर १८६.

प्रश्नः—पनवणा पद बीजा मध्ये कह्युं के बादर पृथ्वीकाय लोकना असंख्यातमा भागमां छे अने अप्रजाप्ता सर्व लोकमां कह्या ते केम संभवे?

उत्तरः—सुक्ष्म जीवे बादरनुं आवखु बांधेल छे अने ते काल करी पृथ्वीमां आवतां अप्रजाप्ता पणुं लाभे छे तथा समुद्घात आश्री सर्व लोकमां अप्रजाप्ता कहेल छे, इत्यर्थ.

प्रश्नोत्तर १८७.

प्रश्नः—पेहली नर्कें १७८००० योजननी पोलार कही ते केम?

उत्तरः—पनवणाजी सुत्रमां पोलार कहेल नथी पण एम कहेल छे के पेहली नर्कनो पींड १८०००० योजननो छे ते मांहे एक हजार योजन उपर अने एक हजार योजन नीचु मुकीए वचे

वणा पद ३३ मांनी छे.

प्रश्नोत्तर २२०.

प्रश्नः—मनुष्य खेत्रथी अवधीये केटलुं देखे?

उत्तरः—जघन्य आंगुलनो असंख्यातमो भाग उत्कृष्टो लोक प्रमाणे अलोकनी मांही असंख्याता खांडवा अवधी ज्ञानथी जाणे देखे शास्त्र पनवणा पद ३३ मांनी छे.

प्रश्नोत्तर २२१.

प्रश्नः—भवनपातिना देवता खेत्रथी अवधी केटलुं देखे ?

उत्तरः—जघन्य २५ जोजन उत्कृष्टुं असंख्याता द्विप समुद्र जाणे देखे शास्त्र पनवणा पद ३३ मांनी छे.

प्रश्नोत्तर २२२.

पोलारमां वशे छे.

प्रश्नोत्तर १८६.

प्रश्नः—पनवणा पद बीजा मध्ये कहयुं के बादर पृथ्वीकाय लोकना असंख्यातमा भागमां छे अने अप्रजासा सर्व लोकमां कह्या ते केम संभवे?

उत्तरः—सुक्ष्म जीवे बादरनुं आवखु बांधेल छे अने ते काल करी पृथ्वीमां आवतां अप्रजासा पणुं लाभे छे तथा समुदूघात आश्री सर्व लोकमां अप्रजासा कहेल छे, इत्यर्थं.

प्रश्नोत्तर १८७.

प्रश्नः—पेहली नर्के १७८००० योजननी पोलार कही ते केम?

उत्तरः—पनवणाजी सुत्रमां पोलार कहेल नथी पण एम कहेल छे के पेहली नर्कनो पींड १८०००० योजननो छे ते मांहे एक हजार योजन उपर अने एक हजार योजन नीचु मुकीए वचे

ओछु देखे छे तो ते वात कीम मिले ?

तत्रोत्तरः—भवनपति व्यंतर देखे ते स्थूल बादर वस्तु २५ जोजनमां देखे पण सुक्ष्म न देखे अने वैमानीक तो सुक्ष्ममां सुक्ष्म पोतानो जन्म स्थानक जाणे तथा झिणामां झीणा पदार्थ जाणी शके छे ते वीशेश समजवुं; शास्त्र पनवणा पद ३३ मां कहेल छे

प्रश्नोत्तर २२५.

प्रश्नः—पेहेला देवलोकमां अप्रीग्रहीत देवीनां विमान केटला ?

उतरः—छ लाख छे, ते देवीओ माथे धणी नथी, स्वइछाचारी छे ३ ५ ७ ९ ११ मां देवलोक ना देवताना भोगमां आवे छे.

प्रश्नोत्तर २२६.

प्रश्नः—बीजा देवलोकमां अप्रीग्रहीत देवीनां विमान केटला?

त्वार्थ केवलीगम्यः

प्रश्नोत्तर १८९.

प्रश्नः—बादर निगोद करतां प्रथवीना जीव वधारे कीधा तेनुं कारण शुं?

उत्तरः—नीगोदनां शरीर असंख्याता छे पण जीव तो अनंता छे पन्नवणा पद ४ मां कहेल छे ते शरीर समजवा तेथी पृथ्वीना जीव वीशेसीया लेवा.

प्रश्नोत्तर १९०.

प्रश्नः—तिर्यंच जलचरने अक्षरादिक संज्ञाथीं तथा जोतीषीना वैमान देखी जाती स्मर्ण उत्पन्न थये थके नियाणो करे शास्त्र सुत्र पनवणा पद ४ मां श्रावक वृत पाले तथा जलमां रह्या थका समायक पोसा केवी रीते करे?

उत्तरः—तिर्यंच जलचरने जलमां वसवो ते तो तेनो जन्म समुद्रमां छे अने योनी पण तेहीज

आणंतादीक चार देवलोकना देवता पोतानां स्थानके रह्या थका जे देवांङ्गानीं मनमां चींतवणा करे त्यारे ते देवी पण पोताने स्थानके बेठा थका भली बुरी काम चेष्टा मनमां धरती भोग माटे सावधान थाय ते वारे ते देवो तिहांज रह्या मन संकल्पे तुरत सुख पामे. नवग्रैवेक तथा अनुतर विमानना वासी देवोने उपसांत विषय वीकार थाय छे तेथी ते कोइ रीत देवांङ्गाने सेवता नथी तथापी ते मने सुख बीजा देवोथी अनंतु छे. सुधर्म इशान देवलोकनी देवीओ कया देवलोकवाळाने केटला आयुवाळी भोगमां आवे ते देवोने भोगनी इच्छा केवी रीते पुरी थाय तेनो यंत्र लीख्यते.

पेहेला देवलोकनी अपरीग्रहीत देवी कया कया देवलोक सुधी काम आवे छे तेहनो

यंत्र नीचे प्रमाणे.

एक पल्यनी स्थीतीनी देवी.	काय भोगी.	देवलोकनी १
एक पल्यथी मांडी एक समो आधिक १० पल्य सुधीनी देवी.	फरश भोगी.	३

सामायक चारीत्रनी पर्याय पालटी अने सुक्षम संपरायनी नवी पर्याय जोडाणी ते अपेक्षाये चारीत्रनी पर्याय जाणवी साख. पनवणा पद ५ मानी तथा भगवतीजीनी.

प्रश्नोत्तर १९२.

प्रश्नः—बादर पाणी तथा बादर वनस्पति क्यां सुधी हशे ?

उत्तरः—पन्नवणा पद बीजामां कहयुं छे के उर्ध लोके १२२ मा कल्प सुधि विमानने विषे विमान वल्याने विषे विमान पाठडाने विषे अप तथा वनस्पति कही छे.

प्रश्नोत्तर १९३.

प्रश्नः—जीव वीग्रह गतीये वृत तो थको मन रहित छे तो सन्नी केम कहेवाय ?

उत्तरः—वीग्रह गतीये वर्ततो थको संज्ञीनुं आयु वेदे छे माटे संज्ञी कहिये.

प्रश्नोत्तर १९४.

४५ पल्यने एक समा अधिकथी ५५ पल्यनी देवी.　　　　मन भोगी.　　१२

शास्त्र पन्नवणा पद ३४ मानी छे.

सुधर्म देवलोकनी देवीयुंनु गमना गमन	३	५	७	देवलोक सुधी जाय.
इशान देवलोकनी देवीनुं गमना गमन	४	६	८	देवलोक सुधी जाय.

शास्त्र ठाणांगनां ठाणे पांचमे उदेशे पेहेले पांच प्रकारनी परीचारणा कहेली छे.

प्रश्नोत्तर २२८.

प्रश्न:—वैमानीक देवदेवी उंचुं पोतानी धजा सुधी देखे छे तो त्रीजा देवलोकथी मांडी बारमा देव लोक सुधीनी देवांगना पेला बीजा देवलोकमां छे तो त्यांना देवतानेदेवांगनानी इच्छा थाय त्यारे पेला देवलोकनी देवांगना शी रीते जाणे के मने अत्यारे बोलावे छे माटे हु त्यां जाउं ? तथा त्यां शी रीते जइ शके ?

अत्र शंकाः—मनुष्यने मीश्र योनी कही तो जीव उत्पन्न थातां शुक्र श्रोणी अचेत पुद्गलनो अहार करे छे. तो मीश्र कीसी रीते समजणी ?

तत्रोत्तरः—स्त्री सचेत थान छे ने आहार अचेत छे. माटे ते न्याये मीश्र समजवी. शास्त्र पनवणा पद नवमानी.

प्रश्नोत्तर १९६.

प्रश्नः—शीत उश्न सीतोश्न योनी कोने कहीये ?

उत्तरः—उत्पन्न थवानुं थान थंडु ने आहारना पुद्गल पण थंडा तेने शीत योनी समजवी तेमज उश्न सीतोश्न योनी समजवी. शास्त्र पनवणा पद नवमानी.

प्रश्नोत्तर १९७.

प्रश्नः—भाषाना पुद्गल लोकांत स्यात फरसे पण थोडा दुरवालो तथा घणो लांबो बेठेलो

वेलथी छेटा हजार कोष आव्या छे हवे त्यां आगल ते वेलने मुलमांथी कोइ माणस काढी नाखे ते वेलना प्रभावे अत्रे आवेलो कंडीओ उघाडतां एक पान साजुं नीकले नही अने कटके कटका थइ जाय एटले ए गुण कोनो छे? ते वेलनो के हजार कोप उपर वेलनी सत्ता पोची ने एक पान साजुं न नीकल्युं. तेने न्याये देवांज्ञाने उपरना देवता खेंची लेछे माटे वेलानो न्याय बरोबर समजवो.

प्रश्नोत्तर २२१.

प्रश्नः—मनुष्य पचेंद्रीनां शरीरमांथी चौद स्थानकीया शमुर्छिम थाय छे तो तिर्यंच पचेंद्रीनां शरीरमांथी केम थता नथी?

उत्तरः—तीर्यंचनां मलमुत्रादीकमां तिर्यंच समुर्छिम थाय छे एम पन्नवणाजी सुत्र वीगेरेमां कहेल छे पण ते स्थानमां मनुष्य शमुर्छिम उत्पन्न न थाय.

अपेक्षाये विजयाादि विमाननां देवता संख्याता भव करे तथा उतराध्ययन अ० ३६ मानी गाथा २५१ मीमां विजयादी वैमाननां देवतानुं आंतरुं संख्याता सागरनुं पडे छे ते अपेक्षाये तथा वीजीयादी वैमानने वीषे गयेला जीवने संख्याती इंद्री करवी कही छे तो केटलाक संख्याता भव करवानुं कहे छे कोइ सात आठ भव करवा कहे छे कोइ त्रण भव करवानुं कहे छे पण विशेषे सात आठ भव क-रवा संभव छे तत्व केवलीगम्य पनवणा पद १५ मे इंद्री पदमां कह्युं छे.

प्रश्नोत्तर २००.

प्रश्नः—सर्वार्थ सीध वैमानना देवता केटला भव करे?

उत्तरः—एक भव करे अने त्यांथी मरी मनुष्य थइ अवश्य मोक्ष जाय शास्त्र. पनवणा पद १५

प्रश्नोत्तर २०१.

प्रश्नः—पन्नवणाजी सुत्रना पद १५ मा मध्ये पांच इंद्रीनां वीषय कह्या छे तेमां घ्राणेंद्रीनो वि-

नो फरश कठीण छे ते कारणथी ते स्थानमां मनुष्य शमुर्छिम न थाय पण स्वजाति एटले तीर्यंच-नी अशुचीमां तिर्यंच थाय छे अने मनुष्यनी अशुचीमां मनुष्य शमुर्छिम थाय छे इत्यर्थं.

प्रश्नोत्तर २३०.

प्रश्नः—लोकमां सर्व प्रमाणुओ छे तेमां चार फरस कहेल छे ते द्वी प्रदेशीथी मांडी जावत अ-नंत प्रदेशी थाय तो पण चार फरशी छे तो पुदगळमां आठ फरस जीनराज देवे शुं न्याये कह्या?

उत्तरः—सर्व पुदगळ चार फरशी छे पण घणां पुदगळनां संजोगथी चार फर्स उत्पन्न थाय छे जेमके घणां पुदगळ मील्या तेमां उंची नीची श्रेणीरुप रहेल छे तो तेनो फरस खरखरो ला गे तो ते अपेक्षाये खरखरो उत्पन्न थयो, तेमज सरखा सम श्रेणीए होवाथी सूवालो लागे, तेमज घणानी अपेक्षाये भारे, हळवो, फरस लाभे छे एज न्याये चार फरस संजोगथी उत्पन्न थाय छे पण सास्वता रुपे तो चारज छे. शाख पनवणा सुत्रनी.

प्रश्नोत्तर २०३.

प्रश्नः—तिर्थंकर वीना बीजा जीव देवलोक मांहीथी अवधी ज्ञान लेइने आवे के नहि?

उत्तरः— आवे, शास्त्र नंदीजी सूत्रनी तथा कायस्थीती षद्नी तथा जीवाभीगम वीगेरेमां कहयुं छे के अवध ज्ञाननी स्थीती छासठ सागर झाझेरी कीधी छे ते अपेक्षाये अवधी ज्ञान बीजा जीव तिर्थंकर वीना लइने आवे छे. तत्व केवलीगम्य शास्त्र पनवणा पद् १८.

प्रश्नोत्तर २०४.

प्रश्नः—नीगोदना जीव काल थकी केटलो काल रहे ?

उत्तरः—जघन अंतर मुहुर्त अने उतक्रष्टो अनंती काल ते अनंती उसरपणी अनंती अवसरपणी कालथी कायस्थीती रहे अने क्षेत्रथी अढी पुदगल प्रवृतन लगे रहे. शास्त्र. पनवणा पद १८ मे कायस्थीती पद मां कहयुं छे.

प्रश्नः—नीगोदनां जीव एक श्वासोश्वासमां उत्कृष्टा १७॥ भव करे छे तो एक श्वासोश्वासमां केटलो काल जाय?

उत्तरः—संख्याता समयनो स्वास अने संख्याता समयनो उश्वास समजवो २४८० आवलीकामां एक श्वास, उश्वास, समजवो अने एटली आवलीकामां १७॥ भव नीगोदनां जीव करे छे, इत्यर्थं. साख पनवणाजी सुत्रनी.

प्रश्नोत्तर २३४.

प्रश्नः—खुलक भव (नानामां नानो) कोने कहेवो.?

उत्तरः—२५६ आवलीकानी स्थीतीवाला जीवने खुलकभव जीनराज देवे कह्यो छे. पनवणाजी सुत्र मध्ये.

प्रश्नोत्तर २३५.

उत्तरः—पन्नवणाजीमां कह्युं ते ज्ञानीना अवरणावाद बोलवा आश्री समजाय छे कारण के ज्ञानीना अवरणावाद बाले छे पण करणीनो आराधक छे तेथी जघन पहेले देवलोके जाय अने उत्कष्टो छठे देवलोके जाय छे अने भगवतीजीमां कह्युं छे ते तो करणीनो विराधीक छे तथा ज्ञानीना अवरणावाद बोलवावालो छे तेथी जघन भवनपतिमां उपजे छे ते अपेक्षाये समजाय छे; कारण के वीराधीक जघन भवनपतीमां जाय छे आने अेटलो वीशेष छे के ज्ञानीना पण अवरणावाद बोलवावालो छे तथा करणीनो पण विरोधीक छे तो ते मरी भवनपतीमां कील्मी मषीपणे उपजे छे.

अत्र शंकाः—त्यारे कोइ कहे के भवपतीमां कील्मीषी नथी तो कील्मीषीपणे शी रीते उपजे ?

तत्रोत्तरः—भवनपतीमां कील्मीषी छे शास्त्र भगवतीजीनी आशुरी कीलमीषी एवो पाठ छे माटे कील्मीषीपणे उपजे छे.

प्रश्नोत्तर २१३.

छामां उतकृष्टी अहारक समुदघात ४ चार वार करे अने चोथी वार करी अवश्य मोक्ष जाय कह्युं. साख पनवणाजी पद ३६ मानी.

प्रश्नोत्तर २३७.

प्रश्नः—चउदपुरवी नर्कमां जाय के नहि?

उत्तरः—संपुर्ण चउद पुरवना भणनार नर्कमां जाय नहि पण किंचित उणावालो जाय. साख पन्नवणा पद ३६ मानी वृतीनी.

प्रश्नोत्तर २३८.

प्रश्नः—केवली समुदघात करेछे ते थोडी स्थीती वाला केवली समुद घात करे के घणा कालनी स्थीतीवाला केवली केवलसमुदघात करे?

उत्तरः—पेहथाकत्ता ७ मास बाकी रहे त्यारे केवल उपजेलुं छे ते केवली ते वखते सरखा कर्म

दीवस होय अने महा वीदेह क्षेत्रमां जन्म थाय त्यारे भरत इरवृत क्षेत्रमां दीवस होय. माटे ते प्रमाणे जन्म नज थाय. केंमके उत्तम पुरुषनो जन्म मध्य रात्रीए ज होय पण दीवसे न थाय. माटे बेनो जन्म महोत्सव भरत इरवृत क्षेत्रमां जाणवो अने चारनो जन्म महा वीदेह क्षेत्रमां जाणवो. सा ख जंबुद्वीप पन्नती सुत्रनी.

प्रश्नोत्तर २४०.

प्रश्नः—केटलाक लोको एम कहे छे के तीर्थंकरना जन्म वखते हरण गमेषी देव इंद्र आदशे सुघोषा घंटा वगाडी पछे सर्व वैमानमां पोते फरी खबर आपे छे एम परूपे छे तेनुं केम ?

उत्तरः—जंबुद्वीप पन्नतीमां कहेल छे सुघोषा घंटा वगाडया पछे सर्व वैमानमां फरी खवर नथी आपी पण तेहीज घंटामां मोडुं राखी तीहांतीहां देश देशने वीषे मोटे शब्दे ओछवादीक सर्व कार्यनी वात घंटामांने घंटामां करे छे (तार माफक) एटले सर्व देवताओ पोत पोतानी घंटडी मारफत

प्रश्नोत्तर २१४.

प्रश्नः—दर्शनावरणी कर्मने उदे करी कयुं कर्म भोगवे ?

उत्तरः—दर्शनमोहनी कर्म भोगवे छे. शास्त्र पन्नवणा पद २३ उदेशा १ मां छे.

प्रश्नोत्तर २१५.

प्रश्नः—स्त्री उतकृष्टी तेत्रीस सागरनी स्थीतीये अनुतर वैमानमां उपजे के नहीं ?

उत्तरः—उपजे; शास्त्र पनवणा पद २३ उदेसा बीजामां कह्युं छे के नारकी तीर्यंच तीर्यंचणी मनुष्य मनुष्यणी देवता देवी. ए सातमां उतकृष्टी स्थिती कोण कोण बांधे ?

तत्रोतरः—नारकी तिर्यंचणी देवदेवी उतकृष्टो आउखो न बांधे अने बाकीना मनुष्य मनुष्यणी तिर्यंच ए त्रण बांधे छे ते आश्री स्त्री अनुतर वैमानमां जाय छे. सास्त्र पनवणा पद २३ मांनी.

प्रश्नोत्तर २१६.

कार नथी अने जंबुद्वीप पन्नतीमां हरण गमेषीने अधिकारे कह्युं छे के ज्यारे इंद्रमहाराज तिर्थं-
करना ओछव करवा जाय छे त्यारे पहेला हरणगमेषीये बत्रीशलाख विमानमां शाद पाडयो ने क-
ह्युं के तिर्थंकरनो मोहोत्सव इंद्र महाराज करवा जाय छे माटे जेने आववुं होय ते चालजो.त्यारेस-
र्वे देव इंद्र पासे हाजर थया पण कोइये मुळ रुप मुकी आव्या नाहि वळी इंद्रे पण उतर वैक्रीय बना-
वीने पाधरा पालक विमानमां बेठा पण मुळ रुप मुकयुं नहि तो निश्चे थाय छे के मुळ रुपे आवेछे
तेमां संदेह नाहि.

प्रश्नोत्तर २४२.

प्रश्नः—देवता वैक्रीय मांहीथी वैक्रीय रुप बनावी शके के नहि ?

उत्तरः—वैक्रीय मांहिथी वैक्रीय रुप करे त्यारे केटलाक ना कहे छे के वैक्रीयमांहिथी वैक्रीय
न थाय तेनो उत्तर अढी द्वीपमां समकाळे जघन्य २० तिर्थंकरनो ओछव थाय छे तो शक्रेंद्र आदि

प्रश्नः—पनवणाजी सुत्रना पद २३ मा मध्ये कह्युं के तिर्थंकर नाम कर्मनी स्थीती जघन्य उत्कृष्टी अंतो एक कोडा कोडी सागरोपमे बांधे. अने समवायंग सुत्रमां त्रीजे भवे तीर्थंकरनाम गोत्र कर्म निपजावे कह्युं तेनुं केम समजवुं ?

उत्तरः—पनवणाजी सुत्रमां अंतोकोडाकोड कह्युं तेतो फकत तीर्थंकर नाम कर्मना बंध आश्री छे, अने जे समवाय सुत्रनां त्रीजे भवे कह्युं ते तीर्थंकरनाम अने बीजुं गोत्र कर्म ए बेनुं निपजाववुं एटले बंध पाडवा आश्री कहेल छे पण तीर्थंकर गोत्र तो त्रीजे भवेज बांधे शाख समवायंगसुत्र वृतीनी.

प्रश्नोत्तर २१९.

प्रश्नः—पचेंद्री तिर्यंचने खेत्रथी अवधिज्ञान केटलुं होय ?

उत्तरः—जघन्य आंगुलनो असंख्यातमो भाग उत्कृष्टुं असंख्याता द्विप समुद्र देखे शाख पन

प्रश्नः—देवतानुं आवागमन क्यांसुधी होय ?

उत्तरः—भवनपतीथी मांडीने १२ मां देवलोकसुधीना देवतानुं गमना गमन छ ने ठाकर चाकरपणुं छे पण उपरना देवतान आवागमन नथी न ठाकरचाकरपणुं तेने नथी सर्व अहम इंद्र छे ते माटे साख जंबुद्वीप पंनतिना ६४ इंद्र आव्या तेनी

प्रश्नोत्तर २४५.

प्रश्नः—पालक विमान एक लाख जोजननुं छे अने अरुणोदय समुद्रमां एक लाख जोजननो दादरो छे तो तेमां शी रीते सोशरुं नीकळे ?

त्तरः—दादरो सास्वता जोजननो छे अने पालक विमान शास्वता जोजनतुं तंबु माफक सास्वतुं छे पण शंकोचाय छे केमके तीर्थंकर देवना जन्म नगरे आवे छे त्यां संकोच्युं छे साख जंबुद्वीप पन्नती सुत्रनी.

प्रश्नः—असुरकुमार वरजी नवनी कायनादेव तथा वाण व्यंतर देवनुं अवधी ज्ञान केटलुं ?

उत्तरः—जघन्य २५ जोजन अने उत्कृष्टो संख्याता द्वीप समुद्र देखे, पल्योपमनुं आवखुं माटे. साख पवनणा पद ३३ मांनी.

प्रश्नोत्तर २२३.

प्रश्नः—ज्येतिषीना देवता खेत्रथी अवधीय करी केटलुं देखे?

उत्तरः—जघन्य संख्याता द्विप समुद्र जाणे देखे. उत्कृष्टुं संख्याता द्वीप समुद्र जाणे देखे.शास्त्र पन्नवणा सुत्रना पद ३३ मांनी छे.

प्रश्नोत्तर २२४.

प्रश्नः—वैमानीक देवतानुं जघन अवधी अंगुलनो असंख्यातमो भाग कीधो ते शी रीते समजवो? कारणके भवनपती तथा वाणव्यंतर जघन २५ जोजन देखे छे तो भवनपती करतां वैमानीक

ती सूत्रनी.

प्रश्नोत्तर २४८.

प्रश्नः—दक्षिणार्द्ध भरत खेत्रमां तीर्थंकर देव जुगल्या धर्म निवारि ७२ कलादी त्रण प्रकारना वेपार सीखवीने कर्मभूमी प्रवरतावे तो उत्तरार्ध भरतमां त्रण प्रकारना वेपार कोण चलावे?

उत्तरः—खेत्र स्वभावे फलादीक कमी थवाथी जाती स्वभावेज कर्म भूमीपणुं पामे छे. तथा ग्रंथांतरे एम कहेल छे के तीर्थंकरना तथा चक्रवर्तिना पुन्यना प्रेर्या तथा क्षेत्र स्वभावे इंद्र आदेसे देवता आवी उदघोषणा करी कर्म भुमी प्रवरतावे छे. एवुं कल्प सूत्रमां तथा जंबुद्वीप पन्नतीनी वृतिमां कह्युं छे. तत्वार्थ केवलीगम्य.

प्रश्नोत्तर २४९.

प्रश्नः—चक्रवृतीनी स्त्रीओ केटली समजवी?

उतरः—४ लाख छे; अहीं पण उपर प्रमाणे छे. पण एटलुं विशेषके ४,६,८,१०,१२ एटला देवलोकना देवताने भोगववामां काम आवे छे.

प्रश्नोत्तर २२७.

प्रश्नः—देवांगना ए क्यां सुधी उंची जाय छे ने शी रीते भोग भोगवे छे?

उत्तरः—भवनपति वाण व्यंतर ज्योतषीने पेहेला बीजा देवलोकना देवता कायाये करी मनुष्यनी पेठे संभोग करे छे परंतु मनुष्यने स्त्रीनी साथे भोग करतां वीर्य खरे एटले कामथी नीवरती पामे अने देवताने वीर्य होय पण गर्भ धारण वीर्य न होय ने तेनुं वीर्य देवीने पांच इंद्रीपणे प्रगमे. शास्त्र पन्नवणा पद ३४ मानी. त्रीजा चोथा देवलोकना देवो मुख, हाथ, नख, स्तन प्रमुखनां फरशे करी भोग सूख पामे. पांचमा छठा देवलोकनां देवता देवांगनानां रुप देखी संभोग सुख पामे. सातमो आठमा देवलोकना देवता देवांगनानां गीत हास्यना शब्द सांभळीने संभोग सुख पामे उपरांत

प्रश्नः—तीमस गुफामां मांडला ओगण पचाश आलेखे छे ते शी रीते?

उत्तरः—एक भींते २४ अने बीजी भींते २५ कांगणी रत्नथी उत्कृत आंगुले ५०० धनुष्यनुं अकेकूं मांडलुं गोलाकारे छे. मांडले ने मांडले जोजननुं आंतरुं छे गो मुत्रीकाने आकारे आलेखे छे शाख खेत्र शमाशनी, जंबुद्वीप पन्नतीनी, चक्रवृतीना अधीकारे.

प्रश्नोत्तर २५१.

प्रश्नः—वनीता नगरी बार जोजननी लांबी अने नव जोजननी पोहोली कही ते सासवता जोंजननी के केम?

उत्तरः—सासवता जोजननी छे कारण के जंबुद्वीप पनतीमां कह्युं छे के वैताढ्यथी दक्षीणमां ११४ जोजन जइये तथा लवण समुद्रथी उतरमां ११४ जोजन जइये त्यां मध्य भागे वनीता इंद्रना आदेसे बनावेली छे तो ते उपरथी वनीताना पायो (ठेकाणो) शास्वतो समजाय छे.

१० पल्य एक समा अधिकथी ते २० पल्यनी देवी.	शब्द भोगी.	५
२० पल्यने एक समा अधिकथी ३० पल्यनी देवी.	रूप भोगी.	७
३० पल्यने एक समा अधिकथी ४० पल्यनी देवी.	मन भोगी.	९
४० पल्यने एक समा अधिकथी ५० पल्यनी देवी.	मन भोगी.	११

बीजा देवलोकनी अपरीग्रहित देवी कया कया देवलोक सुधी काम आवे छे तेहनो यंत्र.

बीजा देवलोकनी जघन्य स्थितिनी देवी.	काय भोगी.	देवलोकनी २
जघन्य आवखाथी एक समो अधिकथी १५ पल्यनी देवी.	फरश भोगी.	४
१५ पल्यने एक समा अधिकथी २५ पल्यनी देवी.	शब्द भोगी.	६
२५ पल्यने एक समा अधिकथी ३५ पल्यनी देवी.	रूप भोगी.	८
३५ पल्यने एक समा अधिकथी ४५ पल्यनी देवी.	मन भोगी	१०

माटे जोइये तो २७ गाउनां २७ खांडवा तेहीज अने हाथीने माटे स्थथी बमणी जग्या ते ५४ गाऊना चोपन खांडवा हाथीने माटे, एम सर्व मळीने कुल ९० खांडवा रथ घोडाने हाथी माटे समजवा तो बाकी खांडवा १६१८ खांडवा गाउ गाउनां रह्या तो ते जमीनमां ९६ क्रोड पायदळ आ गणीत प्रमाणे खुशीथी समाइ रहे तेमज द्वारकामां वस्ती तेज गणीतने न्याये समाइ रहे छे माटे शास्त्र वीरुद्ध समजवुं नही.

प्रश्नोत्तर २५३.

प्रश्नः—जंबुद्वीप पन्नती सुत्रमां चक्रवार्तिनुं बाण ७२ योजन सुधी उंचु जाय एम कह्युं छे तो चुलहीमवंत पर्वत के जे १०० योजन उंचो छे त्यां तेनुं बाण शी रीते गयुं ?

उत्तरः—चुलहीमवंते देवनो वाश पर्वत उपर छे त्यां बाण नाखवा चक्रवर्ति चुलहीमवंते आवी प्रथम लाख जोजननी काया बनावे छे.

उत्तरः—आशन कंपायमान थाय छे एटले अंग फरकवाथी जाणे छे के मने उपरना देवता यांद करे छे एटले पोते उतर क्रीय बनावी तैयार थाय एटले उपरना देवता त्यां बेठाथका खेंची ले छे.

अत्र शंकाः—त्यां बेठा शी रीते देवांझाने खेंची शके तथा दुर रहया वीर्यना पुद्गळ देवांझा शी रीते ग्रहण करे ?

उत्तरः—जेमके नागरवेलीपाननो वेलो डुंगरादीकमां उत्पन थइ वधेलो छे. अने त्यां आगल तेना रक्षके सवारमां पान उतारी कंडीयामां भरी देशावरमां हजार गाउ उपर मोकल्यो हवे ते कंडीओ वेलथी हजार गाउ आव्यो पण पान तो लीला रह्यां छे तेम एक खंडीत पण थयेल नथी तो ते शक्ती कोनी छे ? वेलनी शक्ती छे के जे वेलना पुदगलो अत्रे आवे छे ते पानमां प्रक्षेपाय छे तेथी लीला रहेछे पण सत्ता वेलनी छे. तेमज उपरना चार देव लोकना देवताना वीर्यना पुग्दल अत्रे बेठेली देवांझा वेलने पानने न्याये ग्रहण करी ले छे माटे पान माफक समजवुं तेमज ते पान

बे नदीओ नीची छे तो तेनुं केम?

उत्तरः—पाणीने नीचे राहे चालवानो स्वभाव छे पण न्याय जोतां एम संभवे छे के जेटलुं उंचेथी पाणी पडे तेटलुं उत्कृष्टु पाणी कोइ वखत उंचु चडे. गंग प्रपात कुंड तथा सींधु प्रपात कुंड ए बे निषढने नीचे सम भुतल छे त्यां वीजय उंडी नथी पछे प्रदेशे प्रदेशे उतरती छे ते कारणथी सीतोदाने मिले छे दाखलो के अत्यारे जे नळ छे तेनो एवो स्वभाव छे के जेटलुं पाणी पेहेलुं नळमां उंचुं चडाव्युं तेटलुं पाणी नीचुं उतरी पाछुं उंचु माळामां चडे छे ते न्याय जोतां तेज प्रमाणे पाणी उंचुं चडी सीतोदाने नदीओ मळवा संभव छे तत्वार्थ केवली गम्य.

प्रश्नोत्तर २५५.

प्रश्नः—जंबुद्वीप पन्नती सुत्रमां कह्युं छे के सीतो सीतोदा नदीनुं पाणी लवण समुद्र मां ४२००० जोजन चाल्युं ने पछी कुटने आफळ्युं ने पछी लवण समुद्रमां मिल्युं कह्युं तो लवण समुद्रने कांठे जगती पासेज सीता सीतोदा नदी तो मिले छे तो शुं समजवुं?

अत्र शंका:—मनुष्यनी अशुचीमां शमुर्छिम थाय छे तो तिर्यंचनी असुचीमां न थवानुं कारण शुं?

तत्रोत्तर:—मनुष्यनी अशुचीमां मनुष्य उत्पन्न थाय छे अने तिर्यंचनी अशूचीमां तिर्यंच उत्प-
न्न थाय छे. शास्त्र पन्नवणाजी सूत्रनां पद १ मध्ये कह्युं छे के आशेळीयो पंचेंद्री तीर्यंच शमुर्छिम
घोडानी लाद वीगेरे अशूचीमां उपजे छे तेमज सर्व तीर्यंच संबंधीनी अशुचीमां तिर्यंच शमुर्छिम
कीडाओ वीगेरे पोताना स्थानमां उत्पन्न थाय छे ने ते घणां वर्ष सूधी जीवे छे पण मनुष्य समु-
र्छिम न थवानुं कारण के मनुष्य संबंधी चौद स्थान छे ते रस सहीत ने कोमळ छे तेथी तेमां उप-
जे छे अने तिर्यंचमां मनुष्य उत्पन्न न थवानुं कारण के ते स्थान घणुं कठीण फरशवाळुं छे माटे
पोत पोतानां अनुकुळ फरशमांज उत्पती समजवी. न्याय. छाण (गोबर) लादनो तीक्ष्ण फरश एवो
छे के सचेत पाणीमां ते पदार्थ नाखवाथी पाणी तुरत अचेत करी नांखे छे एवो तिर्यंचनी अशूची

उत्तरः—जंबुद्वीप पन्नतीमां ते वात नथी अने इंद्र महाराजें पण कह्युं नथी पण आंहि चार मुष्टी लोच करवानो हेतु एम छे के माथाना मध्य भागमां ताल पडवाथी केशने अभावे चार मुष्टी लोच करेल छे तेमज सामुद्रीक शास्त्रमां कह्युं छे के धनवान उत्तम पुरुषने ताल होय. इत्यर्थ.

प्रश्नोत्तर २५७.

प्रश्नः—चउद पूर्वी प्रश्ननी शंकाने माटे महावीदेह क्षेत्रमां अहारकनुं पुतलुं मोकले छे ते दीवसे मोकलता हशे के रात्रीये मोकलता हशे ?

उत्तरः—अत्रेथी पुतलुं दीवसे मोकले पण रात्रीये मोकले नहि.

शंकाः—त्यारे कोइ कहे के दीवसे मोकले त्यारे महावीदेह क्षेत्रमां तो रात्री होय तो आहारकनुं पुतलुं साधुरूपे छे तो तेनाथी रात्रीये केम चलाय ?

उत्तरः—चउद पुर्वी आहारकनुं पुतलुं ज्यारे करे त्यारे सांजे ७ घडी दीवस रहे त्यारे पुनरुक्ती मोकले

प्रश्नोत्तर २३१.

प्रश्नः—प्रदेश अने प्रमाणु ए बेय निर्विभाग रुप छे तो बेयमां विशेषता शी समजवी ?

उत्तरः—जे स्कंध प्रतीबंध निर्विभागनो चरमांत ते प्रदेश अने एकाकी वीकल्पीत स्कंध परीणाम रहीत एवा जे लोकने विषे छुटा वर्ते छे ते प्रमाणुवा जाणवा. सास्र पन्नवणाजी सूत्रनी.

प्रश्नोत्तर २३२.

प्रश्नः—केवली समुद्घात करे छे ते करी थाय छे के स्वभावे ?

उत्तरः—स्वभावे ज थाय छे कारण के करे तो असंख्याता समा नीकली जाय अने आ तो आठ समामां बंध वाले छे वली तेरमें गुणठाणे वेदनी कर्मनी उदीरणा नथी तो उदीरणा कर्या विना शी रीते बने? माटे न्याय जोतां केवली समुद्घात स्वभावे ज थाय छे. शास्त्र पन्नवणाजी सुत्रनी.

प्रश्नोत्तर २३३.

(दुर) रहे छे एम सर्व मली १२२४२ योजननी उत्कृष्टी व्याघात समजवी शास्त्र जंबुद्वीप पन्नती सुत्रनी.

प्रश्नोत्तर २५१.

प्रश्नः—उतराध्ययसुत्रना अध्ययन २६ मां मध्ये कहयुं के ७ तीथी घटे अने ठाणांगजी सुत्रना छठे ठाणे कहयुं के ७ तीथी वधे अने ७ तीथी घटे तेनुं केम?

उत्तरः—चंदपन्नती सुत्रमां कहयुं छे के रुतु संवत्छरथी आदीत्य संवत्छरनी ७ तीथी वधे छे अने रुतुनी अपेक्षाये चंद्र संवत्छरनी ७ तीथी ते अपेक्षाए ठाणांग सुत्रमां ७ तीथी वधवानुं तथा ७ तीथी घटवानुं केहल छे पण कोइ वखते एक तीथी बे वखत न ज आवे जेम बे अष्टमीवत्.

अत्र शंकाः—कोइ कहे के बे अष्टमीवत् बे तीथीयुं न थाय त्यारे ७ दीन वधारता अवश्य कोइ तीथी बबे करवी जोइए तेनुं केम?

प्रश्नः—पन्नवणाजी सुत्रमां साता वेदनी कर्मनी जघन्य स्थिती बार मुहुर्तनीं कही ने उतराध्ययन सुत्रमां अंतर मुहुर्त कही तेतुं केम ?

उत्तरः—पन्नवणाजी सुत्रमां १२ मुहुर्तनी स्थिति कही छे ते संपराय बंधनी कही छे अने उतराध्ययन सुत्रमां अंतर मुहुर्तनी कही ते इरीयावही बंध आश्री जघन्य उत्कृष्टी बे समानी कही ते जघन्य अंतर मुहुर्त बे समानुं समजवुं.

प्रश्नोत्तर २३६.

प्रश्नः—एक जीव सर्व संसार मध्ये अहारक सरीर केटली वार करे ?

उत्तरः—चार वार करे, नारकीने विषे अतिता एटले पुर्वे अहारक समुद्घात केटली करेली छे त्यारे भगवंते कह्युं के कोइए करेली छे तो अने कोइए करी नथी अने करी छे तो जघन्य १-२-३ उतकृष्टी त्रण वार करेली छे एम मनुष्य वर्जी त्रेवीस डंडकने वीषे कहेवुं अने मनुष्यनी पु-

प्रश्नः—सुर्य मांडलेथी पाछो ते मांडले केटला दीवसें आवे ?

उत्तरः—ज० त्रीजे दींवसे ने उ० ३६७ में दीवसे आवे, साख सुर्य पन्नती सुत्रनी.

प्रश्नोत्तर २६२.

प्रश्नः—अढीद्वीपना सुर्य उगता द्रष्टीये केटलेथी आवे ?

उत्तरः—हमेशां सुर्य जेटलो आखा दीवसमां चाले तेना अर्ध भागनी संख्याना जोजनथी द्रष्टीये आवे; न्याय जेमके पहेले मांडले सुर्य होय त्यारे अढार मुहुर्तनो दीवस होय. त्यारे एक मुहुर्तमां ५२५१ जोजन साठीया २९ भाग चाले. आखा दीवसमां सर्व मली ९४५२६ जोजन साठीया ४२ भाग चाले. ने ४७२६३ जोजन साठीया २१ भागे उगतो सुर्य नजरे आवे तेवी रीते आखा दीवसमां सुर्य चालतो होय तेथी अर्ध भाग उगतो सुर्य नजरे आवे इत्यर्थ.

प्रश्नोत्तर २६३.

करवासारु केवल समुद्घात करे छे पण वधारे स्थीती वाला न करे एवी रीते पन्नवणापद ३६ मानी वृत्तिमां कह्युं छे तत्व केवली गम्य.

प्रश्नोत्तर २३९.

प्रश्नः—जंबुद्वीप पन्नतीमां कह्युं के जघन्य बे तीर्थंकरनो जन्म ओछ्व थाय अने उत्कृष्टा चार तीर्थंकरनो जन्म ओछ्व थाय कह्युं ते शी रीते समजवुं ?

उत्तरः—जंबुद्वीपमां जघन्य बे तीर्थंकरनो जन्म थाय ते एक भरत क्षेत्रमां अने एक इरवृत क्षेत्रमां समजवो अने चारनो जन्म थाय तो महावीदेह क्षेत्र आश्री जाणवो.

अत्र शंकाः—कोइ एम कहे के एक भरत क्षेत्रमां अने एक इरवृत क्षेत्रमां अने बे महावीदेह क्षेत्रमां एम चार तीर्थंकरनो जन्म महोत्सव थाय के नही ?

तत्रोत्तरः—ते प्रमाणे न थाय कारण के भरत इरवृतमां जन्म थाय त्यारे महा वीदेह क्षेत्रमां

लेवो पण बाकी अहार लेतां बाधक नथी.

प्रश्नोत्तर २६५.

प्रश्नः—दश वैकालिक सुत्रना अध्ययन त्रीजामां कह्युं छे के साध साध्वी वैदुं करावे तो अनाचीरण दोष लागे तो मुनीये औषध करावबुं के केम ?

उत्तरः—निसीथ सुत्रमां कहेल छे के आराम छतां दवा करावे तो अनाचीरण लागे पण दरदी छतां करावे तो दोष लागे नहि.

प्रश्नोत्तर २६६.

प्रश्नः—पहेला महाव्रतना भांगा केटला ने कया कया ?

उत्तरः—८१ भांगा ते कहे छे १ पृथ्वी २ पाणी ३ अग्नी ४ वायरो ५ वनस्पति ६ बेइंद्री ७ तेइंद्री ८ चौरंद्री ९ पचेंद्री. ए नव प्रकारना जीवनी मने करी हिंस्या करवी नहि. मने करी करावबी

शव्द सांभली हर्षयुक्त थइ ओत्सवादीक कार्य करवा आवे छे पण हरण गमेषी देव वैमानमां फरी ख-बर आपे छे एवुं समजातु नथी. तत्वार्थ केवलीगम्य. शास्त्र. जंबुद्वीप पन्नती सुत्रमां जन्माधीकारे.

प्रश्नोत्तर २४१.

प्रश्नः—देवता तिर्थकरनां ओछव उपर आवे त्यारे मुळगे रूपे आवे के वैक्रीयबनावी मोकले?

उत्तरः—मुळगे रुपे आवे पण वैक्रीय अथवा उत्तर वैक्रीय एटले प्रधान वैक्रीय बनावीने आवे ने जे तिर्थकरने वारे जेटलुं देहमान होय तेटलुंज देहमान बनावीने आवे कारण के नारदमुनी महा विदेह क्षेत्रमां गया त्यारे त्यांना मनुष्यने आश्चर्य लाग्युं कारण के त्यांना मनुष्यनुं देहमान ५०० धनुष्यनुं छे ने नारदमुनीनुं देहमान १० धनुष्यनुं छे तो आश्चर्य लाग्युं वळी रीखभदेवस्वामी ने वारे ५००धनुष्यनुं देहमान छे. तो त्यां आगळ देवता वैकीय कर्या विना आवे तो त्यांना मनुष्यने आश्चर्यलागे माटे मुळगेरुपे आवे पण उत्तर वैक्रीय बनावीने आवे पण मुळगु रुप त्यां रहे एवो आधि-

प्रश्नः—त्रीजा महाव्रतनां भांगा केटला ने कया कया ?

उत्तरः—५४ भांगा ते कहे छे १ अपंवा एटले थोडुं २ बहुवा एटले घणुं ३ अणुवा एटले झीणुं ४ थुलंवा एटले जाडुं ५ चितमंतंवा एटले सचेत. ६ अचितमंतंवा एटले अचेत. ए छ प्रकारना परीग्रहनी चोरी करवी नहि, करावबी नहि, करता प्रत्ये अनुमोदवुं नही, मने करी वचने करी, कायाये करी, एवं ५४ भांगा त्रीजा महाव्रतना जाणवा. शास्त्र दसवीकालीक अध्ययन चोथानी.

प्रश्नोत्तर २६९.

प्रश्नः—चोथा महाव्रतनां भांगा केटला ने कया कया ?

उत्तरः—२७ भांगा ते कहे छे १ देवता सबंधी २ मनुष्य सबंधी ३ तिर्यंच सबंधी मैथुन शेववुं नहि, सेवरावबुं नहि, शेवता प्रते अनुमोदवुं नाहि मने करी वचने करी कायाये करी एवं २७ भांगा चोथा महाव्रतनां जाणवा सास्त्र दसवीकालीक अध्ययन चोथानी.

६४ इंद्र पोत पोतानी हद प्रमाणे जंबुद्विपमां मुळरुपे आवे ने बाकी सर्व ठेकाणे वैक्रीय बनावी रुप मोकले अने ते इंद्र तिर्थंकरने माता पासेथी लइ मेरु पर्वते जातां वचे पांच रुप करे छे तो वैक्रीय मांहीथी वैक्रीय थयुं वळी मेरु पर्वत उपर जन्म महोत्सव करतां फटक रत्नमय ४ बळद विक्रोवे छे माटे ते आश्री वैक्रीय मांहीथी वैक्रीय थाय तेमां संदेह नहि. साख जंबुद्वीप पन्नती सुत्रनी.

प्रश्नोत्तर २४३.

प्रश्नः—देवता समवसरणमां केटलुं मोटुंरुप बनावीने आवे अने भव धारणी शरीरे आवे के नहि ?

उत्तरः—देवता भवधारणी शरीरे आवेज नही ने ज्यारे समोसरणमां आववुंहोय त्यारे जे तिर्थंकरनेवारे शरीर जेटलुं होय तेटलुं वीक्रोवीने समोसरणमां अगर तिर्थंकरना जन्म वखते तथा जे जे कार्यमां आववुं होय त्यारे ते प्रमाणे आवे अने एथी वीपरीत रीते आवे त्यारे आश्चर्यकहेवाय.

प्रश्नोत्तर २४४.

मने करी, वचने करी, कायाये करी, एवं ३६ भांगा छठ्ठा महाव्रतनां जाणवा, साख दसवीकालीक अध्ययन चोथानी.

प्रश्नोत्तर २७२.

प्रश्नः—साधू रात्री भोजन करे तो केटला महाव्रतनो भंग थाय ?

उत्तरः—पांचे महाव्रत भांगे. ते कहे छेः—जीवनी हिंसा थाय, सत्य धर्मनो लोप थाय, वीतरागना मार्गनी चोरी थाय, भोजनथी वीकार थाय, मुर्छाभाव आवे तेथी पांचे महाव्रतनो भंग थाय छे इत्यर्थ.

प्रश्नोत्तर २७३.

प्रश्नः—पेहेली सुमातिनां भांगा केटला ने कया कया ?

उत्तरः—२७ भांगा ते कहे छे—पांच इंद्रीनां त्रेवीस विषय छे ते मांहेथी पुछेलो बोल तथा तेनो बीजो प्रतिपक्षी ए बे वरजीने २१ विषय लाभे अने पांच प्रकारनी सझाय ते कहे छे १ वायणा २

प्रश्नोत्तर २४६.

प्रश्नः—जुगळीयाने भगवंते जंबुद्वीप पन्नती सुत्रमां भद्रीक कह्या छे तो देवकुरु उतरकुरुनां जुगलीया कीलमखीमां केम जाय? कारण के त्यां अवर्णावादादी बोलवानुं कारण नथी.

उत्तरः—जूगलीया जाते भद्रीक छे पण कोइ वखत देवकुरु उतरकुरुमां जंघाच्चारादि मुनीने देखी पुर्व भवना वैरने उदे अवर्णावाद बोले तेथी कीलमखीमां उत्पन्न थाय छे.

प्रश्नोत्तर २४७.

प्रश्नः—कांगणी रत्न आदी १४ रत्न शाशवता के केम ?

उत्तरः—अशाशवता छे कारण के सर्व चक्रवृतीने वारे उत्पन थाय छे वली कांगनी रत्नथी मांडला आलेखे छे तो जो शास्वता होय तो घशाय केम? माटे अशास्वता छे ने पृथ्वीदल छे अने चक्रवृती उत्पन्न थाय त्यारे उपजे ने चक्रवृती न होय त्यारे वीनाश पामे छे. साख जंबुद्वीप पन्न-

कुल ७ भागा त्रीजी सुमतिना जाणवा.

प्रश्नोत्तर २७६.

प्रश्नः—चोथी सुमतिनां भांगा केटला ने कया कया ?

उत्तरः—२ भांगा ते कहे छे १ ओघिक ते पाढीयारी वस्तु लेवी ते २ उपग्राहिक एटले आगरी लेवी ते ए बे दोष वरजीने भंड उपगरण जयणांए लेवा मुकवा एवं २ भांगा चोथी सुमतिना जाणवा.

प्रश्नोत्तर २७७.

प्रश्नः—पांचमी सुमतिना भांगा केटला ने कया कया ?

उत्तरः—१०२४ भांगा ते कहे छे.

उत्तरः—६४००० कही छे.

अत्र शंका–ग्रंथोमां तो १९२००० स्त्रीओ कहीं ते केम ?

तत्रोत्तरः—सुत्र जंबुद्वीप पन्नतीमां ६४००० महीला एम कहेल छे अने ग्रंथवालाए जे १९२-००० कही ते अकेकी स्त्रीनी साथे बबे वारांगना छे ते कारणथी कही छे.

वीशेष शंकाः—ग्रंथवाला कहे छे के ते वारांगना साथे चक्रवृती कारण वसे संभोग करे छे एम कहयुं तेनुं केम ?

तेनो उत्तरः—सुत्र समवायंगजी सूत्रना चोपमनमा समवायंगमां ५४ उत्तम पुरुष कहया छे. तो चक्रवृती उतम पुरुष छे तो उतम पुरुष पाणीग्रहण कर्या वीना भोगवे नही. कारण के लोक वीरुध्द कर्तव्य उतम पुरुष करे नही माटे चक्रवृती वारांगना साथे भोग भोगवे नही इत्यर्थ.

प्रश्नोत्तर २५०.

थे पहोरे वापरे तो प्रायछीत आवे एम कहेल छे तो ते न्याये मुनीराजने संजमार्थे क्षुधा वेदनी बुझाववाने अर्थे चार पहोरमां गौचरी करता बाधक नथी.

प्रश्नोत्तर २८०.

प्रश्नः—दशवीकालीक सुत्रनां अध्येन ७ मां मध्ये मुनीने बे भाषा बोलावी कही अने पन्नवणाजी सुत्रनां पद ११ मां मध्ये चार भाषा बोलता मुनी आराधीक थाय एवी रीते कहयुं तेनुं केम ?

उत्तरः—पन्नवणाजी सुत्रमां जे भाषा कही ते उपदेश तथा चरचा अवशरे मुनी च्यारे भाषा बोले उदाहरण सुयगडांग सुत्रना सुत स्कंध दुजा अध्येन पहेला मध्ये चार दीशाथी आवेला पुरुषनी परुपणा मुनी व्याख्यान द्वारे परुपे ते भाषा खोटी तथा मीश्र छतां ते चारे भाषा बोलता मुनीने आराधीकपणुं कहयुं छे.

प्रश्नोत्तर २५२.

प्रश्नः—जंबुद्वीप पन्नती सुत्र मध्ये कह्युं छे के चक्रवृतीनुं खंधावर बार जोजन लांबु अने नव जोजन पोहोळुं एटली जमीनमां पडाव करे छे कह्युं तो चक्रवर्तिनुं लश्कर ८४ लाख हाथी ८४ लाख घोडा, ८४ लाख रथ, ९६ करोड पायदल एटलुं बधुं लश्कर एटली जमीनमां केम शमाय ?

उत्तरः—जंबुद्वीप पन्नतीमां जे कहेल छे ते सत्य छे तेनुं गणीतः—चार कोषनो जोजन छे तो १२×४=४८ कोष लांबी जमीन थइ अने ९×४=३६ कोष पहोळी जमीन थइ. हवे एक एक कोषनां खांडवा केटला थाय ते ४८×३६=१७२८ कोषः कोषना खांडवा थया. हवे एक कोषना धनुष्य २ हजार धनुष्यनो एक गाउ लांबो पोहोळो छे तो २०००×२०००=४०००००० धनुष्य थया. हवे एक घोडाने उत्कृष्टमां उत्कृष्टी चार धनुष्य जग्या जोइये तो एक गाऊना खांडवामां १०००००० लाख घोडा समाय तो ८४ लाख घोडा नव गाऊनां नव खांडवामां समाय. तेथी त्रण गणी जग्या रथने

उत्तरः—उत्तराध्येनजी सुत्रना अध्येन तेरमामां जाति शमर्णं उत्पन्न थयुं एवो बीलकुल पाठ नथी.

शंकाः—तेवारे कोइ कहे पुर्वना भव शी रीते देख्या

तेनो उत्तरः—जाति शमर्णें करी नथी देख्या कदाचीत जाति शमर्णें करी देख्या होय तो समकीत समझवुं नहि केमके मीथ्यातीने जाति शमर्णें थाय छे साख ज्ञाताजी अध्यन १ हाथीवत पुनः मत कहे छे के नव नीधान छे तेमां काल नामनुं नीधान छे ते नीधाननी पेटीथी जाण्या एटले ते नीधानमां जोतीषना पुस्तको छे ते वांचवाथी गया कालनी वात जाणे एवुं जंबुद्वीप पन्नती मां कहयुं छे के त्रण कालनी वात जाणे तेथी ब्रंमदते पांच भव देख्या छे पण जाति शमर्णं समजवुं नहि तेम ज तेने समकीतनी प्राप्ती नथी कारण के दशा श्रुत स्कंधमां नियाणा कहया छे ते नियाणाना भाव जोतां ब्रंमदतने भव प्रते नियाणु समजाय छे तेथी तेने शमकीत नथी केमजे उ-

अत्र शंकाः—लाख जोजननुं वैक्रीय चक्रवृती करे ते अधीकार क्यां छे?

तत्रोत्तरः—भगवतीजी सूत्रनां शतक १२ मां ने उदेशा ९ मां मध्ये कह्युं छे के नरदेवने वैक्रीय शक्ति घणी छे ते न्याये रुप बनाव्युं तेनुं गणीत. चुलहीमवंत पर्वत प्रमाण आंगुलनो छे अने चक्रवृतीना वैक्रीय शरीरनी अवघेणा लाख जोजननी उच्छेद आंगुलथी छे तो ते लाख जोजनने १००० जोजननो भाग देतां भर्त महाराजनी काया प्रमाण आंगुले १०० योजननी थइ तो चुलहीमवंत पर्वतनो उपलो भाग अने भर्त महाराजानुं मुख बरोबर थयुं अने त्यांथी बाण चंचुं फेंक्युं जेथी ७२ जोजन जइ सभानी मध्योमध्य बाण पडयुं ते शास्त्र वीरुद्ध नथी.

प्रश्नोत्तर २५४.

प्रश्नः—जंबुद्वीप पन्नती सुत्र मध्ये कह्युं छे के सलीला वती विजय १००० जोजननी उंडी छे तो ते क्षेत्रनी नदीओ शीतोदा नदीने शी रीते मळे? कारण के ते नदी उंची छे ने गंगा सींधु ए

गाथा २ पद २ मां टीकामां पालीत श्रावकने सीधातने वीषे कोवींदनाम जीनशास्त्रने वीषे डाह्या कह्या छे तथा भास वालाए पण एम कहयूं छे के निग्रंथ प्रवचने जैन शास्त्र तथा जैन धर्मने वीषे कोवींद नाम डाह्या कह्या तेथी अध्यन २२ गाथा ३२ पद ४ मां राजेमतीने सीलवंता बहु सुया कहया तेमां पण टीकावालाए बहु श्रुता प्रचुर कृत ज्ञानाभ्यास एम कहयुं छे अने भासवालाए बहु श्रुत कह्यो छे ते न्याये जोता श्रावकजीने सीधांत वाचता भणता बाधक नथी.

अत्र शंकाः—उपासक दसांग सुत्रमां आणंद श्रावकना अधीकारमां ८५ अतीचार कह्या छे पण ज्ञानना १४ अतीचार चाल्या नथी तो श्रावकने भणवुं युक्त नही.

तत्रोत्तरः—ज्ञानना अतीचार आवशक सुत्र मध्ये कहेल छे पण उपासकमां नही कहेवानुं कारण के साधु जेम अनुक्रमे सुत्र वांचे भणे छे तेम श्रावकोने नथी ए हेतु माटे अतीचार कहेल नथी केमके श्रावक सर्वने निश्चे भणवानो कल्प नथी साधुवत कोइ कोइ भणे तेने बाधक नथी.

उत्तरः—नदीना पाणीनो एवो स्वभाव छे के प्रथम तो जोर अंतीसे होवाथी पोताना वरण गंध रस फरस ने बदलवापणुं पामतु नथी अने ज्यारे पोतानो वेग कमी पडे छे ते वार वरण गंधादिक गुणने बदले छे ते कारणथी सीतोदा नदी ठेठ सुधी जइ कुटने आफळीने पछे लवण समुद्रमां मिळे एटले खाराश गुणने पामे छे ते आश्री समजवुं—तथा नदि ५०० जोजन उंची समुद्रमां मीले छे. अने समुद्रनुं पाणी तो उंचुं छे नदि नीचेथी जाय छे तो नीचे मीठुं पाणी ने उपर खारु पाणी रहे छे.

प्रश्नोत्तर २५६.

प्रश्नः—केटलाक एम परुपे छे के रीखवदेव स्वामीये दीक्षा लीधी ते वखते चार मूष्टी लोच कर्यो अने पांचमी मुष्टी लेती वखते इंद्र महाराजे कह्युं के हवे उत्तमांग शोभतुं नथी माटे रहेवा दो एम ग्रंथवाला कहे छे तेनुं केम ?

मिले कारण के उतराध्येन अध्येन २९ मां मध्ये कह्युं छे के (तच्चंपुण भवगहणं नाइ कमइ) इतीव चनात् इम कह्युं के क्षायक समकीतवालो त्रण भव ओलंघे नइ जुगलपणुं पामे तो चार भव थइ जाय छे माटे जुगलपणुं न पामे.

प्रश्नोत्तर २८६.

प्रश्नः—खायक समकीतवालो केटला भव करे?

उत्तरः—३ भव करे ते कहे छे पेलो छे तेज बीजो देवतानो त्रीजो मनुष्यनो पछे अवस्य मोक्ष जाय पछी केवलीगम्य उतराध्येन अध्येन २९ मानी अपेक्षाये.

प्रश्नोत्तर २८७.

प्रश्नः—उत्तराध्येन अध्येंन ३४ मामां तथा पन्नवणा पद १७ मामां कहेल छे के लेस्याना स्थान असंख्याता ने लेस्याना प्रणाम जघन्य ३-९-२७-८१-२४३ जावत वहवे केवानो सुं प्रमार्थ.

अने प्रश्न पूछी अंतर मुहरते पाछु आवे छे. शास्त्र जंबुद्वीपपनंतीमांहे कह्युं छे के भरत क्षेत्रमां छ घडी दीवस बाकी रहे त्यारे महावीदेह क्षेत्रमां दीवस उगे ते अपेक्षाये अत्रेथी सांजरे पुतलुं बनावी महावीदेहमां मोकले छे माटे दीवसे मोकले पण रात्रीये नहि पछे तत्वार्थ केवली गम्य.

प्रश्नोत्तर २५८.

प्रश्नः—जोतीषी मंडलने जघन्य व्याघात २६६ जोजननी अने उत्कृष्टी १२२४२ जोजननी व्याघात पडे कह्युं ते शी रीते समजवुं?

उत्तरः—जघन्य व्याघात तो नीषढ नें नीलवंत पर्वत ४०० योजनना उंचा छे अने तेना उपर ५०० योजनना कुट छे अने ते कुट २५० योजनना पंहोळा छे तो तेहीज २५० योजन अने तेना-थी आठ आठ योजन दुर छे एम सर्व मलीने २६६ जोजननी जघन्य व्याघात थइ अने उत्कृष्टी-व्याघात तेमां दसहजार योजननो मेरुपर्वत मुले जाडो छे अने तेथी बने बाजुये ११२१ योजन छेटु

तेटला लेशाना स्थान समजवा इत्यर्थं.

प्रश्नोत्तर २८८.

प्रश्नः—उतराध्येन अध्येन ३४ मानी गाथा ६० मीमां कह्युं के अंतर्मुहुर्त गये अने अंतर्मुहर्त शेष रहे ते वारे लेश्या प्रणम्या थकी जीव परलोकमां जाय तो अंतर्मुहर्त शेष रहे अने अंतर्मूहर्त गये जीव परभवमां शी रीते जाय.

उत्तरः—मनुष्य तीर्यंचने परभवनी लेस्या आव्या पछे अंतर्मुहर्ते मरण पामे एटले लेशानुं अंतर्मुहर्त गया पछी मर्ण पामे अने देवता तथा नारकी पोतानी मुलगी लेशानुं अंतर्मूहुर्त शेष थाकतुं रहे तेवारे मर्ण पामीने परभवे जाय त्यां उपनांप छे ते मुलगी लेशानुं अंतर्मुहर्त भोगवे तेमां प्राप्तीनुं अंतर्मुहर्त न्हानुं जाणवुं अने लेशानुं अंतरमुहर्त महोटुं जाणवुं ते माटेज मनुष्य तीर्यंचमां आव्या बाद परभवनी लेशा संभवे छे अ।हीया अंतरमुहर्तनां असंख्याता भेद समजवा आ प्रमाणे

तत्रोत्तरः—एक तीथीनी घटी ५९—२ पलनी कहेल छे अने दीन रात तो ६० घटीनी थाय छे तो एक तीथी बे दीवसमां शी रीते आवे अर्थात नहीज आवे अने जे छ दीवस ऋतुथी वध्या छे ते अने छ दीवस चंद्र संवत्सरथी वध्या छे ते एटले दर संवत्सरे बेउ मीली १२ दीवस वधे एम अनुक्रमे त्रीसमे महीने एक चंद्रमास अधीक थाय छे. ते अपेक्षाये छ दीन वध्या हता ते त्यां पुरा थया. साख चंद्र पन्नती सुत्रनी.

प्रश्नोत्तर २६०.

प्रश्नः—चंद्र मांडलाथी पाछो तेज मांडले केटला दीवसे आवे ?

उत्तरः—ज०त्रीजे दीवसे, उ०त्रीसमें दीवसे. कारण के बासठ मुहुर्तें मांडलुं फरशी रहे छे माटे. साख चंद पन्नती सुत्रनी.

प्रश्नोत्तर २६१.

प्रश्नः—पुन्य तत्वलोक माहे देशउणुं श्या आश्री लाभे अने पाप तत्व आखा लोकमां श्या आश्री लाभे ?

उत्तरः—उतराध्येन अध्ययेन ३६ में गाथा १०१ मीमां कह्युं छे के (सुहमासवलोगंमी लो-ग देसेय बायरा) एवो पाठ छे तो जे सुक्ष्मनो बोल छे ते पाप प्रकृतीनो उदय छे अने सुक्ष्म सर्व लोकमांही छे तो ते आश्री पाप तत्व सर्व लोकमांही लाभे छे अने बादरनो बोल ते पुन्य प्रकृतीनो उदय छे अने बादर जीव लोक माहे देस उणुं छे ते आश्री पुन्य तत्व लोकमांहि देश उणुं लाभे छे.

प्रश्नोत्तर २९१.

प्रश्नः—उत्तराध्येन सुत्रनां अध्येन ३६ मा मध्ये कह्युं छे के पानवाळा लशणने अनंत काय कह्युं अने पन्नवणाजी सुत्रना पहेला पदमां हरेक लसणने अनंतकाय कह्युं तेनुं केम ?

उत्तरः—बंने कंद आश्रीनेज कहेल छे कारण के पान थाय छे ते तो कंद माथे बाहेर रहे छे

प्रश्नः—पुष्करद्वीपमां चंद्र सुर्य केटलेथी देखाय छे?

उत्तरः—२१३४५३७ जोजन प्रमाणे क्षेत्रथी पुष्करार्धद्वीपना मनुष्य ने पुर्व दीसीये उदय पामता अने पश्चिमे अस्त पामता एटलेथी देखाय छे, शाख खेत्र शमाशनी.

प्रश्नोत्तर २६४.

प्रश्नः—दश वैकालीक सुत्रना अध्ययन त्रीजा मध्ये कहयुं के रायपींड लीये तो मुनीने अणाचीरण दोष लागे छतां अंतगड सुत्रमां गौतम स्वामी श्री देवीने घेर गया तथा छ अणगार देवकीने घेर गया तेनुं केम?

उत्तरः—आ कायदो छेला जीनराजना साधूजीने माटे छे, पण प्रभु वीद्यमान छतां गौतम स्वामीने बाधक नथी तथा बावीश तीर्थंकरनां साधुने वांधो पण नथी. तेमज छेला जीनराजना साधूजीने रायपींड न लेवो एटले आहारमां राजा समान कंद मुल पाकादीक बलीष्ट आहार न

खे तेमज उंचा नीचा पृष्ट वगेरे घणा भांगा छे तो ते प्राणीने सर्व आत्मप्रदेस खुला थया समजवा के जे तरफ देखाय ते तरफना खुला समजवा ?

उत्तरः—ते प्राणीना सर्व प्रदेश खुला थयेला छे कारण के जीनराजे कहेल छे के (सवेणं सवं बंधइ) ते न्यायथी सर्व प्रदेस द्वार बांधे अने सर्व प्रदेशे छुटे.

अत्र शंकाः—त्यारे सर्व दिसाए केम नथी देखतो.

तत्रोत्तरंः—जे तरफ देखे छे. ते तरफना प्रदेस सर्व खुला थयेल छे. कारण के एक प्रदेशने असंख्य प्रदेश फरस्या छे. ने असंख्यने एक फरस्यो छे. दृष्टांत केशाररनां एक भागमांहुइ लागवाथी सर्व प्रदेस चलायमान थया वीशेषे वेदवामातो ज्या लाग्यु छे त्याज आवशे ते न्याये सर्व प्रदेसे सामान्य पणे क्षयोपमथयो तो ते प्राणीने जे तरफनो वीसेषे क्षयोपसमथयों ते तरफना आत्मप्रदस खुला थया ने ते तरफ अवधीये देख्युं तत्वार्थ केवली गम्य ॥

नही, मने करी अनूमोदवुं नही. एवं २७ ए नव भांगाने वचन करी हिंसा करवी नही, करावबी न हि, करता प्रते अनुमोदवुं नाहि, एवं २७ ए नव भांगाने कायाए करी, हिंसा करवी नहीं, करावबी नही, करता प्रते अनुमोदवुं नहीं एवं २७, एवं सर्व मळी कुल ८१ भांगा पेहेला महावृतनां जाणवा. साख दसवीकाली सुत्रना अध्ययन चोथानी.

प्रश्नोत्तर २६७.

प्रश्नः—बीजा महा वृतनां भांगा केटला ने कया कया ?

उत्तरः—३६ भांगा ते कहे छे १ क्रोध २ लोभ ३ भय ४ हास्य ए चार प्रकारनुं जुठुं बोलवुं नहि, बोलावबुं नहि, बोलता प्रते अनुमोदवुं नहि, मने करी, वचने करी, कायाये करी. एवं ३६ भांगा बीजा महावृतनां जाणवा. साख दशवीकालीक अध्ययन चोथानी.

प्रश्नोत्तर २६८.

प्रश्नः—नंदी सुत्रमां बे प्रकारनुं अवधि ज्ञान कह्युं छे ते बाह्याज्यनें अभ्यंतर ते शी रीते समझवुं ?

उत्तरः—अभ्यंतर एटले आखा भव सबंधी समजवुं अने बाह्ज्य ते नवुं उत्पन थवुं ते देव नारकीने अभ्यंतर मनुष्यने बेय लाभे अने तीर्यंचने एक बाह्ज्य लाभे एटले त्रीयंच विना बीजा जीवने परभवथि साथे अवधी होय.

प्रश्नोत्तर २९७.

प्रश्नः—अनुयोघ्वर सुत्रमां संख्याताने माटे अर्थमां. अनवस्थीत. सलाखो. प्रतीसलाखो महासलाखो कह्यो छे. अने कह्युछेके जंबुद्धिपजे वडोपालो कलपी मांहे सरसवनादाणां भरी पछे एक दाणोघीयेने एकदाणो समुद्रे एम मुकताजवुं. अने ज्यारे ते पालो खाली थाय त्यारे पाछो तेद्विप समुद्रनो सलाखोपालो कल्पवो वीगेरे चारे पालानो अधीकार छेतो अत्रे तर्क के ज्या छेलोदाणो गयो

प्रश्नोत्तर २७०.

प्रश्नः—पांचमा महाव्रतना भांगा केटला ने कया कया!

उत्तरः—५४ ते कहे छे १ अपंवा एटले थोडो २ बहूवा एटवे घणो ३ अणुवा एटले झीणो ४ थूलंवा एटले जाडो ५ चितमंतंवा एटले सचेत ६ अचितमंतंवा एटले अचेत ए छ प्रकारनो परिग्रह राखवो नहि, रखाववो नाहि, राखता प्रते अनुमोदवुं नाहि, मने करी, वचने करी, कायाये, करी एवं ५४ भांगा पांचमा महाव्रतनां जाणवा साख दसवीकालीक अध्ययन चोथानी.

प्रश्नोत्तर २७१.

प्रश्नः—छठा व्रतना भांगा केटला ने कया?

उत्तरः—३६ भांगा ते कहे छे १ असणंवा २ पाणंवा ३ खाइमंवा ४ साइमंवा ए आहार बोल मांहेथी एके आहारनुं रात्री भोजन करवुं नाहि कराववुं नाहि रात्री भोजन करता प्रते अनुमोदवुं नाहि

ख्यतो न पामीए हवे समजवानुं के जंबुधीपजेवडो पालो तेमां सरसव भरि धीप समुद्रे मुकता अ-
संख्याता योजननां विस्तारवाला द्विपेछे लोदाणो पोचे त्या पालो जंबुद्विप जेवडोज कल्प वो पण
असंख्याता योजननो पालो कोइ ठेकाणे कलपवो नही केमके असंख्याता योजननां धीपमां नीयमा
असंख्याता दाणा समाय माटे जंबुद्वीप जेवडाज सर्व ठेकाणेपाला (असंलप्पा) घणाज करता छे-
ल्लोदाणो ज्या आवे ते उतकृष्टो संख्यातो समजवो अने ते उपर एक दाणो मुकीए एटले असं-
ख्यातु थाय इत्यार्थ ?

प्रश्नोत्तर २१८.

प्रश्नः—अनुयोग द्वार सुत्रमां कहयुं के एक लाख जोजननें लांबो पहोलो अने एक हजार
योजननो उंडो एवो कल्पीतपालामां सरसवना दाणा केटला समाइ शके अने तेनी संख्या केटली ?

उत्तरः—संख्याता दाणा सरसवना समाय अने केटली संख्या तेने माटे ग्रंथमां कुल ४८ आं

पुछणा ३ परियटणा ४ अणुपेहा ५ धम्मकहा. एवं पांच इरजा सुमति पोताना शरीरनी छाया प्रमाणे शोधे. एवं कुल २७ भांगा पहेली सुमतीनां जाणवा.

प्रश्नोत्तर २७४.

प्रश्नः—बीजी सुमतिना भांगा केटला ने कया कया ?

उत्तरः—९ भांगा ते कहे छे १ क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ ५ हास्य ६ भय ७ वाचालपणु ८ त्रिकथा ९ अण उपयोग ए नव बोल वर्जवा एवं नव भांगा बीजी सुमतिना जाणवा.

प्रश्नोत्तर २७५.

प्रश्नः—त्रीजी सुमतिना भांगा केटला ने कया कया ?

उत्तरः—७ भांगा ते कहे छे-गवेखणाना ३२ दोष वर्जवा ए पहेलो भांगो, ग्रहण एषणाना १० दोष वर्जवा ए बीजो भांगो, परिभोग एषणाना ५ भांगा ते ५ मांडलीयानां दोषवर्जवा, एवं

प्रश्नोत्तर ३००.

प्रश्नः—देवलोकादीक सास्वता कहया छे तो अनुयोग द्वार सुत्रमां सादी प्रमाणीकनां ७५ बोल चाल्या तेमां देवलोकादीक असास्वता कहया तेनुं केम ?

उत्तरः—द्रव्य तो देवलोकादीक सासवता छे पण असंख्यात काले पुदगल बदलाय छे एटले (प्रयाय पलटाय छे) ते आश्री असास्वता कहेल छे इत्यर्थ.

प्रश्नोत्तर ३०१.

प्रश्नः—अनादी कालना मीथ्याति जीव प्रथम पहेल वेलुं समकीत क्या दंडकमां पामे ?

उत्तरः—सर्वथी पहेलुं समकीत मनुष्य सीवाय बीजा दंडकमां उपजे नही साख अनुयोग द्वार मांसनी वादनां २६ भांगा चाल्या छे तेमां उदय ते मनुष्यनो १ उपसम कषायनो २ खायक समकीतनो ३ क्ष्योपसम इंद्रीनो ४ प्रणामीक जीवनो ५ ए रीते बधा ५ भांगा वस्ता कहेल छे तो ते

१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	गुणाकार करवा.
१०	४५	१२०	२१०	२५२	२१०	१२०	४५	१०	१	१०२४ भांगा सर्व.
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	भागाकार करवा.

१ (अनापातं अशंलोक) एटले कोइ आवता जाता न देखे त्यां परठवे. २ (परानुंपघाती) एटले पोताना जीवनी तथा परना जीवनी व्याघात उपजे त्यां न परठवे ३ (शम) एटले उंची नीची भुमी उपर न परठवुं. ४ (अझुशीर) एटले पोली भुमीका उपर न परठववुं. ५ (अचीर काल कृतं) एटले थोडा कालनी अचेत भुमिका होय त्यां न परठववुं. ६ (दुरमोगाढे) एटले जघन्य चार आंगुल उंडी भुमिका होय त्यां न परठवुं. ७ (वस्तीर्णं) एटले एक हाथ लांबी पहोळी अचेत भूमिउपर परठवुं. ८ (नाशने) एटले स्थानकनी नजीक न परठववुं. ९ (बीलवजीयं) एटले उदिरादीक बील होय त्यां न परठववुं १० (त्रशपाण बीय रहियं) एटले हरिकाय अंकुरा बीज त्रशप्राणी न होय त्यां

णानां पुदगल बदलाइ जाय साख भ० स० ५ उ० ७ मा मध्ये कह्युं छे.

अत्र शंकाः—असंख्याता समयनी एक आवलीका थाय छे तो आंही उत्कृष्टी स्थीती आवलीकाना असंख्यातमां भागनी कही तो जघन्य उत्कृष्टीमां कांइ फेर न पड्यो तो आंही वीशेषे शुं समजवुं ?

तत्रोत्तरः—श्री अनुयोग द्वारमां असंख्याताना नव भेद कहेल छे ते माहेलो चोथो भेद परीत जघन्य असंख्यातानी आवलीका समजवी ते आश्री वीशेषे उत्कृष्ट समजवुं इत्यर्थ.

प्रश्नोत्तर ३०३.

प्रश्नः—क्षयोपसमभावे केटला कर्मलाभे ?

उत्तरः—चारकर्म ते, ज्ञानावर्णी, दर्शना वर्णी, मोहनी, अंतराय, ए चार कर्मनो क्षयोपसमथाय शाख अनुयोगव्दार सुत्रनी.

प्रश्नोत्तर २८१.

प्रश्नः—उत्तराध्येन सुत्रनां बारमा अध्येनमां हरकेशी मुनीनी वयावच्च जक्ष करे छे ते संबंधमां मुनीने दोष लागे छे के नहिं ?

उत्तरः—जक्षपोते भक्ती करवानां भावथी वयावच करे छे. ते वचावच कांइ मुनीनां शरीर सबंधीनी करतो नथी एटले पोते फरश करी दाबवा चांपवा रुप वयावच करतो नथी परंतु मुनीनुं बिभित्छ अनीष्ट रुप देखी कोइ अनार्य ते मुनीनी दुगंच्छा करता नीवारवारुप भक्ति वयावच करे छे तेमां पण मुनी मन वचन क्रमणाये रुडुं जाणता नथी जेथी करी मुनीने कांइ पण दोष नथी.

प्रश्नोत्तर २८२.

प्रश्नः—ब्रंमदत चक्रवृतिए पुरवला पांच भव देष्या तेथी केटलाक एम कहे छे के जाति शमर्णें करी देख्या तो तेने समकीतनी प्राप्ती थइ के केम तेनुं शुं शंभवे छे ?

प्रश्नः—जंबुद्वीपलाख जोजननो कहयो छे ते केवा आंगुलथी ?

उत्तरः—प्रमाण आंगुलथी ते उछेद आंगुलथी हजार गुणो मोटो जाणवो शास्त्र अनुयोग द्वार.

प्रश्नोत्तर ३०७.

प्रश्नः—जीवाभिगम सूत्र तथा पनवणाजी वीगेरे सुत्रोमां छमुर्छिम मनुष्य सर्व अप्रजाप्ता कहेल छे छता अनुयोग द्वारे, वीशेष, अविशेषना भांगा चाल्या त्यां वीशेषमां छमुर्छिम मनुष्यने अप्रजाप्ता अने प्रजाप्ता कहया ते केम ?

उत्तरः—सर्व छमुर्छिम मनुष्य तो अप्रजाप्ताज छे पण आंही बे बोल पदपुर्ण समजाय छे तथा सर्व अप्रजाप्ता साडी त्रण प्रजा बांध्या विना मरे नहि ते अपेक्षाये आंही प्रजाप्ता कहेल छे.

प्रश्नोत्तर ३०८.

प्रश्नः—उपसम श्रेणी वाला जीवने खायक समकीत होय के नही ?

त्तराध्येननो न्याय जोतां अवीतता काम भोगने वीषे लागेली छे तेथी मुनिनो उपदेश वीलापरुप थयेल छे तो ते न्याय जोता पण शमकीत समजातुं नथी तेम जे अवीततामां मरी सातमीए गयो पछे तत्व केवलीगम्य.

प्रश्नोत्तर २८३.

प्रश्नः—मृगा पुत्र केना वारामां थयेल छे?

उत्तरः—पहेला तिर्थंकरना सासनमां थयेल छे साख उत्तराध्येन अध्येन १९ मो पंच महाव्रुत सांभर्या ते अपेक्षाये जाणवुं अने दीक्षा पण सीत रुतुमा लीधी (जहाइमंइयंसीयं) पाठ छे.

प्रश्नोत्तर २८४.

प्रश्नः—श्रावकने शीद्धांत वांचवा तथा भणवा के नही.

उत्तरः—श्रावकजीने शीधांत वांचता भणता बाधक नथी केमके उतराध्येन अध्ययन २१ मो

प्रश्नोत्तर ३१०.

प्रश्नः—खेत्र अने खेत्रनी फरसना ए बेमां फेर स्युं समजवो ?

उत्तरः—जेटला खेत्रनां प्रदेश अवगाढ करेला छे ते क्षेत्र समजवुं. अने फरसनातो एक प्रदेशने जघन पोतानी कायना ३ पर कायना ४ स्वकायना उत्कृष्टा छ फरशे अने परकायना, ७ फरशे, ते पोते भींतरना प्रदेश संयुक्त होय तेथी सात प्रदेश फरसे छे साख अनुयोगद्वार सुत्रनी तथा भगवतीजीनी चोरदीसे एक एक उपरनो एक हेठेनो १ एवं ६ जाणवा अने सात होय तो १ सयुक्तनो लवो इत्यर्थ. ॥

प्रश्नोत्तर ३११.

प्रश्नः—अनुपूर्वि द्रव्यनां पांच भागाते खेत्रथकी. लोकनो असंख्यातमो भाग १ संख्यतमो भाग, २. घणा असंख्याता, ३ घणा संख्याता; ४ सर्व लोक, ५, ए पांच भेद सी अपेक्षाए लाभे;

वीशेष शंकाः—व्यवहार सुत्रमां कहयुं छे के त्रण वर्षना दीक्षीतने कल्पे आचारंग भणावो ए म अनुक्रमे वीश वर्ष सुधी कहेल छे तो श्रावकने दीक्षा नथी तो भणवुं केम कल्पे?

तेनुं समाधानः—ए कायदो स्थीवर कल्पीने छे पण जीन कल्पीने तथा कल्पातीतने माटे नथी धना अणगारवत माटे व्यवहारमां कहयुं छे ते तो साधुना कायदा माटे छे पण श्रावक सुज्ञ होय तेने बाधक नथी केमके ठाणांग ठाणे १० मे कहयुं छे के पछाकडा श्रावक पासे साधु प्रायछीत लीए तो जो श्रावक शास्त्रनो जाण होय तोज जीनराज देव आज्ञा आपे माटे ते न्याये श्रावकने सुत्र वांचता भणता बाधक नथी सुत्रोमां श्रावकोने प्रव्रजा पण कही छे पछे तत्वार्थ केवलीगम्य.

प्रश्नोत्तर २८५.

प्रश्नः—खायक समकीतवालो जीव जुगलपणुं पामे के नही ?

उत्तरः—जुगलपणुं न पामे कारण के जुगलपणुं पामे तो च्यार भव थइ जाय तो ते वात न

प्रश्नः—दस भवनपतिना दस डंडक जुदा जुदा कह्या अने वैमानीक तथा वाणव्यंतरनो एक एक डंडक भेगो कहयो तेनुं शुं कारण.

उत्तरः—जेनी जाती जुदी जुदी होय अने स्थिति पण जुदी जुदी होय तो तेनो डंडक जुदो पडे.

अत्र संकाः—वैमानीकनी स्थिति जुदी जुदी छे अने वाणव्यंतरनी जाति जुदी जुदी छे तो तेनो डंडक जुदो कम न पडयो.

तत्रोतरः—ते बंनेमां एकेक बोल जुदो छे एटले पडे नहीं पण बंने बोल जुदा जुदा होय तोज डंडक जुदो पडे.

विषेस संकाः—तीर्यंच पचेंद्रीनी जाति जुदी जुदी छे अने स्थिति पण जुदी जुदी छे तो तेना डंडको जुदा केम न पडया.

तेनो उत्तरः—तीर्यंचमां देवता प्रमाणे नथी फक्त तेमां तो भेद पाडवानुं कारण समजण माटे छे

उत्तरः—बहवे केवानो प्रमार्थ एम छे के लेशाना प्रणामने त्रण २ गुणा आठ वखत करता ६५६१ थाय छे एटला प्रणामना स्थान कह्या छे.

अत्र शंकाः—आठ वखत करवानुं शुं कारण ?

तत्रोत्रर:—जीव पर भवनु आवखुं आठ आकर्षा ए बांधे छे माटे एटला प्रणामना स्थान छे. कारण के प्रणाम वीना परभवनुं आवखुं जीव बांधतो नथी माटे अने लेशाना स्थान असंख्याता कह्या जीव आश्री थान समजवा.

शंकाः—जीव अनंता छे तो असंख्याता स्थान केम संभवे ?

तेनो उत्तरः—नीगोदना जेटला शरीर (असंख्याता छे) तेटला लेशाना स्थान समजवा. एक शरीरे अनंता जीव छे पण सर्व जीवोनुं लेशानो स्थान एकज समजवो ते आश्री असंख्याता स्थान लेशाना समजवा. बीशेष उदारीक प्रत्येक शरीरने वैक्रीय शरीर लोकमां जेटला छे.

प्रश्नोत्तर ३१६.

प्रश्नः—भगवतीजी सुत्रमां तथा पनवणाजी सुत्रना पद १२ मामां तथा अनुयोग द्वार मध्ये कहयुं छे के एक जीव आश्री अहारीक शरीरना मुकेलगा अनंता कहया छे अने श्री पनवणाजी सुत्रना पद ३६ मामां तथा जीवा भेगमजी सुत्रमां एम कहयुं छे के अहारीक शरीर कर्या तो जघन्य. १. २. ३. उत्कृष्टा. ४ कह्या तो भगवतीजी वीगेरे मां अनंता मुकेलगा कह्या ते सुंन्याये समजवुं.

उत्तरः—एक जीवे अहारीक शरीर त्रण करेल छे पण तेना खांडवा जुदाजुदा. अनंता पडेला छे तेआश्री अनंता मुकेलगा भगवतीजी वीगेरेमां कहेल छे तेनुं कारण के बीजा पुदगलमां भल्या (मिल्या) नथी माटे ज्या सुधी भले नही तिया सुधी एक खांडवाआश्री पूछे तो पण अहारीक कहेवाय ते न्याये सर्व जीव आश्री समजवुं.

भावार्थ लघु संघेणी ग्रंथमां कहेल छे इत्यर्थ.

प्रश्नोत्तर २८९.

प्रश्नः—उतराध्ययन सूत्रना अध्येन ३४ मा मध्ये कहयुं छे के तेजु लेश्यानी उत्कृटी स्थिती ते पदम लेश्यानी जघन्य स्थीती कही छे तो ते पहेले बीजे देवलोके एक तेजुलेश्या छे अने ते दे-वतानी उत्कृष्टी स्थीती बेसागर झाझेरी छे. तो आही बेसागर झाझेरी पदम लेश्यानीज जघन्य स्थीती थइ तो त्रीजे देवलोके एक पदम लेश्या छे अने त्यांना देवतानी जघन्य बेसागरनी स्थीती छे तो ते बेसागरवाला देवताने कइ लेश्या कहेवी.

उत्तरः—त्रीजे देवलोके जघन्य आवुखावालाने तेजु लेश्या लाभे परतर पेला आश्री पण अ-ल्प माटे गवेखी नथी साख जीवाभेगम वृतिमां तथा संघेणीनी.

प्रश्नोत्तर २९०.

घडी उपरांत राखे तो असंख्याता समुर्छिम जंतुनी उत्पती कहेल छे तो रातवासी राखवुं केम कल्पे ?

उत्तरः—वडी नीत. लघु नीत. दो घडी उपरांत राखवानो वेहवार मुनीनो नथी. पण आंहीं एम समजवुं के एकमतवाला एम कहे छे के ज्यां आगळ सुर्यनो प्रकाश दीवश आग्रामां पडतो नथी त्यां परठववुं नहीं एम कहे छे. पण वीशेष एम समजाय छे के कोइ मुनीराज छे तेने सुत्र ज्ञान थी आ सुर्यनो प्रकाश थयेल नथी. तो ते मुनीं परठवे तो प्रायछीत आवे. कारण के परठववानी वीधी उत्तराध्येन अध्येन २४ मां मध्ये कही छे ते घणीज कठण छे माटे परठववानी वीधीं जाणे ते दीज परठवे एहवा हेतुथी कहेल छे. इत्यर्थ.

प्रश्नोत्तर ३१२.

प्रश्नः—साधु साधवीने काचनां भाजन वापरवा कल्पे के नहि ?

उत्तरः—नकल्पे साख निसीथ सुत्रनां उदेसा ११ मांमां कहेल छे के काचनुं पात्र वापरे तो

तो तेमां असंख्याता जीव संभवे छे पण कंदमां तो अनंता जीव समजवा.

प्रश्नोत्तर २९२.

प्रश्नः—स्वार्थ सीध विमानने फरता चार विमान केवे आकारे रहया ने केवा छे?

उत्तरः—त्रण खुणीया विमान छे अने स्वार्थ सीध विमानने फरता गोळाकारे रहया छे,

प्रश्नोत्तर २९३.

प्रश्नः—सींद्ध सिल्ला जाडी केटली ने केटला भागमां जाडी छे?

उत्तरः—मध्य भागे आठ जोजन जाडीने फरती ८ जोजन एटलामां सरखी छे ने पछी परदेशें २ उतरीने मांखीनी पांख जेवी पातलीछे साख उतराध्येन अध्येन ३६ मानी.

प्रश्नोत्तर २९४.

पश्नः—नंदीसुत्रमां अवधि ज्ञानना घणा भांगा चाल्या छे. तेमां आगल देखे. पाछल न दे-

कल्पे नाहि पण छेदेलुं त्रण चार कटका (टुकडा) थयेला होय तो कल्पे. कारण के तालवृक्षनां फळनो आकार वृषण जेवो होवाथी तेमज केळानो आकार इंद्री जेवो होवाथी आखुं साध्वीने लेवुं न कल्पे. शास्र सुत्र नीसीथ तथा वेद कल्पनी छे.

प्रश्नोत्तर ३२२.

प्रश्नः—मुहुपति दोरा विन्या बांधवी कल्पे के केम ?

उत्तरः—न कल्पे शास्र महानिसिथ सुत्रना अध्येन सातमामां कहेल छे के दोरा वीन्या मुहुपति हाथमां राखे अगर कानमां घाले तो एक उपवासनो प्रायछीत लागे माटे दोरा सहीत मुहुपति बांधवी कल्पे छे.

प्रश्नोत्तर ३२३.

प्रश्नः—जीनराज देवे श्री ठाणांगजी सुत्रमां कहयुं के (कीवए) के० कृपणने दीक्षा न देवी

प्रश्नोत्तर २९५.

प्रश्नः—नंदीसुत्रमां कह्युं छे के खेत्रआश्री. मनुष्यने आवधी ज्ञान उत्पन्न थयुं छे तो ते ठेकाणे खेत्रबल समजवुं के आत्मबल समजवुं. जो खेत्र बल होय तो बीजा बेसे तो ते पण देखे. अगर आत्मबल होय तो बीजे ठेकाणे देखवुं जोइये तो शुं न्याये समजवुं?

उत्तरः—खेत्र काइ कोइ धणीने बल करतुं नथी. पण सत्ता आत्मानी छे कारण अवधी ज्ञानना ६ भांगा छे तेमां (अणाणुं गामी) अवधी छे. तेनो एवो नीत्य भाव छे के जेठे काणे उपजे तेजठे काणे देखे पण बीजी जग्याए साथे न जाय ते प्राणीने (अणाणुंगामी) अवधीनो क्षयोपसम थयेल छे माटे त्यांज देखे छे पण खेत्र बल ते धणीने नीमत कारण रुप छे उपादान कारणने अणु जाइ पणे आत्मानो क्षयोपसम समजवो तत्वार्थ केवलीगम्य.

प्रश्नोत्तर २९६.

प्रश्नोत्तर ३२५.

प्रश्नः—मुनीराज केटला जणाने दीक्षा न आपे ?

उत्तरः—२६ जणांने न आपे ते कहे छे १ वेश्याने २ वेस्याना पुत्रने. ३ नेत्रहींणने. ४ हाथ पगनी खोटवालाने. ५ छीनकानवालाने. ६ छीननाक. ७ छीनहोठ. ८ कोढीयो ९ मुंगाने. १० बेहेराने. ११ जन्मनपुसकने, १२ महाक्रोधीने. १३ पाखंडीने १४ घणा दोषसेवीतने १५ जन्म रोगीने. १६ घणा मोहवालाने. १७. गढामीथ्यातीने. १८ अणउलखीताने. १९ कृपणने. २० बलहीणने. २१ कुलहीणने. २२ जाती हीणने. २३ बुद्धि हीणने. २४ अज्ञात कुलने. २५ निंदनींक कुलने. २६ मंत्रवादीने एवं २६ जणाने दीक्षा आपवी नही तथा प्रकारांतरे घणां भेद छे साख नीसिथ तथा महानीसीथ ठाणांग सुत्र वीगेरेनी,

॥ प्रथम भाग समाप्त. ॥

त्यांतो तेद्धिप समुद्र असंख्याताजोजननो छे तो तेमां दाणा पग असंख्यात्रा मायत्र तो उत्कृष्टो संख्या तो सीरिते संभवे. ?

उत्तरः—जंबुद्धिपमां संख्यता सरसवनां दाणा समाय पण अशंख्याता समाय नही. तेपण माज्ज म संख्याता समजवा. एवा जबुद्धिप जेवडा घणा पालाभराय पण उत्कृष्टो संख्यातो थाय नही. घणाते केटला. सो. हजार. लाख. क्रोड क्रोड. क्रोडा ए पण बोलवा असक्य तेने (असंलप्पा) कहीए तेटला जाणवा, विशेष अनुयोगध्वारसुत्रनां पाठमां एकबोल सलागा छे पण बीजा त्रण बोल नथी तेमज त्रण बोलनी जरुरनथी केमके खुल्लो पाठ छे ते पाठ (एसणंएवड्य खेतपल्ले आइठेवढ मा- सलागा] एटले एवडा खेत्रपालाने कहीए प्रथमसलागा एवासलागा (असंलप्पा) कहीएते अंस लप्पाए लोकभरीए तो पण उत्कृष्टो संख्यातो न पामीये पाठ [एवइयाणंसलगाणं असंलप्पालोग भरीया तहाविउकोसयं संखेजनपायइ) एटले एवा घणां सलागालोकमां भरीए तो पण उत्कृष्टो सं-

२ सेसमलजी धनराजजी फीरोधीआ
२ पुनमचंदजी धनराजजी मुता
१ रविकरणजी मोतीलालजी मुता
१ मोतीचंदजी रतनचंदजी गुंदेचा
१ पीरालालजी लालचंदजी मुणोत
१ अगरचंदजी नेमीदासजी गुंदेचा
१ हणोतमलजी भगवानदासजी कोठारी
१ छजमलजी बादरमलजी मुणोत
१ गोकलदासजी कटारीआ
१ भीमराजजी जसराजजी कोठारी
१६ घोड नदी (दाक्षिण)
५ जैनबालज्ञान वर्धक जैनशाला खाते हस्ते नानचंदजी भगवानदासजी

२ कुंदनमलजी वाफणा
२ गुलाबचंदजी वृधिचंदजी दुगड
१ पुनमचंदजी ताराचंदजी वोरा
१ चेतनरामजी खंडुरामजी
१ रतनचंदजी आणंदरामजी नार
१ पुनमचंदजी चुनीलालजी लोढा
१ छोटमलजी हजारीमलजी वोरा
१ हजारीमलजी गुलाबचंदजी वोरा
१ जीवराजजी हजारीमलजी फुलफगर
५ परचुरण.
२ सा जेसींग माणकचंद स्थानकना भंडारखाते मुला
२ सा० तेजसीकेसवजी कच्छ समा गोगावाला मुंबइ
१ स्थानकखाते, हस्ते सा. जेठालाल उकाभाइ रलोल

कनी संख्या बतावेली छे ते संख्या–१९९७११२९३८४५१३१६३६३६३६३६३६३६३६३६ ३६३६३६३६३६ जंबुद्वीप जेवडा पालामां उपर बतावेली संख्या जेटला सरसवना दाणा समाय छे

प्रश्नोत्तर २९९.

प्रश्नः–धर्मास्ति काय, अधर्मास्ति काय, आकास्ति काय, ए त्रणना देश, प्रदेश, छे के नही?

उत्तर—सजाती रुपमां देश, प्रदेश, नथी. साख अनुयोग द्वार सुत्रमां विशेष अविशेषनां अधीकारे.

अत्र शंकाः—पन्नवणा तथा भगवतीजीमां तो देश, प्रदेश, कहेल छे तेनु केम ?

तत्रोत्तरंः—ते सुत्रमां कहेल छे ते उपचार नयने मतेवी जातीए जेटली जगामां प्रमाणुं बंसे तेटली जगाने एक प्रदेश कहयुं छे पण सजातीमां तो एक खंधज छ द्रष्टांत कपडांना ताकामां हाथ नथी पण हाथ बीजी वस्तुथी कलपाय ते न्याये समजवुं.

इति प्रश्नोत्तर
॥ मणि रत्नमाला समाप्त. ॥

न्याय प्रथम मनुष्यमां ज समकीतनी प्राप्ती समजवी.

अत्रशंकाः—भगवतीजीमा कह्युं छे के बीजी गतीमां समकीती थाय तो उपरना सुत्रमां ना पाडी तेनो हेतु सु समजवो.

तत्रोतरंः—बीजीगतीमां थाय पण प्रथम एक वखत मनुष्यमांपामी पाछो वामी बीजीगतीमां गयो अने त्यां पाछी समकीतनी प्राप्ती करवा आश्री भगवंते त्यां पाम्यो एम कहेल छे पण मुल प्राप्ती मनुष्यमा समजवी आ प्रमाणे सास्त्र मध्ये कहेल छे पण ग्रंथ वालाए ६ भांगावस्ता कहेल छे माटे सुज्ञ पुरुषो वीचारी जोसो,

प्रश्नोत्तर ३०२.

प्रश्नः—शब्दनां पुदगल शब्दपणे रहे तो केटलो काल रहे ?

उत्तरः—जघन्य एक समो रहे अने उत्कृष्टो आवलीकाने असंख्यातमे भागे रही पछे शब्दप-

प्रश्नोत्तर ३०४.

प्रश्नः—खायकसमकीत कइगतीमां उत्पन्न थाय ?

उत्तरः—मनुष्य गतिमा थाए सीवाय बीजी गतीमां न थाय साखअनुपयोग द्वार सुत्रनी सनीवाइनां २६ भांगानो न्याय जोता एक मनुस्यमांज थाय अने पछे बीजी गतीमा लइ जाय पण उतपती स्थान मनुष्य समजाय छे तत्कार्थ केवली गम्य.

प्रश्नोत्तर ३०५.

प्रश्नः—द्वीपसमुद्र असंख्यता कह्या ते केटला समजवा ?

उत्तरः—अढीसागरोपम (पचीश कोडाकोडी उधार पल्योपमनां जेटला समय थाय तेटला छे) तेना जेटला समय थाय तेटला द्वीप समुद्र समजवा साख अनुयोग द्वार सुत्रनी.

प्रश्नोत्तर ३०६.

उत्तरः—खायक समकीत होय साख अनुयोग द्वार सुत्रमां सनीवाइनां भांगानी समजवी.

प्रश्नोत्तर ३०९.

प्रश्नः—अनुयोग द्वार सुत्रमां सनी वाइनो २५ मो भांगो एम कहेल छे के उपसंम कषायनो खायक समकीतनो क्ष्योपसम इंद्रीनो प्रणामीक जीवनो ए प्रमाणे चार बोल सहीत वस्तो भांगो केनामां लाभे कारण के भगवंते वस्ता भांगामां कहेल छे.

उतरः—अगीयारमां गुण ठाणावाला जीवमां लाभे.

अत्र शंकाः—११ मे गुण ठाणे तो मनुष्य गतीनो उदे छे तो आ भांगामां उदे नथी तो शी रीते लाभे?

तत्रोत्तरंः—११ मे गुण स्थाने आवखानो अबंधकछे एटले एके गतीनो बंधनथी माटे मनुष्यनी गतीनुं उदे नथी ते माटे उपरनो बतावेलो भांगो लाभेतो बाधक नथी.

उत्तरः—एकद्रव्य आश्री जघन्य तीन प्रदेशी खंध छे. ते तीन आकाश प्रदेश अवगाढ छे तो ते लोकने असंख्यात वृतीए छे; अनंत प्रदेशीयो बादर सुक्ष्म खंध छे ते लोकने संख्यातमे भागे आकाश प्रदेश अवगाढ छे केवलीना कपाट आश्री, घणा संख्याता ते मंथणा आश्री; घणा असंख्याता ते दंड आश्री, सर्व लोक ते समुद घातनां पांचमा समे सर्व लोक पुरवा आश्री समजवुं साख अनुयोग द्वारनी.

प्रश्नोत्तर ३१२.

प्रश्नः—मनुष्य केटला (मोंढा) मुखनो होय ?

उत्तरः—अनुयोगद्वारे नव मुखनो कहेल छे, ते पोतानुं मुख. १२ आंगुलनुं छे, तो ते आंगुलने नवगुणां करतां सर्व देहमान उत्तम पुरुषनो १८० आंगुलनो थाए तेनां नव भाग रुप नव मुख छे.

प्रश्नोत्तर ३१३.

अने ते त्रीछीदीशीमांज रहेवावाला छे माटे तेनो डंडक जुदो पाडेल नथी. विशेषे करी एम संभवे छे के ते देवोना वास भुवन दसेनां जुदा जुदा दस आंतरामां छे तेमां पेहला बे आतरा छोडवा वली प्रत्येकनां जुदा जुदा सीझे छे ए हेतुथी भुवन पतीना डंडक जुदा कहेल समजाय छे.

प्रश्नोत्तर ३१४.

प्रश्नः—केवली महाराज क्या ज्ञानथी उपदेश देवे. ?

उत्तरः—सुत्र ज्ञान द्वारेथी उपदेश (बोध) देवे साख अनुयोग द्वार तथा नदी सुत्रनी.

प्रश्नोत्तर ३१५.

प्रश्नः—सीध षेत्रथी सीधनी फरसना अधीक तेनो शुं कारण ?

उत्तरः—कोइसाधु अढी द्वीपना कांठा उपर ध्यान धरीने बेठा छे तेमां कोइ अंग बाहार रही गयुं छे ने पछी एज बेठ के सिधथाय तो तेना आत्म प्रदेश कांइक बाहेर रही जाय ते आश्री जांण वुं साख

प्रश्नोत्तर ३१७.

प्रश्नः—निसीथ सुत्रनां बीजा उदेसामां कहयुं के त्रण घर सुधीनो आहार पाणी सामो लावी आपे तो कल्पे ?

उत्तरः—एक घरनो पण सामों लावेलो लेवो कल्पे नही. पण आंही एम समजवुं के एक घर छे अने तेना त्रण खंड छे तो मुनीराज पेला खंडमां उभा छे ने त्रीजा खंडथी वहोरावता आवे छे. तेमज तेना उपर मुनीराजनी द्रष्टी पडे छे तो ते आहार पाणी लेता मुनीने बाधक नथी. तो आही ते अपेक्षाये कहयु छे के त्रण घरनो कल्पे.

प्रश्नोत्तर ३१८.

प्रश्नः—निसीथ सुत्रना त्रीजा उदेशामां कहयु छे के साधु मुनीराजे वडी नीत लघु नीत रात्रीए करेली छे ते सुर्य उदय थया पहेला परठवे तो प्रायछीत आवे एम कहयु तो वडी नीत वीगेरे वे

प्रायछीत आवे. इत्यर्थ.

प्रश्नोत्तर ३२०.

प्रश्नः—नीसीथ सुत्रनां उ० १२ मां मध्ये कह्युं छेके दीवसनो वहोरेलो आहार पाणी भोगवेतो प्रायछीत लागे कह्युं तो मुनीराजने तो दीवसेज आहार पाणी भोगववो कल्पे छे छता प्रायछीत कह्युं तेनुं केम.

उत्तरः—आहिंया एम समजवुं के पेहेला पहोरनो वहोरेलो आहारपाणी चोथे पहोर भोगवेतो प्रायछीत लागे ते अपेक्षाये ना कही छे इत्यर्थ.

प्रश्नोत्तर ३२१.

प्रश्नः—साध साधवीने केळुं तथा तालवृक्षनुं फळ पाकेलुं लेवुं कल्पे के नहि ?

उत्तरः—साधुने ते बंने वस्तुओ आखी लेवी कल्पे पण साधवीजीने बेहुं फळ आखा लेवा

कही तो शुं लोभी मनुष्यने दीक्षा न आपवी ?

उत्तरः—आंही लोभी नही समजवो पण कृपण एटले जे पुरुष स्त्रीने देखी वीर्य राखी न शके तेवा पुरुषने दीक्षा न आपवी. अने सर्वज्ञ पुरुषे ए हेतु माटे आंही कृपण कहेल छे. इत्यर्थं.

प्रश्नोत्तर ३२८.

प्रश्नः—भगवतीजी सुत्रना शतक १ ला ने उदेशा २ मध्ये समद्रष्टी नारकीने महावेदनां कही अने भगवतीजी सुत्रना शतक १८ मा ने उदेशा ५ मां मध्ये अल्प वेदनां कही तेनुं केम ?

उत्तरः—मानशी दुःख समद्रष्टी नारकी वधारे वेदे ते पोतानां कृत्यनो अपशोश वधारे करे तेथी महा वेदनां कही अने समद्रष्टी समभावे वेदे छे तेथी अल्प समजवी तथा समद्रष्टी उतर दीशे नर्कमां उपजे माटे शारिरी अल्प वेदना कही. शास्त्र दशासुतस्कंध सुत्रनां अध्ययन १० मानी.

इति शुभम् ॥ श्री प्रश्नोत्तर मणि रत्नमाळा ग्रंथ समाप्तम् ॥ आ ग्रंथ केटलाक विद्वान पुरुषोनी सहायथी सनातन जैन धर्मावलंबी-लिंबडी समुदायना पुज्य साहेब श्री गोपाळजी स्वामी-तत् शिष्य श्री मोहनलालजी स्वामी तत् शिष्य श्री नथुजी स्वामी तत् शिष्य श्री मणीलालजी मुनीए सुत्रो-ग्रंथो-टीका-वृत्ति आदिनुं संशोधन करीने विक्रम संवत् १९६२ (वीर संवत् २४३१) मां दक्षिण अहमदनगरमां शेष काळ रहीने संपुर्ण कर्यो. ॥ भूलचूक पंडीत पुरुषोए सुधारी लेवा कृपा करवी. ॥

आ पुस्तकना आगळथी ग्राहकथइ आश्रय आपनार
गृहस्थोनां मुबारक नाम.

६७ अहमदनगर (दक्षिण)
११ सीवरामजी रामचंदजी सांद
९ चांदमलजी लखमीचंदजी बोरा
७ पेमराजजी पनालालजी
७ बालारामजी पृथिराजजी चोरडीआ
५ व्रधीचंदजी चुनीलालजी सांद
५ हाजारीमलजी अगरचंदजी मुता
५ खुबचंदजी मुलतानाचंदजी कांकरीआ
२ भगवानदासजी चंदनमलजी पीतलीआ
२ नवलमलजी कीसनदासजी मुता.
२ हुकमीचंदजी नेमीदासजी गुगलीआ